भृगु जन्म पत्रिका

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 दिसम्बर 1973
जन्म समय	01:45:00
जन्म दिन	मंगलवार
जन्म स्थान	Ballia (up)
राज्य	
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	01:51:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	07:36:55 hrs
इष्ट काल	47: 52: 16 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
ऋतु	हेमन्त
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
वार	सोमवार
तिथि	नवमी
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)
योग	सौभाग्य
करन	गरिज

अवकहड़ा चक्र

पाया	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
वश्य	द्विपद
योनि	महिष (स्त्री)
गण	देव
नाड़ी	आदि
रज्जु	कंठ
तत्व	अग्नि
तत्वाधिपति	मंगल
विहग	वायस
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	श
दशा बैलेंस	चन्द्रमा – 5व05मा026दि0
वर्तमान दशा	शनि–बुध–बुध
भयात	27: 30: 35 Ghati
भभोग	61: 31: 25 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	धनु
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:29:36
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	06:36:32AM
सूर्यास्त	05:03:05PM
जन्मदिन का ग्रह	चन्द्रमा
जन्मसमय का ग्रह	शनि

लग्न
कन्या

राशि
कन्या

नक्षत्र – पद
हस्ता – 2

लग्नाधिपति
बुध

राशिपति
बुध

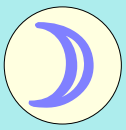

नक्षत्रपति
चन्द्रमा

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	हस्ता	चरण	2
अधिपति	चन्द्रमा ☽	भाव में	लग्न शुभ
देवता	सवितृ आदित्य	दिशा	दक्षिण पश्चिम
तत्व	अग्नि	गोत्र	पुलह
प्रभाव	लक्ष्मीप्रद	पशु	महिष (स्त्री)
पौधे	मालति, चमेली	पक्षी	गिद्ध
कार्य पद्धति	धैर्ययुक्त	गुण	रजस

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण

लग्न	कन्या ♍
अधिपति	बुध ☿
तत्व	पृथ्वी
स्वभाव	उभय
भाव में	तृतीय सम
लिंग	स्त्री
के साथ भावेश	

राशि विवरण

राशि	कन्या ♍
अधिपति	बुध ☿
तत्व	पृथ्वी
स्वभाव	उभय
भाव में	तृतीय सम
लिंग	स्त्री
के साथ भावेश	

राशि देवता	भगवान गणेश
मंत्र	**Om Gan Ganapataye Namah** **ॐ गण गणपतये नमः**

इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।

तत्व	पृथ्वी

आप सामान्यतः व्यावहारिक, ज़मीनी और विश्वसनीय हैं। आप अपने भावनात्मक जीवन में स्थिरता और सुरक्षा की ओर आकर्षित हैं तथा दिनचर्या और पूर्वानुमान को पसंद करते हैं। आप मेहनती, धैर्यवान और भरोसेमंद हैं। आपमें जिम्मेदारी की प्रबल भावना है और आप अपने प्रयासों में काफी महत्वाकांक्षी हो सकते हैं।

स्वभाव	उभय

आप आमतौर पर अनुकूलनीय, लचीले और बहुमुखी हैं। आप परिवर्तन के लिए तैयार हैं और आसानी से नई स्थितियों और वातावरण में समायोजित हो सकते हैं। आप अक्सर जिज्ञासु होते हैं और नई चीजें सीखने का आनंद लेते हैं। आप मल्टीटास्किंग में कुशल हैं और समस्या-समाधान के प्रति अपने दृष्टिकोण में काफी साधन संपन्न हो सकते हैं। आप विश्लेषणात्मक और विस्तार-उन्मुख हैं, आप उन व्यवसायों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं जिनमें सटीकता, संगठन, या महत्वपूर्ण सोच की आवश्यकता होती है, जैसे लेखांकन, डेटा विश्लेषण, या संपादन।

घात चक्र

भद्रा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मिथुन अशुभ राशि	मीन अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
श्रावण अशुभ नक्षत्र	सुकर्मन अशुभ योग	कौलव अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार शुभ दिन
बुध, शुक्र शुभ ग्रह	मंगल, गुरू अशुभ ग्रह	धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र राशि
धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
हीरा भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूरस शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य

धनु
02:15:49
मूला (1)
सम राशि

चन्द्रमा

कन्या
16:00:57
हस्ता (2)
मित्र राशि

मंगल

मेष
04:42:18
अश्विनी (2)
स्व नक्षत्र

बुध (अ.)

वृश्चिक
19:51:24
ज्येष्ठा (1)
स्व राशि

गुरू

मकर
17:56:39
श्रवण (3)
स्व नक्षत्र

शुक्र

मकर
13:00:16
श्रवण (1)
नीच राशि

शनि (व.)

मिथुन
08:12:33
अरिद्रा (1)
मित्र राशि

राहु

धनु
05:10:35
मूला (2)
मित्र राशि

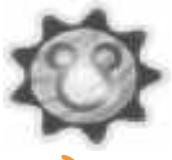

केतु

मिथुन
05:10:35
मृगशिर (4)
सम राशि

हर्षल

तुला
03:20:59
चित्रा (4)
सम राशि

नेपच्यून

वृश्चिक
14:20:41
अनुराधा (4)
सम राशि

प्लूटो

कन्या
13:11:14
हस्ता (1)
सम राशि

लग्न

कन्या
28:15:29
चित्रा (2)

10वां कस्प

मिथुन
28:56:27
पुनर्वसु (3)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		♍ कन्या	28:15:29	चित्रा (14)	2		
☉ सूर्य		♐ धनु	02:15:49	मूला (19)	1	दारा	मित्र राशि
☽ चन्द्रमा		♍ कन्या	16:00:57	हस्ता (13)	2	भ्रात्रि	स्व नक्षत्र
♂ मंगल		♈ मेष	04:42:18	अश्विनी (1)	2	ज्ञाति	स्व राशि
☿ बुध	अ.	♏ वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (18)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♃ गुरू		♑ मकर	17:56:39	श्रवण (22)	3	अमात्य	नीच राशि
♀ शुक्र		♑ मकर	13:00:16	श्रवण (22)	1	मात्रि	मित्र राशि
♄ शनि	व.	♊ मिथुन	08:12:33	अरिद्रा (6)	1	अपत्या	मित्र राशि
☊ राहु		♐ धनु	05:10:35	मूला (19)	2		सम राशि
☋ केतु		♊ मिथुन	05:10:35	मृगशिर (5)	4		सम राशि
♅ हर्षल		♎ तुला	03:20:59	चित्रा (14)	4		सम राशि
♆ नेपच्यून		♏ वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (17)	4		सम राशि
♇ प्लूटो		♍ कन्या	13:11:14	हस्ता (13)	1		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

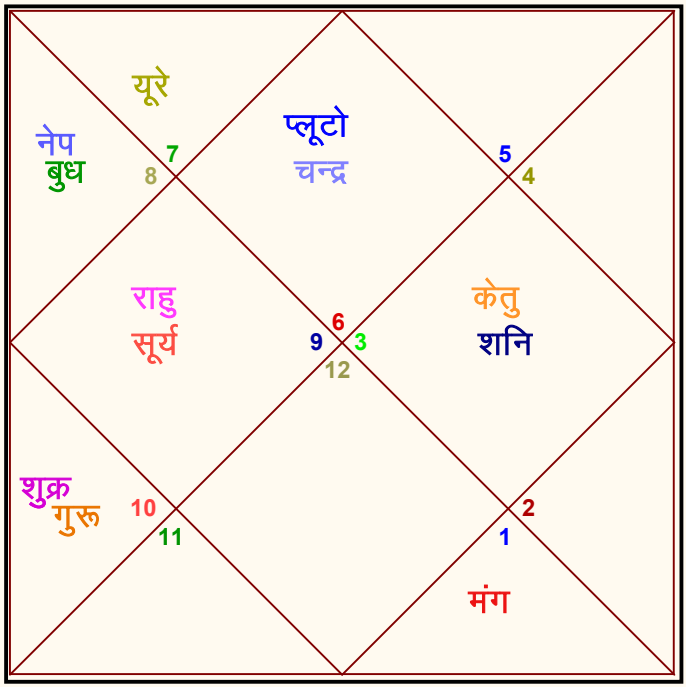

नवांश कुण्डली

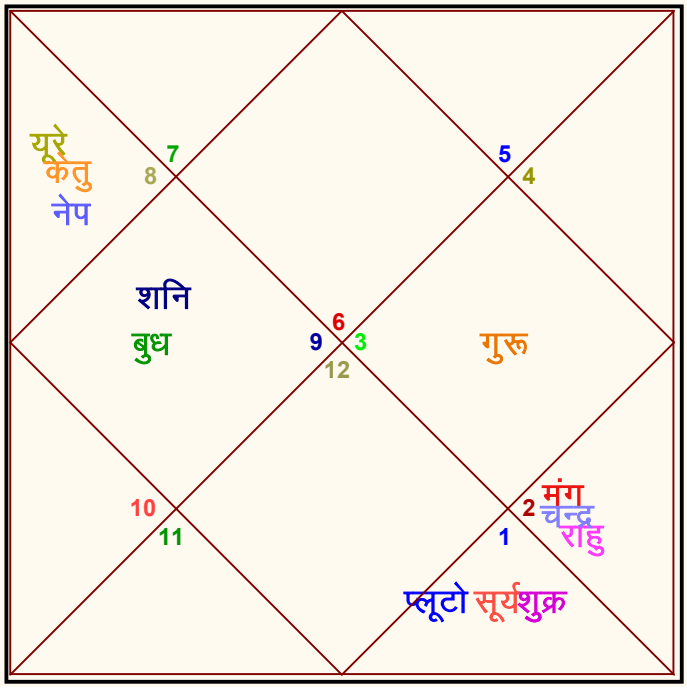

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

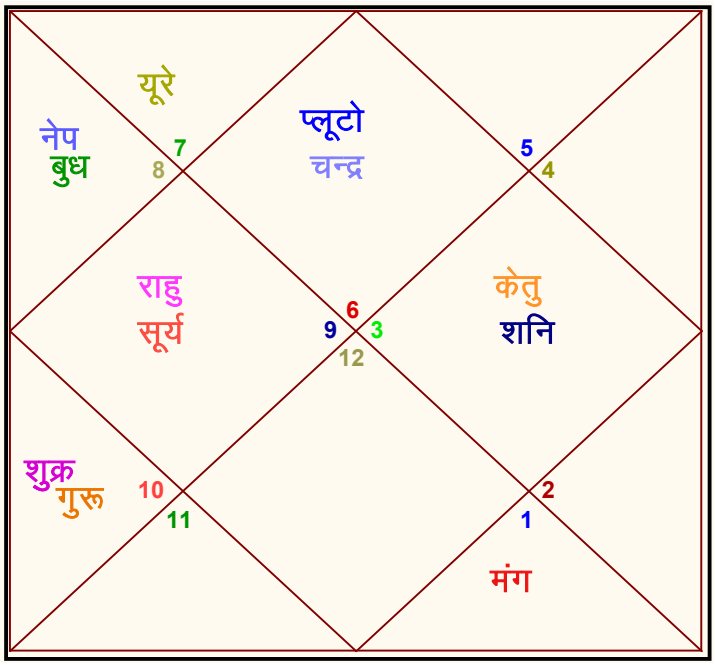

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

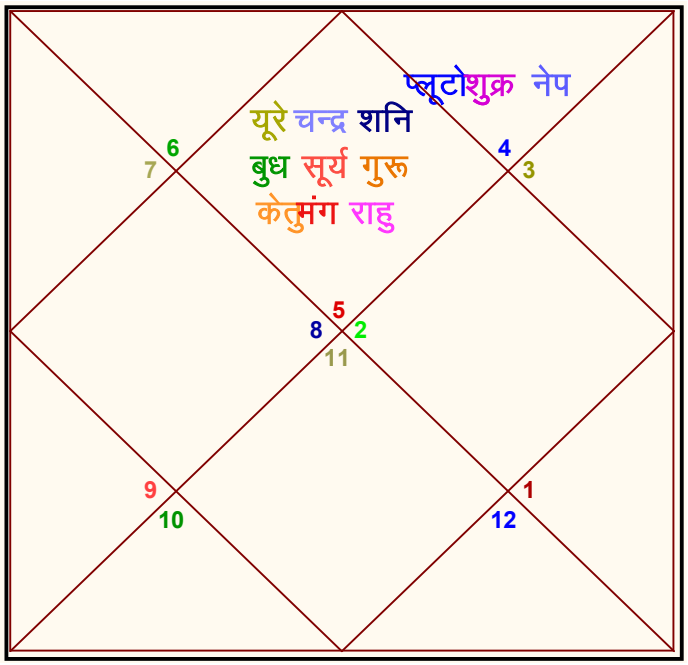

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

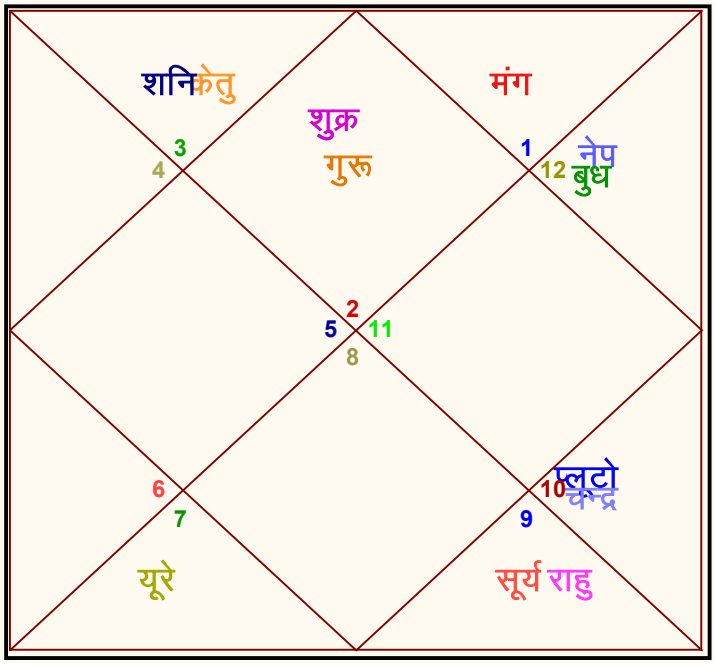

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

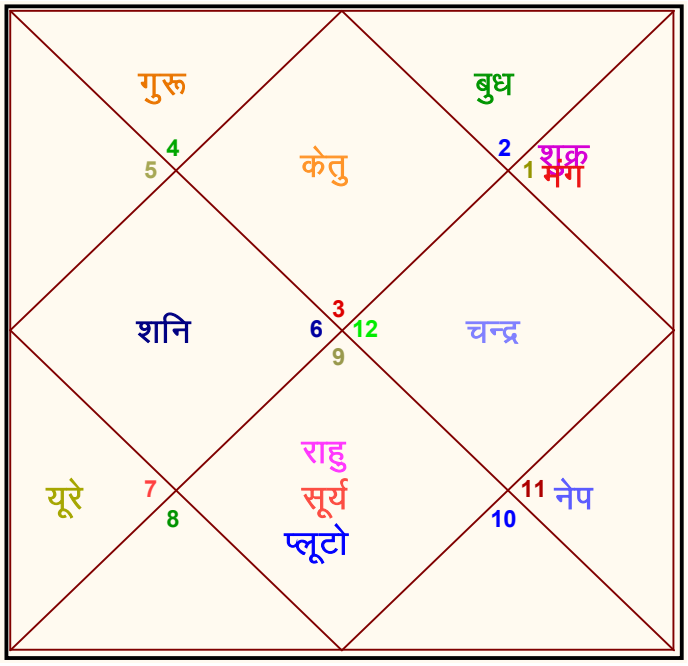

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

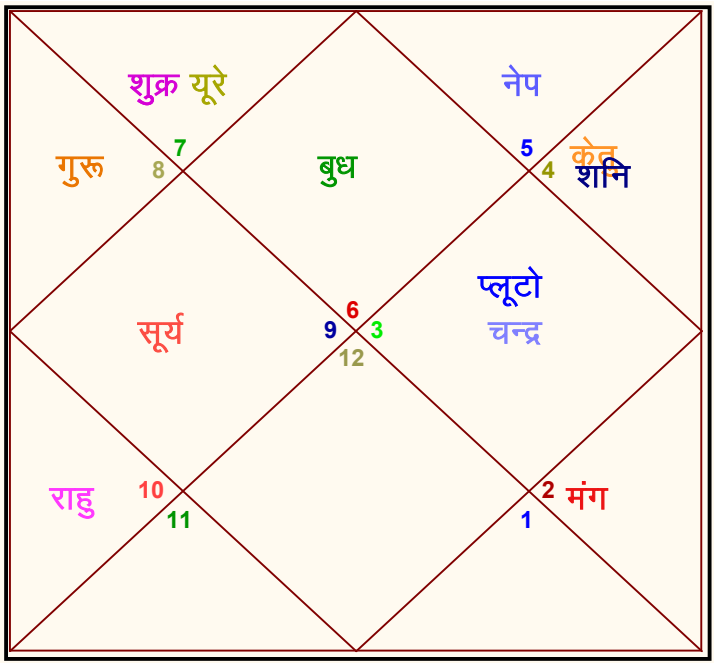

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

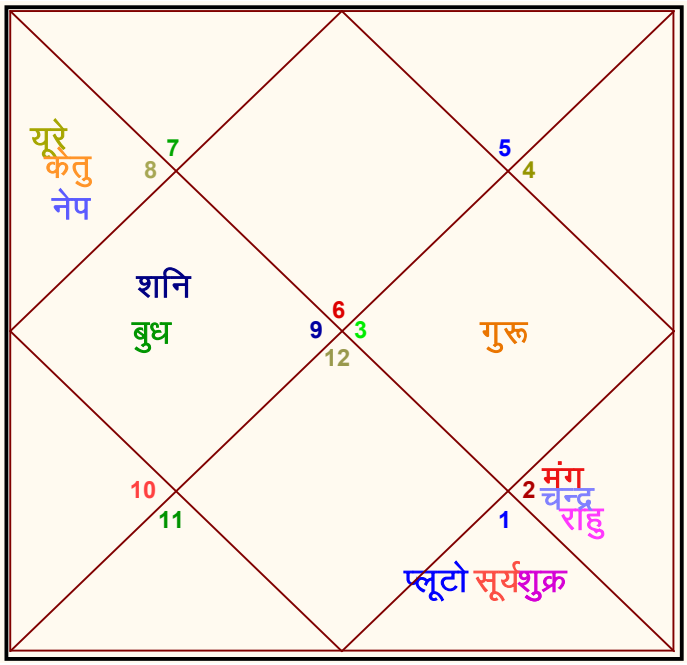

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

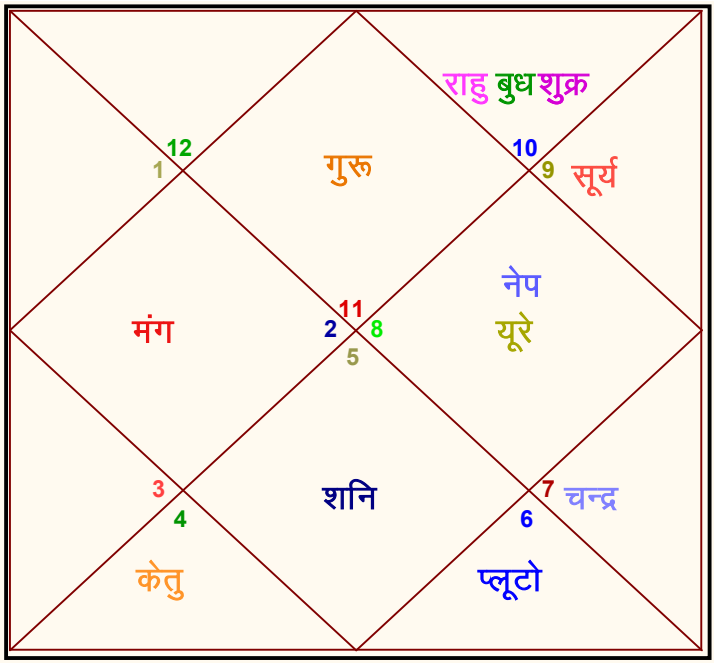

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

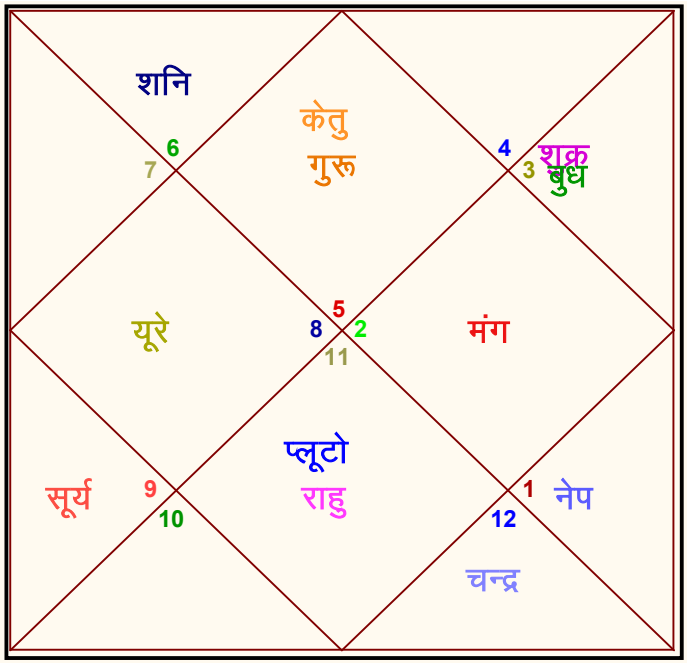

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

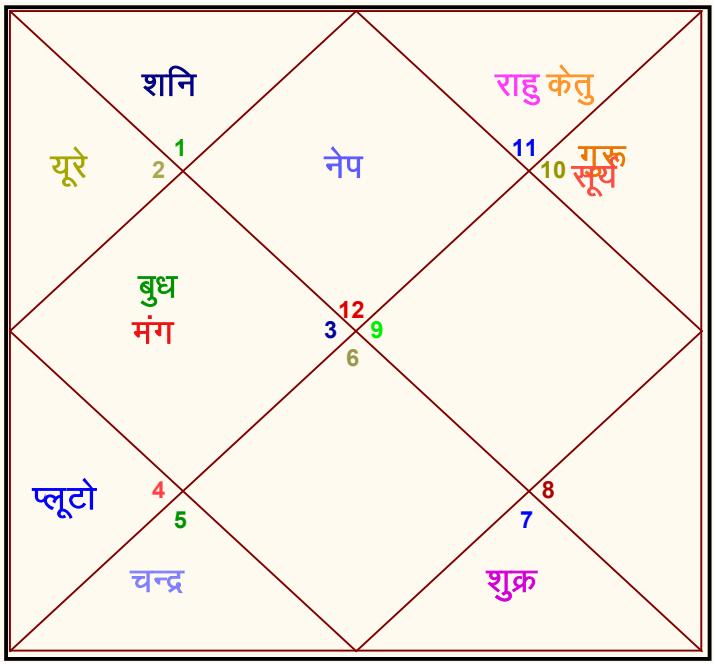

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

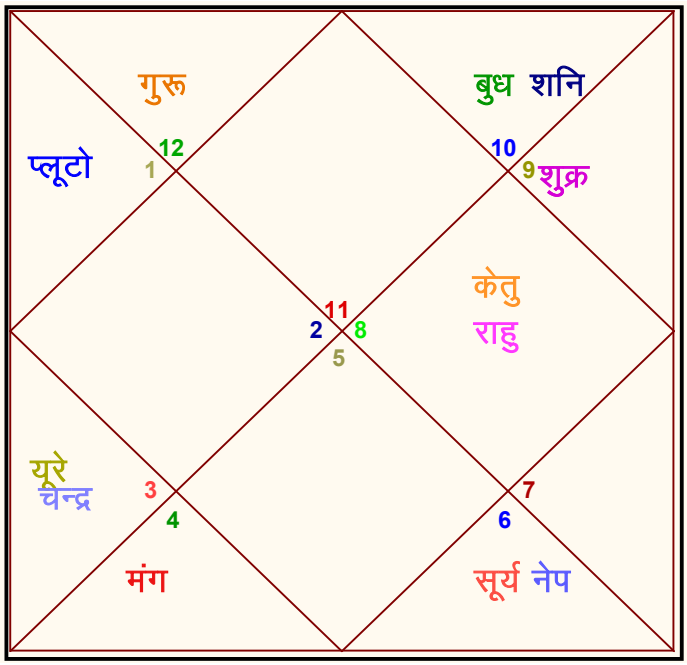

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

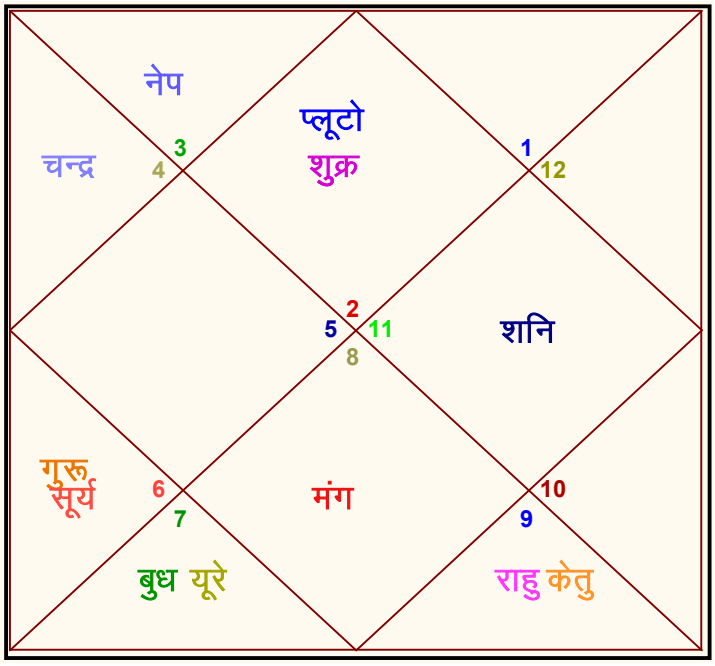

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

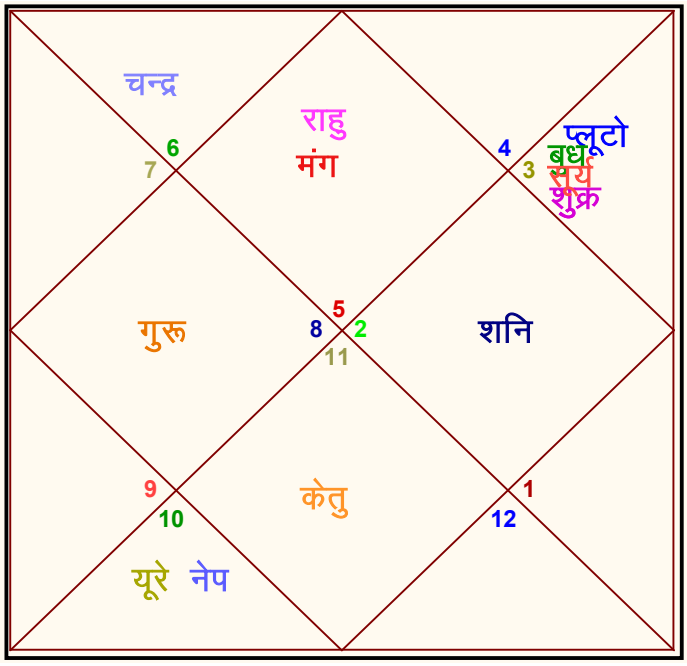

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

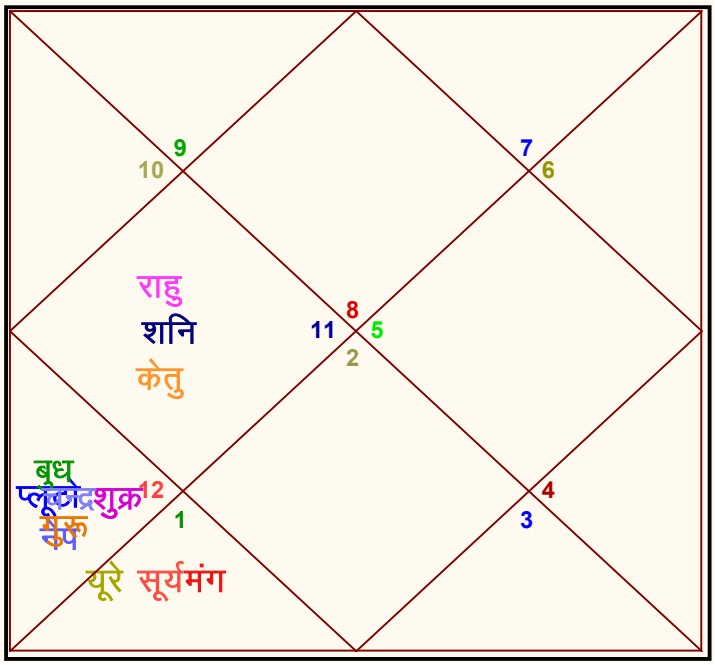

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

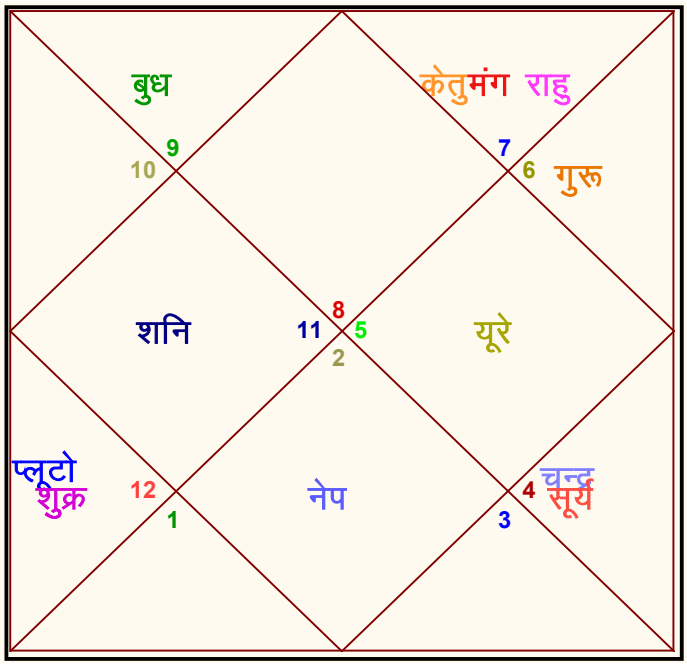

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

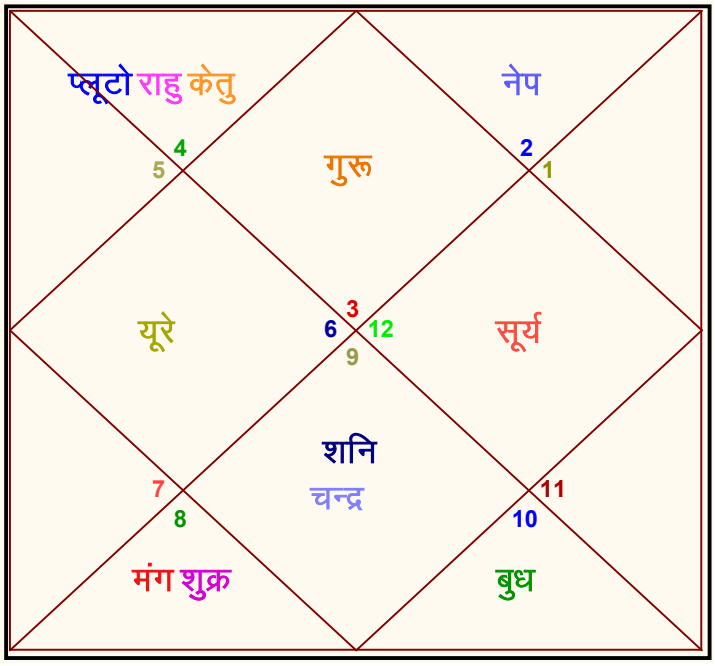

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

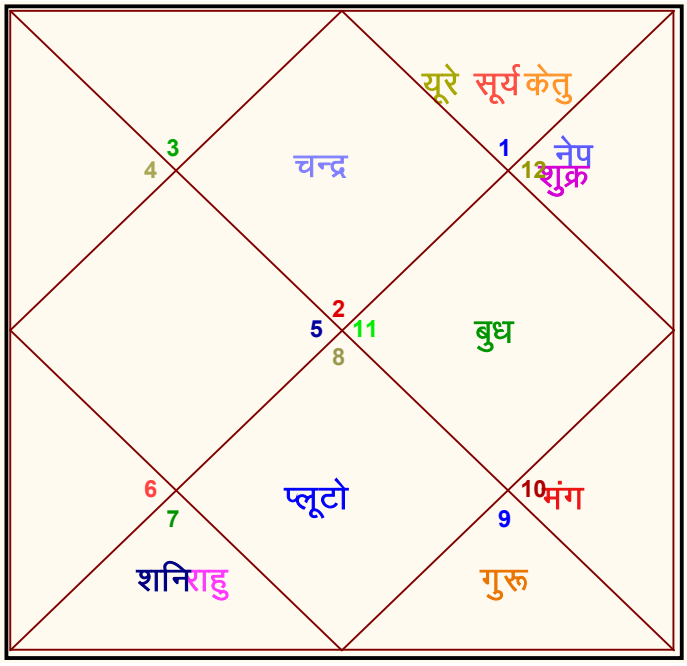

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

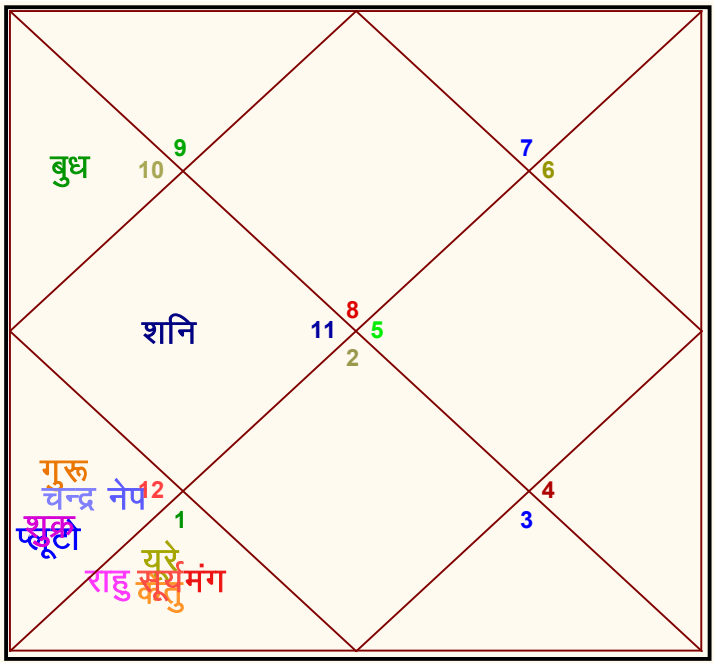

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

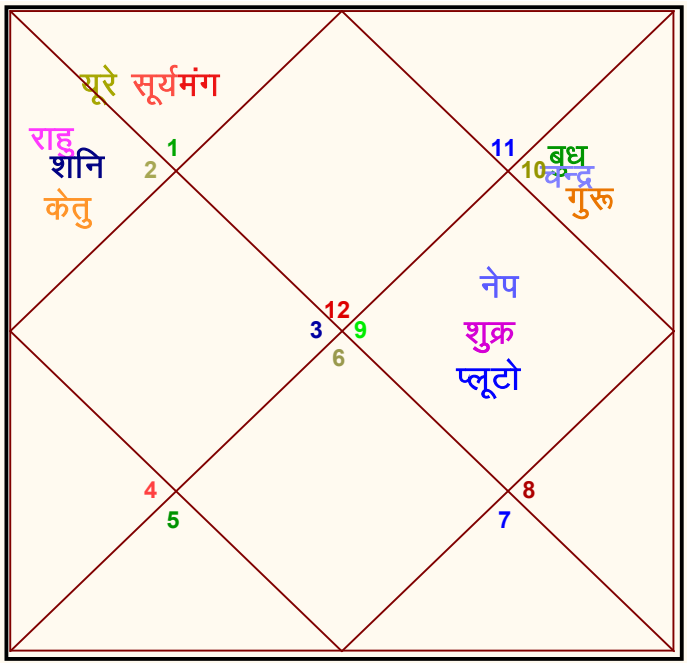

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

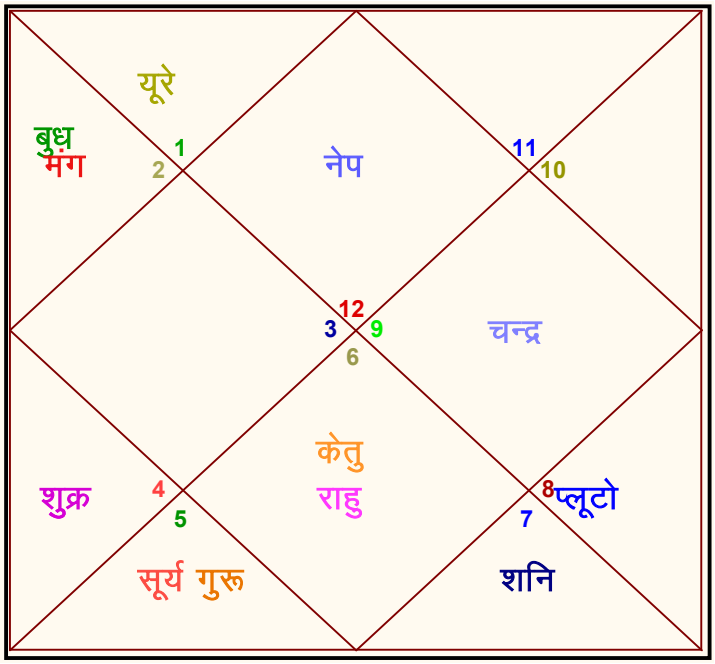

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

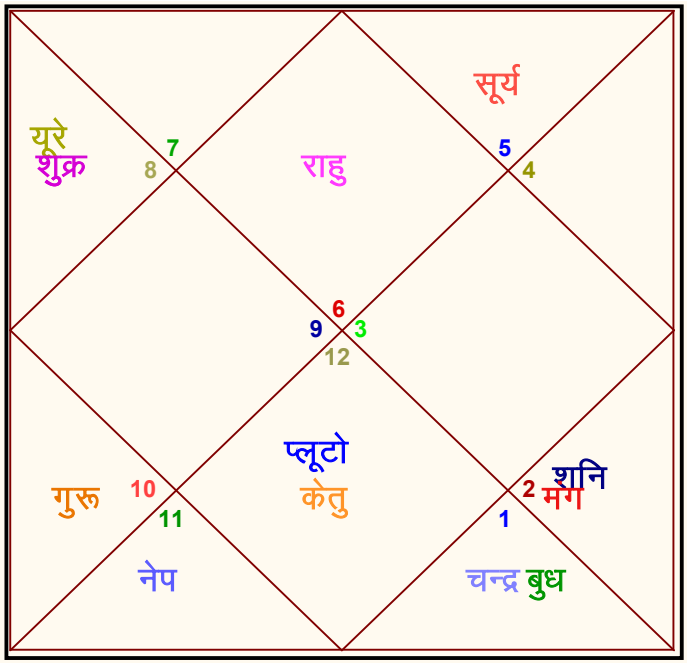

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

सर्वाष्टकवर्ग (337)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♃ गुरू	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♂ मंगल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉ सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♀ शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
☿ बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
☽ चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग	27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337

ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- ग्रहों के बल का मूल्यांकन
- घटनाओं की भविष्यवाणी
- अनुकूल समय की पहचान
- उपाचारीय ज्योतिष

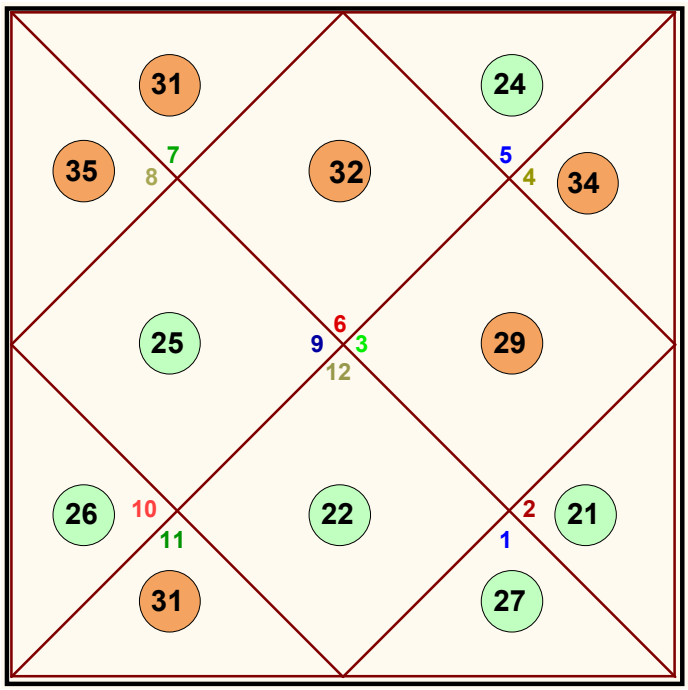

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टकवर्ग योग

दमरूक योग : आपकी जन्म कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग के मध्य भाग (पाँचवी से आठवीं भाव राशि तक) में सबसे कम शुभ बिन्दु हैं, इस कारण आपकी कुण्ड़ली में दमरूक योग है। आप अपने जीवन के दूसरे चरण (लगभग 24 से 48 वर्ष) की अपेक्षा पहले चरण (24 वर्ष तक) और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72 वर्ष) में अधिक समृद्ध रहेंगे।

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ गुरू	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
♂ मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
♀ शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
AC लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48

सूर्य का कारकत्व

- आत्मा एवं स्व
- अधिकार और नेतृत्व
- स्वास्थ्य और जीवन शक्ति
- पिता और पितातुल्य व्यक्ति
- कैरियर और सफलता

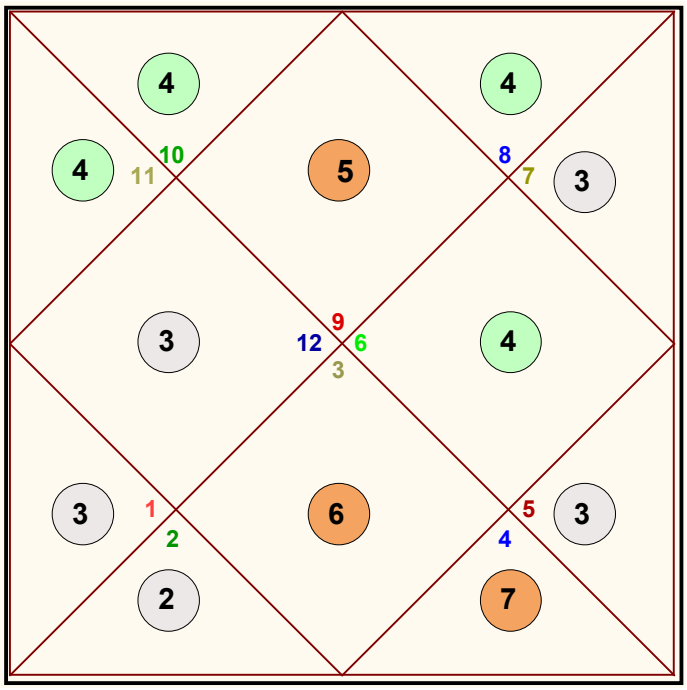

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃	गुरू	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	7
♂	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
☉	सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
♀	शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
☿	बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽	चन्द्रमा	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
AC	लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग		3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49

चन्द्रमा का कारकत्व

- मन और भावनाएँ
- माँ और मातातुल्य स्त्री
- घर और पारिवारिक जीवन
- कल्पना और रचनात्मकता
- विकास और पोषण

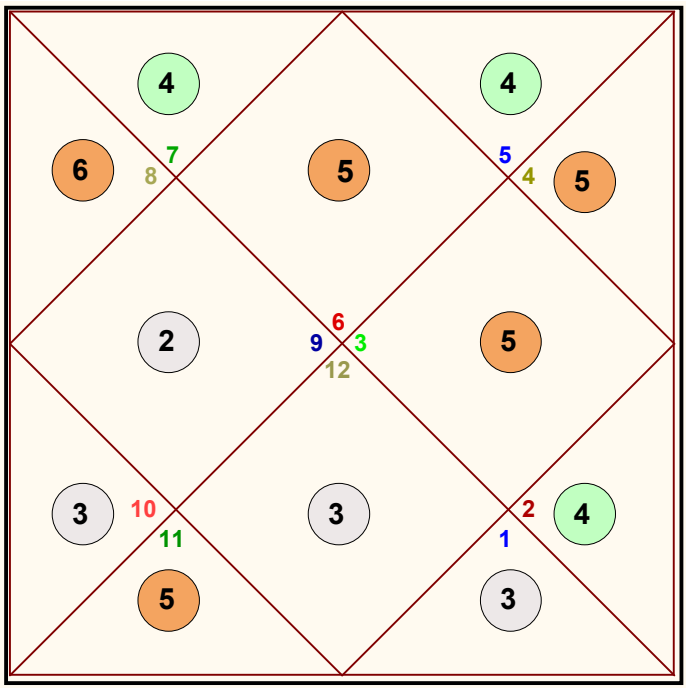

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
♃ गुरू	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
♂ मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
♀ शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39

मंगल का कारकत्व

- ऊर्जा और क्रिया
- जुनून और संचालन
- आक्रामकता और संघर्ष
- नेतृत्व और उद्यमशीलता
- अभियांत्रिकी और तकनीकी कौशल

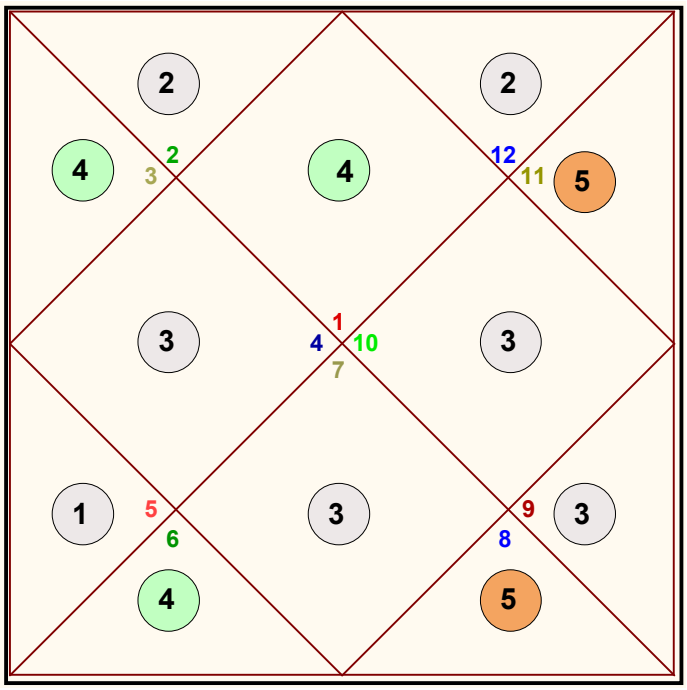

Legends :

शुभ　　मिश्रित　　अशुभ

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ गुरू	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽ चन्द्रमा	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54

बुध का कारकत्व

- बुद्धि और संचार
- वाणिज्य और व्यवसाय
- अधिगम और शिक्षा
- यात्रा और संचालन
- रचनात्मकता और कला

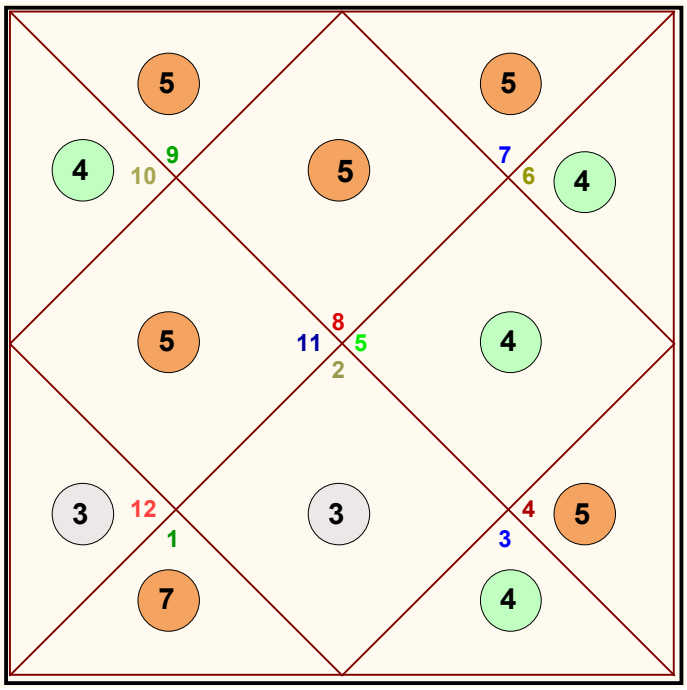

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

गुरू भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃	गुरू	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
♂	मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉	सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
♀	शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
☿	बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽	चन्द्रमा	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
AC	लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
योग		3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56

गुरू का कारकत्व

- बुद्धि और ज्ञान
- विकास और विस्तार
- नेतृत्व और अधिकार
- संतान और परिवार
- आध्यात्मिकता और धर्म

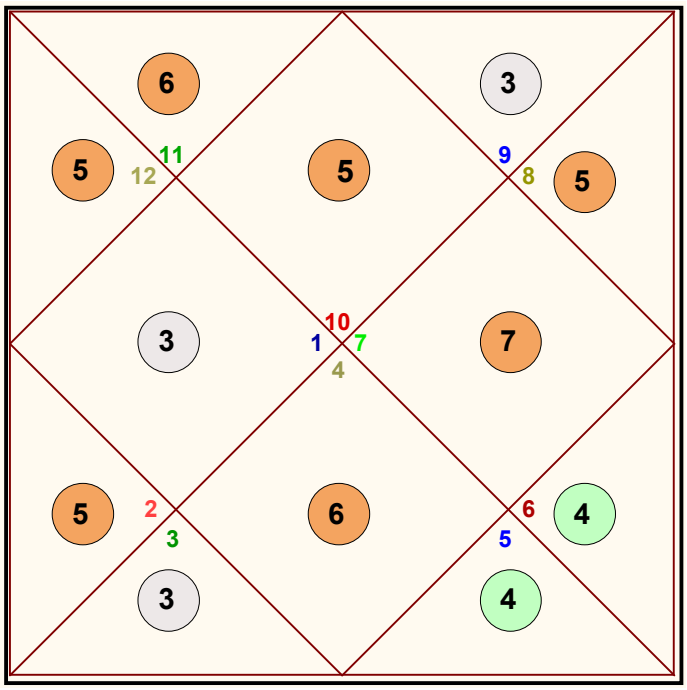

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
♃ गुरू	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
♂ मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	3
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
☿ बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽ चन्द्रमा	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
AC लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
योग	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52

शुक्र का कारकत्व

- प्रेम और रोमांच
- विवाह और साझेदारी
- कला और सौंदर्यशास्त्र
- विलासिता और सुखसुविधा
- वित्त और धन

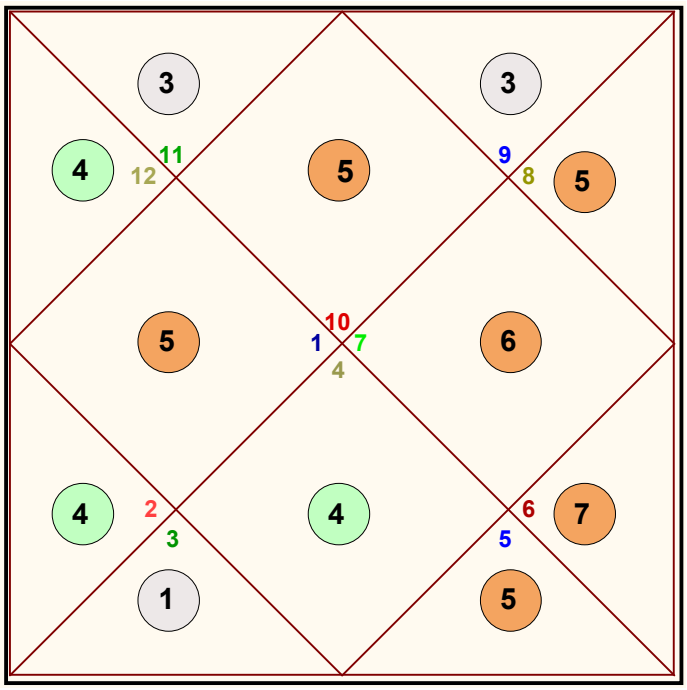

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ गुरू	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
♀ शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
योग	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39

शनि का कारकत्व

- कठिन परिश्रम और अनुशासन
- बाधाएं और चुनौतियां
- समय और कर्म
- अधिकार और नेतृत्व
- आध्यात्मिकता और वैराग्य

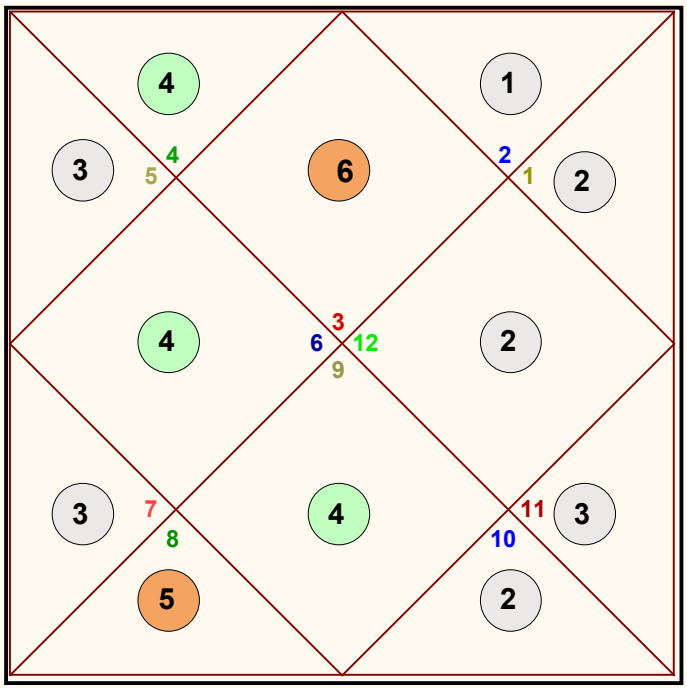

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

राहु भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
♃	गुरू	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
☉	सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
♀	शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿	बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽	चन्द्रमा	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
AC	लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग		5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49

राहु का कारकत्व

- आकांक्षा और सनक
- महत्वाकांक्षा और सफलता
- भ्रम और धोखा
- विदेश भूमि और यात्रा
- आध्यात्मिकता और प्रबोधन

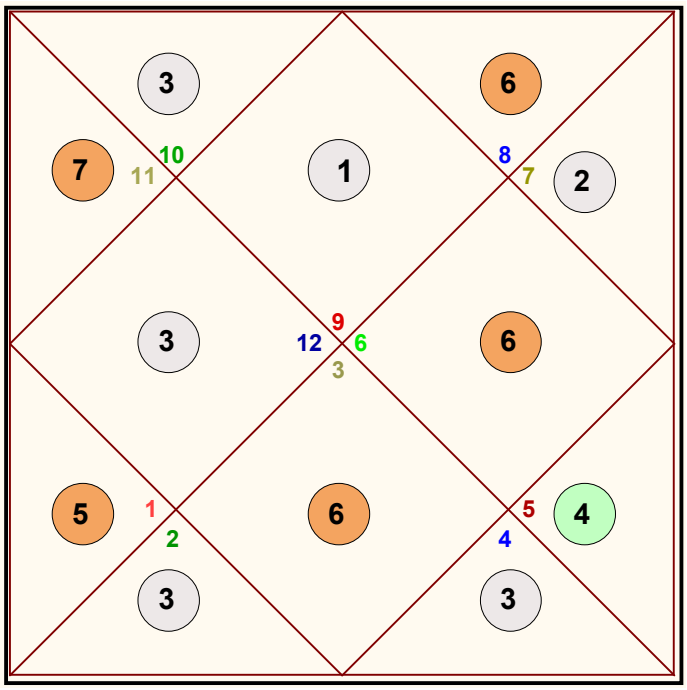

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टक वर्ग के महत्वपूर्ण बिन्दु

लग्न कुण्डली

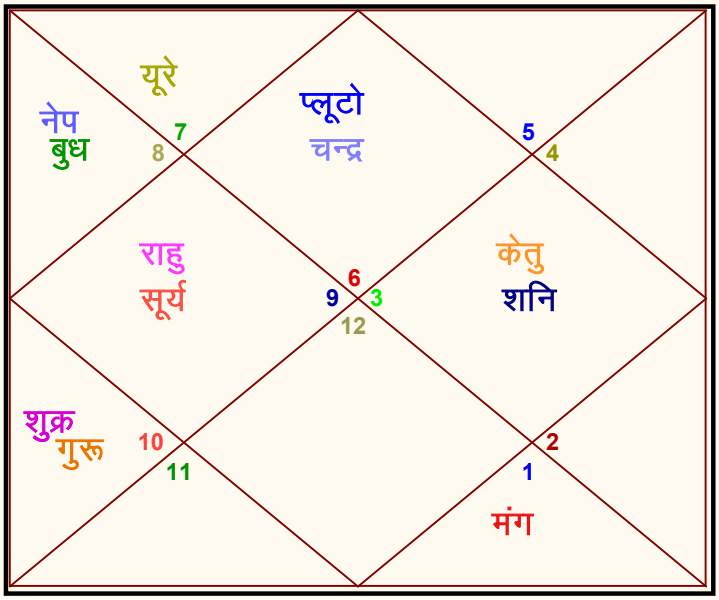

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

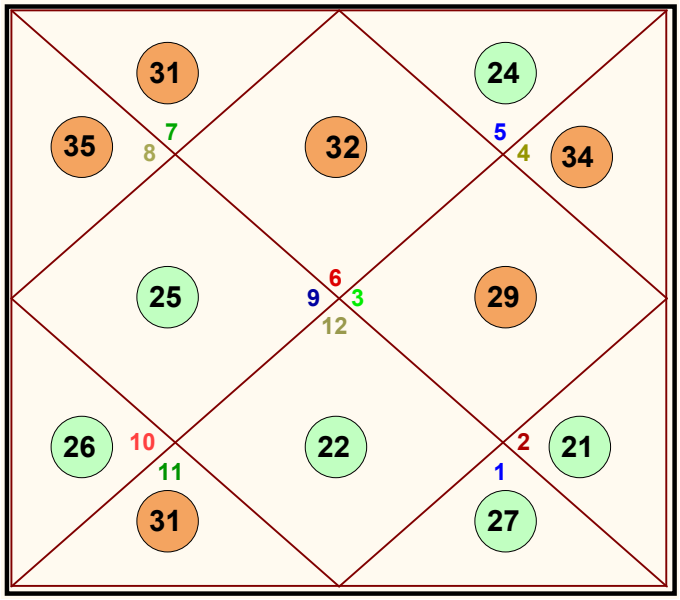

तत्व चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	76	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	91	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	91	उत्तर

(विशेष– सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उपू0, दपू0, उप0 और दप0) होगी।)

भुवन चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	108	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	118	आर्थिक स्थिति
अपोक्लिम् भाव–राशि	112.33	111	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	सर्वाष्टक बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	91	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	76	दुर्भाग्य और हानि

लग्न कुण्डली

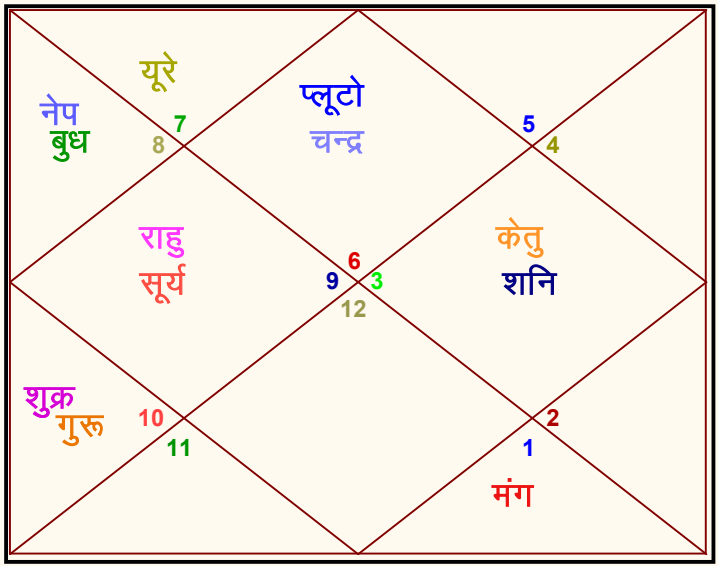

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

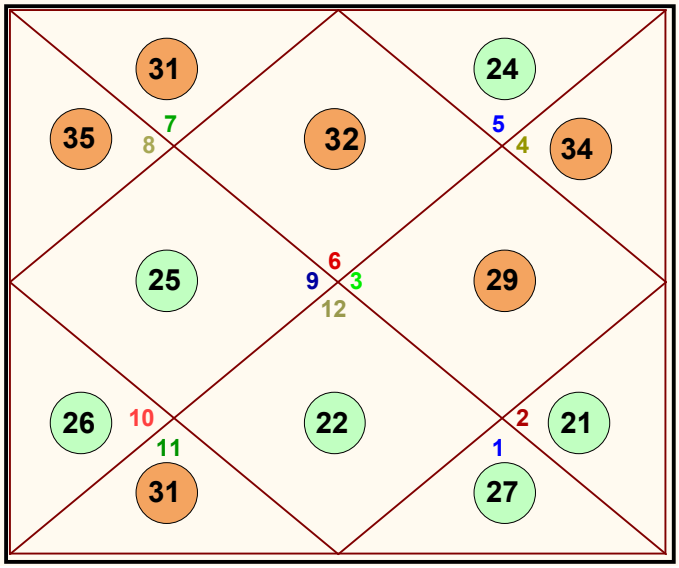

जीवन के महत्वपूर्ण कालखण्डो का अवलोकन

भाग	समयावधि	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
1st	0 - 24 Years	♍	कन्या	32	123	असाधारण
		♎	तुला	31		
		♏	वृश्चिक	35		
		♐	धनु	25		
2nd	25-48 Years	♑	मकर	26	106	अच्छा
		♒	कुम्भ	31		
		♓	मीन	22		
		♈	मेष	27		
3rd	> 48 Years	♉	वृष	21	108	अच्छा
		♊	मिथुन	29		
		♋	कर्क	34		
		♌	सिहं	24		

1 - 105	106 - 118	> 118
खराब	अच्छा	असाधारण

कष्ट तुल्य भाव

भाव	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
6	♒	कुम्भ	31	82	< 84 Good
8	♈	मेष	27		
12	♌	सिहं	24		> 84 Not Good

सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक .ष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेषण की अनुमति देता है, सटीक भविष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलगअलग .ष्टिकोणों से गोचर का विश्लेषण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

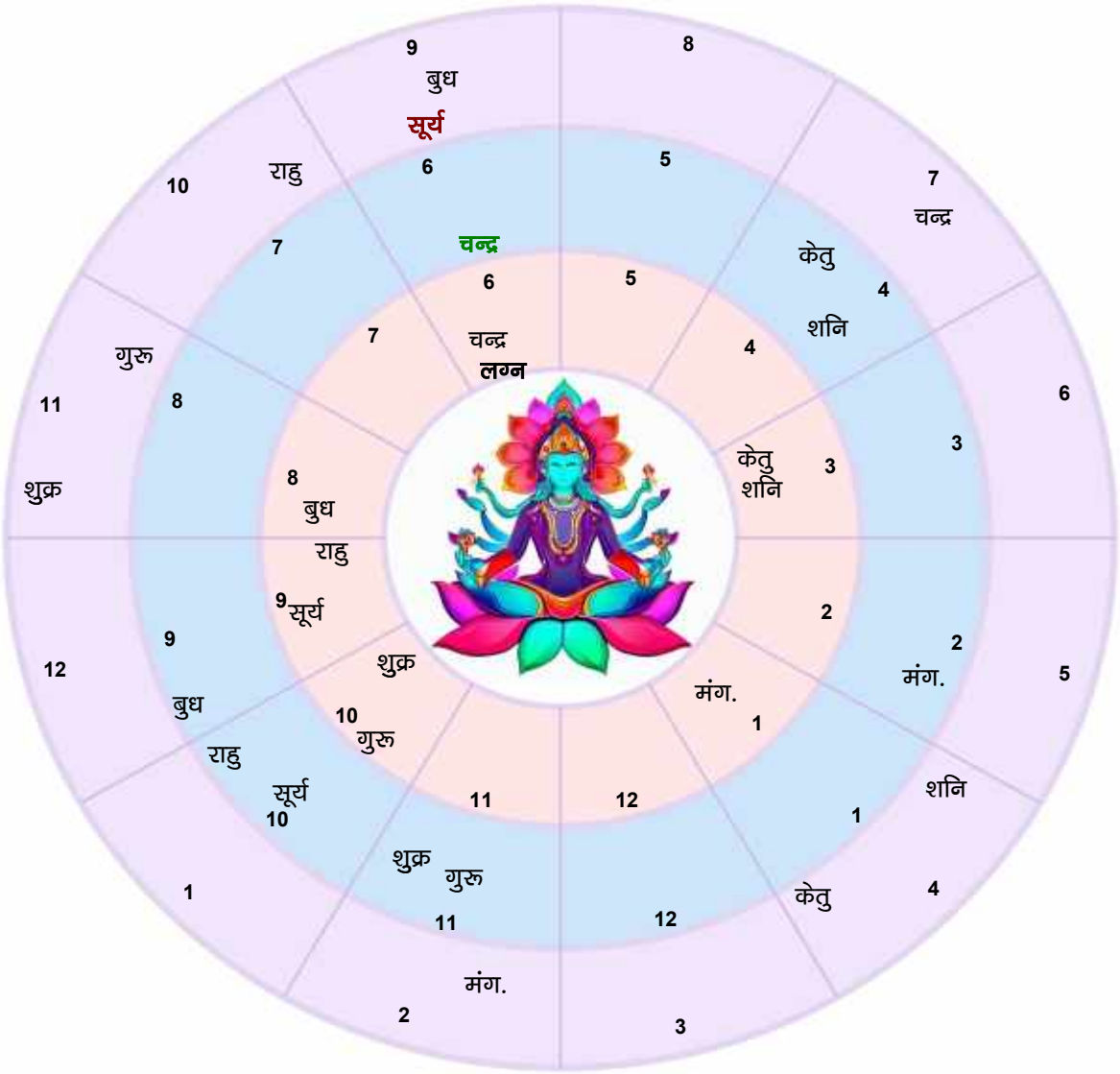

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेगें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**08.89**	**25.69**	**31.92**	**42.80**	**23.44**	**55.31**	**36.68**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**104.47**	**110.06**	**173.09**	**122.64**	**93.25**	**101.24**	**100.12**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**399.69**	**409.39**	**474.58**	**412.14**	**338.31**	**415.68**	**377.30**
षड्बल (रूप में)	**6.66**	**6.82**	**7.91**	**6.87**	**5.64**	**6.93**	**6.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**4**	**1**	**3**	**7**	**2**	**6**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृष्टिबल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भावबल योग	**462.82**	**491.97**	**466.91**	**316.69**	**412.57**	**374.15**	**345.57**	**539.39**	**442.35**	**434.49**	**409.69**	**437.87**
भावबल (रूप में)	**7.71**	**8.20**	**7.78**	**5.28**	**6.88**	**6.24**	**5.76**	**8.99**	**7.37**	**7.24**	**6.83**	**7.30**
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**2**	**3**	**12**	**8**	**10**	**11**	**1**	**5**	**7**	**9**	**6**

विंशोत्तरी दशा (1)

Moon (5 y.5 m.26 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:29:36)

अयनांश

चन्द्रमा (10 वर्ष)

18/12/1973 To 14/06/1979

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध 11 भावपति
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
राहु	-------	-------
गुरू	-------	-------
शनि	14-04-1975	00.00
बुध	13-09-1976	01.32
केतु	14-04-1977	02.74
शुक्र	13-12-1978	03.32
सूर्य	14-06-1979	04.99

मंगल (7 वर्ष)

14/06/1979 To 14/06/1986

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 8 , 3 भावपति
मंगल	10-11-1979	05.49
राहु	28-11-1980	05.90
गुरू	04-11-1981	06.95
शनि	13-12-1982	07.88
बुध	10-12-1983	08.99
केतु	08-05-1984	09.98
शुक्र	08-07-1985	10.39
सूर्य	13-11-1985	11.55
चन्द्रमा	14-06-1986	11.90

राहु (18 वर्ष)

14/06/1986 To 13/06/2004

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
राहु	24-02-1989	12.49
गुरू	20-07-1991	15.19
शनि	26-05-1994	17.59
बुध	13-12-1996	20.44
केतु	31-12-1997	22.99
शुक्र	31-12-2000	24.04
सूर्य	25-11-2001	27.04
चन्द्रमा	26-05-2003	27.94
मंगल	13-06-2004	29.44

गुरू (16 वर्ष)

13/06/2004 To 13/06/2020

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंन्ध 4 , 7 भावपति
गुरू	01-08-2006	30.49
शनि	12-02-2009	32.62
बुध	20-05-2011	35.15
केतु	25-04-2012	37.42
शुक्र	25-12-2014	38.35
सूर्य	13-10-2015	41.02
चन्द्रमा	12-02-2017	41.82
मंगल	19-01-2018	43.15
राहु	13-06-2020	44.09

शनि (19 वर्ष)

13/06/2020 To 14/06/2039

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अरि. (1) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 5 , 6 भावपति
शनि	17-06-2023	46.49
बुध	24-02-2026	49.50
केतु	05-04-2027	52.19
शुक्र	05-06-2030	53.30
सूर्य	17-05-2031	56.46
चन्द्रमा	16-12-2032	57.41
मंगल	25-01-2034	59.00
राहु	01-12-2036	60.10
गुरू	14-06-2039	62.95

बुध (17 वर्ष)

14/06/2039 To 13/06/2056

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 10 , 1 भावपति
बुध	10-11-2041	65.49
केतु	07-11-2042	67.90
शुक्र	07-09-2045	68.89
सूर्य	14-07-2046	71.72
चन्द्रमा	13-12-2047	72.57
मंगल	10-12-2048	73.99
राहु	29-06-2051	74.98
गुरू	04-10-2053	77.53
शनि	13-06-2056	79.80

विंशोत्तरी दशा (2)

केतु (7 वर्ष)

13/06/2056 To 14/06/2063

10th भाव	मिथुन राशि	मित्र संबंन्ध
वक्री विशेष	मृग. (4) नक्षत्र	भावपति

केतु	10-11-2056	82.49
शुक्र	10-01-2058	82.90
सूर्य	17-05-2058	84.06
चन्द्रमा	16-12-2058	84.41
मंगल	14-05-2059	85.00
राहु	01-06-2060	85.40
गुरू	08-05-2061	86.45
शनि	17-06-2062	87.39
बुध	14-06-2063	88.50

शुक्र (20 वर्ष)

14/06/2063 To 14/06/2083

5th भाव	मकर राशि	सम संबंन्ध
विशेष	श्रव. (1) नक्षत्र	9 , 2 भावपति

शुक्र	13-10-2066	89.49
सूर्य	13-10-2067	92.82
चन्द्रमा	14-06-2069	93.82
मंगल	14-08-2070	95.49
राहु	14-08-2073	96.65
गुरू	13-04-2076	99.65
शनि	14-06-2079	102.32
बुध	14-04-2082	105.49
केतु	14-06-2083	108.32

सूर्य (6 वर्ष)

14/06/2083 To 14/06/2089

4th भाव	धनु राशि	मित्र संबंन्ध
विशेष	मूला (1) नक्षत्र	12 भावपति

सूर्य	01-10-2083	109.49
चन्द्रमा	01-04-2084	109.79
मंगल	07-08-2084	110.29
राहु	02-07-2085	110.64
गुरू	20-04-2086	111.54
शनि	02-04-2087	112.34
बुध	06-02-2088	113.29
केतु	13-06-2088	114.14
शुक्र	14-06-2089	114.49

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	शनि	13:06:2020 (16:22:55)	14:06:2039 (05:31:03)
अन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	24:02:2026 (17:31:03)
प्रत्यन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	03:11:2023 (10:52:33)
सूक्ष्मदशा	गुरू	23:09:2023 (20:36:17)	12:10:2023 (09:59:09)
प्राणदशा	राहु	09:10:2023 (15:10:43)	12:10:2023 (09:59:09)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन
दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भ करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा

(18:12:1973 To 14:06:1979)

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

राहु अन्तर

राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--

गुरू अन्तर

गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर

(18:12:1973 To 14:04:1975)

शनि	-------	--
बुध	05-03-1974	00.00
केतु	08-04-1974	00.21
शुक्र	13-07-1974	00.31
सूर्य	11-08-1974	00.57
चन्द्रमा	28-09-1974	00.65
मंगल	01-11-1974	00.78
राहु	27-01-1975	00.87
गुरू	14-04-1975	01.11

बुध अन्तर

(14:04:1975 To 13:09:1976)

बुध	26-06-1975	01.32
केतु	26-07-1975	01.52
शुक्र	20-10-1975	01.60
सूर्य	15-11-1975	01.84
चन्द्रमा	28-12-1975	01.91
मंगल	28-01-1976	02.03
राहु	14-04-1976	02.11
गुरू	23-06-1976	02.32
शनि	13-09-1976	02.51

केतु अन्तर

(13:09:1976 To 14:04:1977)

केतु	25-09-1976	02.74
शुक्र	31-10-1976	02.77
सूर्य	10-11-1976	02.87
चन्द्रमा	28-11-1976	02.90
मंगल	11-12-1976	02.95
राहु	12-01-1977	02.98
गुरू	09-02-1977	03.07
शनि	15-03-1977	03.15
बुध	14-04-1977	03.24

शुक्र अन्तर

(14:04:1977 To 13:12:1978)

शुक्र	24-07-1977	03.32
सूर्य	24-08-1977	03.60
चन्द्रमा	13-10-1977	03.68
मंगल	18-11-1977	03.82
राहु	17-02-1978	03.92
गुरू	09-05-1978	04.17
शनि	14-08-1978	04.39
बुध	08-11-1978	04.65
केतु	13-12-1978	04.89

सूर्य अन्तर

(13:12:1978 To 14:06:1979)

सूर्य	22-12-1978	04.99
चन्द्रमा	07-01-1979	05.01
मंगल	17-01-1979	05.05
राहु	14-02-1979	05.08
गुरू	10-03-1979	05.16
शनि	08-04-1979	05.23
बुध	04-05-1979	05.30
केतु	14-05-1979	05.38
शुक्र	14-06-1979	05.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(14:06:1979 To 14:06:1986)

मंगल अन्तर

(14:06:1979 To 10:11:1979)

मंगल	22-06-1979	05.49
राहु	15-07-1979	05.51
गुरू	04-08-1979	05.57
शनि	27-08-1979	05.63
बुध	17-09-1979	05.69
केतु	26-09-1979	05.75
शुक्र	21-10-1979	05.77
सूर्य	28-10-1979	05.84
चन्द्रमा	10-11-1979	05.86

राहु अन्तर

(10:11:1979 To 28:11:1980)

राहु	06-01-1980	05.90
गुरू	27-02-1980	06.05
शनि	27-04-1980	06.19
बुध	21-06-1980	06.36
केतु	13-07-1980	06.51
शुक्र	15-09-1980	06.57
सूर्य	04-10-1980	06.75
चन्द्रमा	06-11-1980	06.80
मंगल	28-11-1980	06.89

गुरू अन्तर

(28:11:1980 To 04:11:1981)

गुरू	12-01-1981	06.95
शनि	07-03-1981	07.07
बुध	25-04-1981	07.22
केतु	15-05-1981	07.35
शुक्र	10-07-1981	07.41
सूर्य	27-07-1981	07.56
चन्द्रमा	25-08-1981	07.61
मंगल	14-09-1981	07.69
राहु	04-11-1981	07.74

शनि अन्तर

(04:11:1981 To 13:12:1982)

शनि	07-01-1982	07.88
बुध	05-03-1982	08.06
केतु	29-03-1982	08.21
शुक्र	04-06-1982	08.28
सूर्य	24-06-1982	08.46
चन्द्रमा	28-07-1982	08.52
मंगल	21-08-1982	08.61
राहु	20-10-1982	08.67
गुरू	13-12-1982	08.84

बुध अन्तर

(13:12:1982 To 10:12:1983)

बुध	03-02-1983	08.99
केतु	24-02-1983	09.13
शुक्र	25-04-1983	09.19
सूर्य	13-05-1983	09.35
चन्द्रमा	12-06-1983	09.40
मंगल	03-07-1983	09.48
राहु	27-08-1983	09.54
गुरू	14-10-1983	09.69
शनि	10-12-1983	09.82

केतु अन्तर

(10:12:1983 To 08:05:1984)

केतु	19-12-1983	09.98
शुक्र	13-01-1984	10.00
सूर्य	20-01-1984	10.07
चन्द्रमा	02-02-1984	10.09
मंगल	10-02-1984	10.13
राहु	04-03-1984	10.15
गुरू	24-03-1984	10.21
शनि	16-04-1984	10.27
बुध	08-05-1984	10.33

शुक्र अन्तर

(08:05:1984 To 08:07:1985)

शुक्र	18-07-1984	10.39
सूर्य	08-08-1984	10.58
चन्द्रमा	13-09-1984	10.64
मंगल	08-10-1984	10.74
राहु	11-12-1984	10.81
गुरू	05-02-1985	10.98
शनि	14-04-1985	11.14
बुध	13-06-1985	11.32
केतु	08-07-1985	11.49

सूर्य अन्तर

(08:07:1985 To 13:11:1985)

सूर्य	14-07-1985	11.55
चन्द्रमा	25-07-1985	11.57
मंगल	02-08-1985	11.60
राहु	21-08-1985	11.62
गुरू	07-09-1985	11.67
शनि	27-09-1985	11.72
बुध	15-10-1985	11.78
केतु	23-10-1985	11.83
शुक्र	13-11-1985	11.85

चन्द्रमा अन्तर

(13:11:1985 To 14:06:1986)

चन्द्रमा	01-12-1985	11.90
मंगल	13-12-1985	11.95
राहु	14-01-1986	11.99
गुरू	11-02-1986	12.07
शनि	17-03-1986	12.15
बुध	16-04-1986	12.25
केतु	29-04-1986	12.33
शुक्र	03-06-1986	12.36
सूर्य	14-06-1986	12.46

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(14:06:1986 To 13:06:2004)

राहु अन्तर

(14:06:1986 To 24:02:1989)

राहु	09-11-1986	12.49
गुरू	20-03-1987	12.89
शनि	23-08-1987	13.25
बुध	10-01-1988	13.68
केतु	07-03-1988	14.06
शुक्र	19-08-1988	14.22
सूर्य	07-10-1988	14.67
चन्द्रमा	29-12-1988	14.81
मंगल	24-02-1989	15.03

गुरू अन्तर

(24:02:1989 To 20:07:1991)

गुरू	21-06-1989	15.19
शनि	07-11-1989	15.51
बुध	11-03-1990	15.89
केतु	01-05-1990	16.23
शुक्र	24-09-1990	16.37
सूर्य	07-11-1990	16.77
चन्द्रमा	19-01-1991	16.89
मंगल	11-03-1991	17.09
राहु	20-07-1991	17.23

शनि अन्तर

(20:07:1991 To 26:05:1994)

शनि	01-01-1992	17.59
बुध	28-05-1992	18.04
केतु	28-07-1992	18.44
शुक्र	17-01-1993	18.61
सूर्य	10-03-1993	19.08
चन्द्रमा	05-06-1993	19.23
मंगल	05-08-1993	19.46
राहु	08-01-1994	19.63
गुरू	26-05-1994	20.06

बुध अन्तर

(26:05:1994 To 13:12:1996)

बुध	05-10-1994	20.44
केतु	29-11-1994	20.80
शुक्र	03-05-1995	20.95
सूर्य	18-06-1995	21.37
चन्द्रमा	04-09-1995	21.50
मंगल	28-10-1995	21.71
राहु	16-03-1996	21.86
गुरू	18-07-1996	22.24
शनि	13-12-1996	22.58

केतु अन्तर

(13:12:1996 To 31:12:1997)

केतु	05-01-1997	22.99
शुक्र	09-03-1997	23.05
सूर्य	29-03-1997	23.22
चन्द्रमा	30-04-1997	23.28
मंगल	22-05-1997	23.36
राहु	18-07-1997	23.43
गुरू	08-09-1997	23.58
शनि	07-11-1997	23.72
बुध	31-12-1997	23.89

शुक्र अन्तर

(31:12:1997 To 31:12:2000)

शुक्र	02-07-1998	24.04
सूर्य	26-08-1998	24.54
चन्द्रमा	25-11-1998	24.69
मंगल	28-01-1999	24.94
राहु	11-07-1999	25.11
गुरू	04-12-1999	25.56
शनि	26-05-2000	25.96
बुध	28-10-2000	26.44
केतु	31-12-2000	26.86

सूर्य अन्तर

(31:12:2000 To 25:11:2001)

सूर्य	17-01-2001	27.04
चन्द्रमा	13-02-2001	27.08
मंगल	04-03-2001	27.16
राहु	23-04-2001	27.21
गुरू	06-06-2001	27.35
शनि	28-07-2001	27.47
बुध	12-09-2001	27.61
केतु	01-10-2001	27.74
शुक्र	25-11-2001	27.79

चन्द्रमा अन्तर

(25:11:2001 To 26:05:2003)

चन्द्रमा	10-01-2002	27.94
मंगल	11-02-2002	28.06
राहु	04-05-2002	28.15
गुरू	16-07-2002	28.38
शनि	10-10-2002	28.58
बुध	27-12-2002	28.81
केतु	28-01-2003	29.03
शुक्र	29-04-2003	29.11
सूर्य	26-05-2003	29.36

मंगल अन्तर

(26:05:2003 To 13:06:2004)

मंगल	18-06-2003	29.44
राहु	14-08-2003	29.50
गुरू	04-10-2003	29.66
शनि	04-12-2003	29.80
बुध	27-01-2004	29.96
केतु	19-02-2004	30.11
शुक्र	23-04-2004	30.17
सूर्य	12-05-2004	30.35
चन्द्रमा	13-06-2004	30.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(13:06:2004 To 13:06:2020)

गुरू अन्तर

(13:06:2004 To 01:08:2006)

गुरू	25-09-2004	30.49
शनि	27-01-2005	30.77
बुध	17-05-2005	31.11
केतु	02-07-2005	31.41
शुक्र	08-11-2005	31.54
सूर्य	17-12-2005	31.89
चन्द्रमा	20-02-2006	32.00
मंगल	07-04-2006	32.18
राहु	01-08-2006	32.30

शनि अन्तर

(01:08:2006 To 12:02:2009)

शनि	26-12-2006	32.62
बुध	06-05-2007	33.02
केतु	29-06-2007	33.38
शुक्र	30-11-2007	33.53
सूर्य	15-01-2008	33.95
चन्द्रमा	01-04-2008	34.08
मंगल	25-05-2008	34.29
राहु	12-10-2008	34.44
गुरू	12-02-2009	34.82

बुध अन्तर

(12:02:2009 To 20:05:2011)

बुध	09-06-2009	35.15
केतु	28-07-2009	35.48
शुक्र	12-12-2009	35.61
सूर्य	23-01-2010	35.99
चन्द्रमा	02-04-2010	36.10
मंगल	20-05-2010	36.29
राहु	21-09-2010	36.42
गुरू	09-01-2011	36.76
शनि	20-05-2011	37.06

केतु अन्तर

(20:05:2011 To 25:04:2012)

केतु	09-06-2011	37.42
शुक्र	05-08-2011	37.48
सूर्य	22-08-2011	37.63
चन्द्रमा	19-09-2011	37.68
मंगल	09-10-2011	37.76
राहु	29-11-2011	37.81
गुरू	14-01-2012	37.95
शनि	08-03-2012	38.07
बुध	25-04-2012	38.22

शुक्र अन्तर

(25:04:2012 To 25:12:2014)

शुक्र	05-10-2012	38.35
सूर्य	23-11-2012	38.80
चन्द्रमा	12-02-2013	38.93
मंगल	10-04-2013	39.15
राहु	03-09-2013	39.31
गुरू	11-01-2014	39.71
शनि	14-06-2014	40.07
बुध	30-10-2014	40.49
केतु	25-12-2014	40.87

सूर्य अन्तर

(25:12:2014 To 13:10:2015)

सूर्य	09-01-2015	41.02
चन्द्रमा	02-02-2015	41.06
मंगल	19-02-2015	41.13
राहु	04-04-2015	41.17
गुरू	13-05-2015	41.29
शनि	28-06-2015	41.40
बुध	09-08-2015	41.53
केतु	26-08-2015	41.64
शुक्र	13-10-2015	41.69

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2015 To 12:02:2017)

चन्द्रमा	23-11-2015	41.82
मंगल	21-12-2015	41.93
राहु	04-03-2016	42.01
गुरू	08-05-2016	42.21
शनि	24-07-2016	42.39
बुध	01-10-2016	42.60
केतु	29-10-2016	42.79
शुक्र	19-01-2017	42.87
सूर्य	12-02-2017	43.09

मंगल अन्तर

(12:02:2017 To 19:01:2018)

मंगल	04-03-2017	43.15
राहु	24-04-2017	43.21
गुरू	08-06-2017	43.35
शनि	01-08-2017	43.47
बुध	19-09-2017	43.62
केतु	09-10-2017	43.75
शुक्र	04-12-2017	43.81
सूर्य	21-12-2017	43.96
चन्द्रमा	19-01-2018	44.01

राहु अन्तर

(19:01:2018 To 13:06:2020)

राहु	30-05-2018	44.09
गुरू	24-09-2018	44.45
शनि	10-02-2019	44.77
बुध	14-06-2019	45.15
केतु	04-08-2019	45.49
शुक्र	28-12-2019	45.63
सूर्य	10-02-2020	46.03
चन्द्रमा	23-04-2020	46.15
मंगल	13-06-2020	46.35

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(13:06:2020 To 14:06:2039)

शनि अन्तर

(13:06:2020 To 17:06:2023)

शनि	05-12-2020	46.49
बुध	09-05-2021	46.96
केतु	12-07-2021	47.39
शुक्र	11-01-2022	47.57
सूर्य	07-03-2022	48.07
चन्द्रमा	07-06-2022	48.22
मंगल	10-08-2022	48.47
राहु	21-01-2023	48.64
गुरू	17-06-2023	49.10

बुध अन्तर

(17:06:2023 To 24:02:2026)

बुध	03-11-2023	49.50
केतु	30-12-2023	49.88
शुक्र	11-06-2024	50.03
सूर्य	31-07-2024	50.48
चन्द्रमा	21-10-2024	50.62
मंगल	17-12-2024	50.84
राहु	14-05-2025	51.00
गुरू	22-09-2025	51.40
शनि	24-02-2026	51.76

केतु अन्तर

(24:02:2026 To 05:04:2027)

केतु	20-03-2026	52.19
शुक्र	26-05-2026	52.25
सूर्य	15-06-2026	52.44
चन्द्रमा	19-07-2026	52.49
मंगल	12-08-2026	52.59
राहु	11-10-2026	52.65
गुरू	04-12-2026	52.82
शनि	06-02-2027	52.96
बुध	05-04-2027	53.14

शुक्र अन्तर

(05:04:2027 To 05:06:2030)

शुक्र	14-10-2027	53.30
सूर्य	11-12-2027	53.82
चन्द्रमा	17-03-2028	53.98
मंगल	23-05-2028	54.25
राहु	13-11-2028	54.43
गुरू	16-04-2029	54.91
शनि	16-10-2029	55.33
बुध	29-03-2030	55.83
केतु	05-06-2030	56.28

सूर्य अन्तर

(05:06:2030 To 17:05:2031)

सूर्य	22-06-2030	56.46
चन्द्रमा	21-07-2030	56.51
मंगल	10-08-2030	56.59
राहु	01-10-2030	56.65
गुरू	16-11-2030	56.79
शनि	10-01-2031	56.91
बुध	28-02-2031	57.06
केतु	21-03-2031	57.20
शुक्र	17-05-2031	57.25

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2031 To 16:12:2032)

चन्द्रमा	05-07-2031	57.41
मंगल	07-08-2031	57.55
राहु	02-11-2031	57.64
गुरू	18-01-2032	57.87
शनि	19-04-2032	58.09
बुध	10-07-2032	58.34
केतु	13-08-2032	58.56
शुक्र	17-11-2032	58.65
सूर्य	16-12-2032	58.92

मंगल अन्तर

(16:12:2032 To 25:01:2034)

मंगल	09-01-2033	59.00
राहु	11-03-2033	59.06
गुरू	03-05-2033	59.23
शनि	07-07-2033	59.38
बुध	02-09-2033	59.55
केतु	25-09-2033	59.71
शुक्र	02-12-2033	59.77
सूर्य	22-12-2033	59.96
चन्द्रमा	25-01-2034	60.01

राहु अन्तर

(25:01:2034 To 01:12:2036)

राहु	30-06-2034	60.10
गुरू	16-11-2034	60.53
शनि	29-04-2035	60.91
बुध	24-09-2035	61.36
केतु	23-11-2035	61.77
शुक्र	15-05-2036	61.93
सूर्य	06-07-2036	62.41
चन्द्रमा	01-10-2036	62.55
मंगल	01-12-2036	62.79

गुरू अन्तर

(01:12:2036 To 14:06:2039)

गुरू	03-04-2037	62.95
शनि	28-08-2037	63.29
बुध	06-01-2038	63.69
केतु	01-03-2038	64.05
शुक्र	02-08-2038	64.20
सूर्य	17-09-2038	64.62
चन्द्रमा	03-12-2038	64.75
मंगल	26-01-2039	64.96
राहु	14-06-2039	65.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(14:06:2039 To 13:06:2056)

बुध अन्तर

(14:06:2039 To 10:11:2041)

बुध	16-10-2039	65.49
केतु	07-12-2039	65.83
शुक्र	01-05-2040	65.97
सूर्य	14-06-2040	66.37
चन्द्रमा	27-08-2040	66.49
मंगल	17-10-2040	66.69
राहु	26-02-2041	66.83
गुरू	24-06-2041	67.19
शनि	10-11-2041	67.52

केतु अन्तर

(10:11:2041 To 07:11:2042)

केतु	01-12-2041	67.90
शुक्र	30-01-2042	67.95
सूर्य	17-02-2042	68.12
चन्द्रमा	19-03-2042	68.17
मंगल	10-04-2042	68.25
राहु	03-06-2042	68.31
गुरू	21-07-2042	68.46
शनि	16-09-2042	68.59
बुध	07-11-2042	68.75

शुक्र अन्तर

(07:11:2042 To 07:09:2045)

शुक्र	28-04-2043	68.89
सूर्य	19-06-2043	69.36
चन्द्रमा	13-09-2043	69.50
मंगल	12-11-2043	69.74
राहु	16-04-2044	69.90
गुरू	01-09-2044	70.33
शनि	12-02-2045	70.71
बुध	09-07-2045	71.15
केतु	07-09-2045	71.56

सूर्य अन्तर

(07:09:2045 To 14:07:2046)

सूर्य	22-09-2045	71.72
चन्द्रमा	18-10-2045	71.76
मंगल	05-11-2045	71.83
राहु	22-12-2045	71.88
गुरू	01-02-2046	72.01
शनि	22-03-2046	72.13
बुध	05-05-2046	72.26
केतु	23-05-2046	72.38
शुक्र	14-07-2046	72.43

चन्द्रमा अन्तर

(14:07:2046 To 13:12:2047)

चन्द्रमा	26-08-2046	72.57
मंगल	25-09-2046	72.69
राहु	12-12-2046	72.77
गुरू	19-02-2047	72.98
शनि	12-05-2047	73.17
बुध	24-07-2047	73.40
केतु	23-08-2047	73.60
शुक्र	17-11-2047	73.68
सूर्य	13-12-2047	73.92

मंगल अन्तर

(13:12:2047 To 10:12:2048)

मंगल	03-01-2048	73.99
राहु	27-02-2048	74.05
गुरू	15-04-2048	74.19
शनि	12-06-2048	74.33
बुध	02-08-2048	74.48
केतु	23-08-2048	74.62
शुक्र	23-10-2048	74.68
सूर्य	10-11-2048	74.85
चन्द्रमा	10-12-2048	74.90

राहु अन्तर

(10:12:2048 To 29:06:2051)

राहु	29-04-2049	74.98
गुरू	31-08-2049	75.36
शनि	25-01-2050	75.70
बुध	06-06-2050	76.11
केतु	30-07-2050	76.47
शुक्र	02-01-2051	76.62
सूर्य	17-02-2051	77.04
चन्द्रमा	06-05-2051	77.17
मंगल	29-06-2051	77.38

गुरू अन्तर

(29:06:2051 To 04:10:2053)

गुरू	17-10-2051	77.53
शनि	25-02-2052	77.83
बुध	22-06-2052	78.19
केतु	09-08-2052	78.51
शुक्र	26-12-2052	78.64
सूर्य	05-02-2053	79.02
चन्द्रमा	15-04-2053	79.14
मंगल	02-06-2053	79.32
राहु	04-10-2053	79.46

शनि अन्तर

(04:10:2053 To 13:06:2056)

शनि	09-03-2054	79.80
बुध	26-07-2054	80.22
केतु	21-09-2054	80.60
शुक्र	04-03-2055	80.76
सूर्य	22-04-2055	81.21
चन्द्रमा	13-07-2055	81.34
मंगल	08-09-2055	81.57
राहु	03-02-2056	81.73
गुरू	13-06-2056	82.13

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(13:06:2056 To 14:06:2063)

केतु अन्तर

(13:06:2056 To 10:11:2056)		
केतु	22-06-2056	82.49
शुक्र	17-07-2056	82.51
सूर्य	24-07-2056	82.58
चन्द्रमा	06-08-2056	82.60
मंगल	14-08-2056	82.63
राहु	06-09-2056	82.66
गुरू	26-09-2056	82.72
शनि	19-10-2056	82.77
बुध	10-11-2056	82.84

शुक्र अन्तर

(10:11:2056 To 10:01:2058)		
शुक्र	20-01-2057	82.90
सूर्य	10-02-2057	83.09
चन्द्रमा	18-03-2057	83.15
मंगल	11-04-2057	83.25
राहु	14-06-2057	83.31
गुरू	10-08-2057	83.49
शनि	16-10-2057	83.65
बुध	16-12-2057	83.83
केतु	10-01-2058	84.00

सूर्य अन्तर

(10:01:2058 To 17:05:2058)		
सूर्य	16-01-2058	84.06
चन्द्रमा	27-01-2058	84.08
मंगल	03-02-2058	84.11
राहु	22-02-2058	84.13
गुरू	11-03-2058	84.18
शनि	01-04-2058	84.23
बुध	19-04-2058	84.28
केतु	26-04-2058	84.33
शुक्र	17-05-2058	84.35

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2058 To 16:12:2058)		
चन्द्रमा	04-06-2058	84.41
मंगल	17-06-2058	84.46
राहु	18-07-2058	84.50
गुरू	16-08-2058	84.58
शनि	19-09-2058	84.66
बुध	19-10-2058	84.75
केतु	31-10-2058	84.84
शुक्र	06-12-2058	84.87
सूर्य	16-12-2058	84.97

मंगल अन्तर

(16:12:2058 To 14:05:2059)		
मंगल	25-12-2058	85.00
राहु	16-01-2059	85.02
गुरू	05-02-2059	85.08
शनि	01-03-2059	85.14
बुध	22-03-2059	85.20
केतु	31-03-2059	85.26
शुक्र	24-04-2059	85.28
सूर्य	02-05-2059	85.35
चन्द्रमा	14-05-2059	85.37

राहु अन्तर

(14:05:2059 To 01:06:2060)		
राहु	11-07-2059	85.40
गुरू	31-08-2059	85.56
शनि	31-10-2059	85.70
बुध	24-12-2059	85.87
केतु	15-01-2060	86.02
शुक्र	19-03-2060	86.08
सूर्य	08-04-2060	86.25
चन्द्रमा	10-05-2060	86.31
मंगल	01-06-2060	86.39

गुरू अन्तर

(01:06:2060 To 08:05:2061)		
गुरू	17-07-2060	86.45
शनि	09-09-2060	86.58
बुध	27-10-2060	86.73
केतु	16-11-2060	86.86
शुक्र	12-01-2061	86.91
सूर्य	29-01-2061	87.07
चन्द्रमा	26-02-2061	87.12
मंगल	18-03-2061	87.19
राहु	08-05-2061	87.25

शनि अन्तर

(08:05:2061 To 17:06:2062)		
शनि	11-07-2061	87.39
बुध	07-09-2061	87.56
केतु	30-09-2061	87.72
शुक्र	07-12-2061	87.79
सूर्य	27-12-2061	87.97
चन्द्रमा	30-01-2062	88.03
मंगल	22-02-2062	88.12
राहु	24-04-2062	88.18
गुरू	17-06-2062	88.35

बुध अन्तर

(17:06:2062 To 14:06:2063)		
बुध	07-08-2062	88.50
केतु	28-08-2062	88.64
शुक्र	27-10-2062	88.69
सूर्य	15-11-2062	88.86
चन्द्रमा	15-12-2062	88.91
मंगल	05-01-2063	88.99
राहु	28-02-2063	89.05
गुरू	17-04-2063	89.20
शनि	14-06-2063	89.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(14:06:2063 To 14:06:2083)

शुक्र अन्तर

(14:06:2063 To 13:10:2066)

शुक्र	03-01-2064	89.49
सूर्य	04-03-2064	90.04
चन्द्रमा	13-06-2064	90.21
मंगल	23-08-2064	90.49
राहु	22-02-2065	90.68
गुरू	03-08-2065	91.18
शनि	12-02-2066	91.63
बुध	03-08-2066	92.15
केतु	13-10-2066	92.63

सूर्य अन्तर

(13:10:2066 To 13:10:2067)

सूर्य	01-11-2066	92.82
चन्द्रमा	01-12-2066	92.87
मंगल	22-12-2066	92.95
राहु	15-02-2067	93.01
गुरू	05-04-2067	93.16
शनि	02-06-2067	93.30
बुध	23-07-2067	93.45
केतु	14-08-2067	93.60
शुक्र	13-10-2067	93.65

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2067 To 14:06:2069)

चन्द्रमा	03-12-2067	93.82
मंगल	08-01-2068	93.96
राहु	08-04-2068	94.06
गुरू	28-06-2068	94.31
शनि	03-10-2068	94.53
बुध	28-12-2068	94.79
केतु	02-02-2069	95.03
शुक्र	14-05-2069	95.13
सूर्य	14-06-2069	95.40

मंगल अन्तर

(14:06:2069 To 14:08:2070)

मंगल	09-07-2069	95.49
राहु	10-09-2069	95.56
गुरू	06-11-2069	95.73
शनि	13-01-2070	95.89
बुध	14-03-2070	96.07
केतु	08-04-2070	96.24
शुक्र	18-06-2070	96.30
सूर्य	09-07-2070	96.50
चन्द्रमा	14-08-2070	96.56

राहु अन्तर

(14:08:2070 To 14:08:2073)

राहु	25-01-2071	96.65
गुरू	20-06-2071	97.10
शनि	10-12-2071	97.50
बुध	14-05-2072	97.98
केतु	17-07-2072	98.40
शुक्र	16-01-2073	98.58
सूर्य	11-03-2073	99.08
चन्द्रमा	11-06-2073	99.23
मंगल	14-08-2073	99.48

गुरू अन्तर

(14:08:2073 To 13:04:2076)

गुरू	21-12-2073	99.65
शनि	24-05-2074	100.01
बुध	09-10-2074	100.43
केतु	05-12-2074	100.81
शुक्र	16-05-2075	100.97
सूर्य	04-07-2075	101.41
चन्द्रमा	23-09-2075	101.54
मंगल	19-11-2075	101.77
राहु	13-04-2076	101.92

शनि अन्तर

(13:04:2076 To 14:06:2079)

शनि	14-10-2076	102.32
बुध	27-03-2077	102.82
केतु	02-06-2077	103.27
शुक्र	12-12-2077	103.46
सूर्य	08-02-2078	103.98
चन्द्रमा	15-05-2078	104.14
मंगल	21-07-2078	104.41
राहु	11-01-2079	104.59
गुरू	14-06-2079	105.07

बुध अन्तर

(14:06:2079 To 14:04:2082)

बुध	07-11-2079	105.49
केतु	07-01-2080	105.89
शुक्र	27-06-2080	106.05
सूर्य	18-08-2080	106.53
चन्द्रमा	13-11-2080	106.67
मंगल	12-01-2081	106.90
राहु	16-06-2081	107.07
गुरू	01-11-2081	107.50
शनि	14-04-2082	107.87

केतु अन्तर

(14:04:2082 To 14:06:2083)

केतु	09-05-2082	108.32
शुक्र	19-07-2082	108.39
सूर्य	09-08-2082	108.58
चन्द्रमा	13-09-2082	108.64
मंगल	08-10-2082	108.74
राहु	11-12-2082	108.81
गुरू	06-02-2083	108.98
शनि	14-04-2083	109.14
बुध	14-06-2083	109.32

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(14:06:2083 To 14:06:2089)

सूर्य अन्तर

(14:06:2083 To 01:10:2083)

सूर्य	19-06-2083	109.49
चन्द्रमा	28-06-2083	109.50
मंगल	05-07-2083	109.53
राहु	21-07-2083	109.55
गुरू	05-08-2083	109.59
शनि	22-08-2083	109.63
बुध	07-09-2083	109.68
केतु	13-09-2083	109.72
शुक्र	01-10-2083	109.74

चन्द्रमा अन्तर

(01:10:2083 To 01:04:2084)

चन्द्रमा	16-10-2083	109.79
मंगल	27-10-2083	109.83
राहु	23-11-2083	109.86
गुरू	18-12-2083	109.93
शनि	16-01-2084	110.00
बुध	11-02-2084	110.08
केतु	21-02-2084	110.15
शुक्र	23-03-2084	110.18
सूर्य	01-04-2084	110.26

मंगल अन्तर

(01:04:2084 To 07:08:2084)

मंगल	08-04-2084	110.29
राहु	28-04-2084	110.31
गुरू	15-05-2084	110.36
शनि	04-06-2084	110.41
बुध	22-06-2084	110.46
केतु	30-06-2084	110.51
शुक्र	21-07-2084	110.53
सूर्य	27-07-2084	110.59
चन्द्रमा	07-08-2084	110.61

राहु अन्तर

(07:08:2084 To 02:07:2085)

राहु	25-09-2084	110.64
गुरू	08-11-2084	110.77
शनि	31-12-2084	110.89
बुध	15-02-2085	111.04
केतु	06-03-2085	111.16
शुक्र	30-04-2085	111.22
सूर्य	16-05-2085	111.37
चन्द्रमा	13-06-2085	111.41
मंगल	02-07-2085	111.49

गुरू अन्तर

(02:07:2085 To 20:04:2086)

गुरू	10-08-2085	111.54
शनि	25-09-2085	111.64
बुध	06-11-2085	111.77
केतु	23-11-2085	111.88
शुक्र	10-01-2086	111.93
सूर्य	25-01-2086	112.06
चन्द्रमा	18-02-2086	112.10
मंगल	07-03-2086	112.17
राहु	20-04-2086	112.22

शनि अन्तर

(20:04:2086 To 02:04:2087)

शनि	14-06-2086	112.34
बुध	02-08-2086	112.49
केतु	22-08-2086	112.62
शुक्र	19-10-2086	112.68
सूर्य	05-11-2086	112.84
चन्द्रमा	04-12-2086	112.88
मंगल	24-12-2086	112.96
राहु	14-02-2087	113.02
गुरू	02-04-2087	113.16

बुध अन्तर

(02:04:2087 To 06:02:2088)

बुध	16-05-2087	113.29
केतु	03-06-2087	113.41
शुक्र	24-07-2087	113.46
सूर्य	09-08-2087	113.60
चन्द्रमा	04-09-2087	113.64
मंगल	22-09-2087	113.71
राहु	07-11-2087	113.76
गुरू	19-12-2087	113.89
शनि	06-02-2088	114.00

केतु अन्तर

(06:02:2088 To 13:06:2088)

केतु	14-02-2088	114.14
शुक्र	06-03-2088	114.16
सूर्य	12-03-2088	114.22
चन्द्रमा	23-03-2088	114.23
मंगल	30-03-2088	114.26
राहु	19-04-2088	114.28
गुरू	06-05-2088	114.34
शनि	26-05-2088	114.38
बुध	13-06-2088	114.44

शुक्र अन्तर

(13:06:2088 To 14:06:2089)

शुक्र	13-08-2088	114.49
सूर्य	31-08-2088	114.65
चन्द्रमा	01-10-2088	114.70
मंगल	22-10-2088	114.79
राहु	16-12-2088	114.85
गुरू	03-02-2089	115.00
शनि	02-04-2089	115.13
बुध	23-05-2089	115.29
केतु	14-06-2089	115.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व0 1 मा0 5 दि0

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्र ावी हो रहा है।

राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

मंगल (8 वर्ष)

18/12/1973 To 22/01/1981

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 , 3 भावपति
मंगल	-------	-------
बुध	29-11-1974	00.00
शनि	27-08-1975	00.95
गुरू	22-01-1977	01.69
राहु	13-12-1977	03.10
शुक्र	03-07-1979	03.99
सूर्य	13-12-1979	05.54
चन्द्रमा	22-01-1981	05.99

बुध (17 वर्ष)

22/01/1981 To 22/01/1998

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंध 10 , 1 भावपति
बुध	26-09-1983	07.10
शनि	23-04-1985	09.77
गुरू	19-04-1988	11.35
राहु	11-03-1990	14.34
शुक्र	30-06-1993	16.23
सूर्य	10-06-1994	19.53
चन्द्रमा	19-10-1996	20.48
मंगल	22-01-1998	22.84

शनि (10 वर्ष)

22/01/1998 To 22/01/2008

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अरि. (1) नक्षत्र	सम संबंध 5 , 6 भावपति
शनि	26-12-1998	24.10
गुरू	29-09-2000	25.02
राहु	09-11-2001	26.78
शुक्र	20-10-2003	27.89
सूर्य	10-05-2004	29.84
चन्द्रमा	29-09-2005	30.39
मंगल	27-06-2006	31.78
बुध	22-01-2008	32.52

गुरू (19 वर्ष)

22/01/2008 To 22/01/2027

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 7 भावपति
गुरू	27-05-2011	34.10
राहु	07-07-2013	37.44
शुक्र	17-03-2017	39.55
सूर्य	07-04-2018	43.25
चन्द्रमा	26-11-2020	44.30
मंगल	23-04-2022	46.94
बुध	20-04-2025	48.35
शनि	22-01-2027	51.34

राहु (12 वर्ष)

22/01/2027 To 22/01/2039

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंध भावपति
राहु	23-05-2028	53.10
शुक्र	23-09-2030	54.43
सूर्य	24-05-2031	56.76
चन्द्रमा	22-01-2033	57.43
मंगल	13-12-2033	59.10
बुध	02-11-2035	59.99
शनि	13-12-2036	61.88
गुरू	22-01-2039	62.99

शुक्र (21 वर्ष)

22/01/2039 To 22/01/2060

5th भाव विशेष	मकर राशि श्रव. (1) नक्षत्र	मित्र संबंध 9 , 2 भावपति
शुक्र	22-02-2043	65.10
सूर्य	23-04-2044	69.18
चन्द्रमा	24-03-2047	70.35
मंगल	13-10-2048	73.26
बुध	01-02-2052	74.82
शनि	12-01-2054	78.13
गुरू	23-09-2057	80.07
राहु	22-01-2060	83.76

सूर्य (6 वर्ष)

22/01/2060 To 22/01/2066

4th भाव विशेष	धनु राशि मूला (1) नक्षत्र	मित्र संबंध 12 भावपति
सूर्य	23-05-2060	86.10
चन्द्रमा	24-03-2061	86.43
मंगल	02-09-2061	87.26
बुध	13-08-2062	87.71
शनि	04-03-2063	88.65
गुरू	23-03-2064	89.21
राहु	22-11-2064	90.26
शुक्र	22-01-2066	90.93

चन्द्रमा (15 वर्ष)

22/01/2066 To 22/01/2081

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 11 भावपति
चन्द्रमा	22-02-2068	92.10
मंगल	03-04-2069	94.18
बुध	13-08-2071	95.29
शनि	02-01-2073	97.65
गुरू	23-08-2075	99.04
राहु	23-04-2077	101.68
शुक्र	23-03-2080	103.35
सूर्य	22-01-2081	106.26

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(18:12:1973 To 22:01:1981)

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
गुरू	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

बुध अन्तर

(18:12:1973 To 29:11:1974)

बुध	-------	--
शनि	19-12-1973	00.00
गुरू	10-03-1974	00.01
राहु	30-04-1974	00.23
शुक्र	29-07-1974	00.37
सूर्य	23-08-1974	00.61
चन्द्रमा	26-10-1974	00.68
मंगल	29-11-1974	00.86

शनि अन्तर

(29:11:1974 To 27:08:1975)

शनि	24-12-1974	00.95
गुरू	10-02-1975	01.02
राहु	12-03-1975	01.15
शुक्र	03-05-1975	01.23
सूर्य	18-05-1975	01.37
चन्द्रमा	25-06-1975	01.42
मंगल	15-07-1975	01.52
बुध	27-08-1975	01.57

गुरू अन्तर

(27:08:1975 To 22:01:1977)

गुरू	25-11-1975	01.69
राहु	21-01-1976	01.94
शुक्र	30-04-1976	02.09
सूर्य	29-05-1976	02.37
चन्द्रमा	08-08-1976	02.45
मंगल	15-09-1976	02.64
बुध	06-12-1976	02.75
शनि	22-01-1977	02.97

राहु अन्तर

(22:01:1977 To 13:12:1977)

राहु	27-02-1977	03.10
शुक्र	01-05-1977	03.20
सूर्य	19-05-1977	03.37
चन्द्रमा	03-07-1977	03.42
मंगल	27-07-1977	03.54
बुध	17-09-1977	03.61
शनि	17-10-1977	03.75
गुरू	13-12-1977	03.83

शुक्र अन्तर

(13:12:1977 To 03:07:1979)

शुक्र	02-04-1978	03.99
सूर्य	04-05-1978	04.29
चन्द्रमा	21-07-1978	04.38
मंगल	02-09-1978	04.59
बुध	30-11-1978	04.71
शनि	21-01-1979	04.95
गुरू	01-05-1979	05.10
राहु	03-07-1979	05.37

सूर्य अन्तर

(03:07:1979 To 13:12:1979)

सूर्य	12-07-1979	05.54
चन्द्रमा	04-08-1979	05.57
मंगल	16-08-1979	05.63
बुध	11-09-1979	05.66
शनि	26-09-1979	05.73
गुरू	24-10-1979	05.77
राहु	11-11-1979	05.85
शुक्र	13-12-1979	05.90

चन्द्रमा अन्तर

(13:12:1979 To 22:01:1981)

चन्द्रमा	07-02-1980	05.99
मंगल	08-03-1980	06.14
बुध	11-05-1980	06.22
शनि	18-06-1980	06.40
गुरू	28-08-1980	06.50
राहु	13-10-1980	06.70
शुक्र	31-12-1980	06.82
सूर्य	22-01-1981	07.04

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(22:01:1981 To 22:01:1998)

बुध अन्तर

(22:01:1981 To 26:09:1983)		
बुध	25-06-1981	07.10
शनि	23-09-1981	07.52
गुरू	14-03-1982	07.77
राहु	01-07-1982	08.24
शुक्र	07-01-1983	08.53
सूर्य	02-03-1983	09.06
चन्द्रमा	16-07-1983	09.20
मंगल	26-09-1983	09.58

शनि अन्तर

(26:09:1983 To 23:04:1985)		
शनि	18-11-1983	09.77
गुरू	27-02-1984	09.92
राहु	01-05-1984	10.20
शुक्र	21-08-1984	10.37
सूर्य	22-09-1984	10.68
चन्द्रमा	11-12-1984	10.76
मंगल	23-01-1985	10.98
बुध	23-04-1985	11.10

गुरू अन्तर

(23:04:1985 To 19:04:1988)		
गुरू	01-11-1985	11.35
राहु	03-03-1986	11.87
शुक्र	01-10-1986	12.21
सूर्य	01-12-1986	12.79
चन्द्रमा	01-05-1987	12.95
मंगल	21-07-1987	13.37
बुध	09-01-1988	13.59
शनि	19-04-1988	14.06

राहु अन्तर

(19:04:1988 To 11:03:1990)		
राहु	05-07-1988	14.34
शुक्र	17-11-1988	14.55
सूर्य	25-12-1988	14.92
चन्द्रमा	31-03-1989	15.02
मंगल	21-05-1989	15.28
बुध	06-09-1989	15.42
शनि	09-11-1989	15.72
गुरू	11-03-1990	15.89

शुक्र अन्तर

(11:03:1990 To 30:06:1993)		
शुक्र	31-10-1990	16.23
सूर्य	06-01-1991	16.87
चन्द्रमा	23-06-1991	17.05
मंगल	20-09-1991	17.51
बुध	28-03-1992	17.76
शनि	18-07-1992	18.28
गुरू	16-02-1993	18.58
राहु	30-06-1993	19.17

सूर्य अन्तर

(30:06:1993 To 10:06:1994)		
सूर्य	19-07-1993	19.53
चन्द्रमा	05-09-1993	19.59
मंगल	01-10-1993	19.72
बुध	24-11-1993	19.79
शनि	26-12-1993	19.94
गुरू	24-02-1994	20.02
राहु	04-04-1994	20.19
शुक्र	10-06-1994	20.29

चन्द्रमा अन्तर

(10:06:1994 To 19:10:1996)		
चन्द्रमा	07-10-1994	20.48
मंगल	10-12-1994	20.81
बुध	25-04-1995	20.98
शनि	14-07-1995	21.35
गुरू	12-12-1995	21.57
राहु	17-03-1996	21.99
शुक्र	01-09-1996	22.25
सूर्य	19-10-1996	22.71

मंगल अन्तर

(19:10:1996 To 22:01:1998)		
मंगल	23-11-1996	22.84
बुध	03-02-1997	22.93
शनि	18-03-1997	23.13
गुरू	06-06-1997	23.25
राहु	27-07-1997	23.47
शुक्र	25-10-1997	23.61
सूर्य	19-11-1997	23.85
चन्द्रमा	22-01-1998	23.92

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(22:01:1998 To 22:01:2008)

शनि अन्तर

(22:01:1998 To 26:12:1998)

शनि	22-02-1998	24.10
गुरू	23-04-1998	24.18
राहु	31-05-1998	24.35
शुक्र	04-08-1998	24.45
सूर्य	23-08-1998	24.63
चन्द्रमा	09-10-1998	24.68
मंगल	03-11-1998	24.81
बुध	26-12-1998	24.88

गुरू अन्तर

(26:12:1998 To 29:09:2000)

गुरू	18-04-1999	25.02
राहु	28-06-1999	25.33
शुक्र	31-10-1999	25.53
सूर्य	06-12-1999	25.87
चन्द्रमा	04-03-2000	25.97
मंगल	21-04-2000	26.21
बुध	31-07-2000	26.34
शनि	29-09-2000	26.62

राहु अन्तर

(29:09:2000 To 09:11:2001)

राहु	13-11-2000	26.78
शुक्र	31-01-2001	26.91
सूर्य	23-02-2001	27.12
चन्द्रमा	20-04-2001	27.18
मंगल	20-05-2001	27.34
बुध	23-07-2001	27.42
शनि	30-08-2001	27.60
गुरू	09-11-2001	27.70

शुक्र अन्तर

(09:11:2001 To 20:10:2003)

शुक्र	27-03-2002	27.89
सूर्य	05-05-2002	28.27
चन्द्रमा	12-08-2002	28.38
मंगल	03-10-2002	28.65
बुध	23-01-2003	28.79
शनि	30-03-2003	29.10
गुरू	02-08-2003	29.28
राहु	20-10-2003	29.62

सूर्य अन्तर

(20:10:2003 To 10:05:2004)

सूर्य	31-10-2003	29.84
चन्द्रमा	28-11-2003	29.87
मंगल	13-12-2003	29.95
बुध	14-01-2004	29.99
शनि	02-02-2004	30.07
गुरू	09-03-2004	30.13
राहु	31-03-2004	30.22
शुक्र	10-05-2004	30.29

चन्द्रमा अन्तर

(10:05:2004 To 29:09:2005)

चन्द्रमा	19-07-2004	30.39
मंगल	26-08-2004	30.59
बुध	14-11-2004	30.69
शनि	31-12-2004	30.91
गुरू	30-03-2005	31.04
राहु	26-05-2005	31.28
शुक्र	01-09-2005	31.44
सूर्य	29-09-2005	31.71

मंगल अन्तर

(29:09:2005 To 27:06:2006)

मंगल	19-10-2005	31.78
बुध	01-12-2005	31.84
शनि	26-12-2005	31.95
गुरू	11-02-2006	32.02
राहु	14-03-2006	32.15
शुक्र	05-05-2006	32.24
सूर्य	20-05-2006	32.38
चन्द्रमा	27-06-2006	32.42

बुध अन्तर

(27:06:2006 To 22:01:2008)

बुध	25-09-2006	32.52
शनि	17-11-2006	32.77
गुरू	26-02-2007	32.92
राहु	01-05-2007	33.19
शुक्र	21-08-2007	33.37
सूर्य	22-09-2007	33.67
चन्द्रमा	11-12-2007	33.76
मंगल	22-01-2008	33.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(22:01:2008 To 22:01:2027)

गुरू अन्तर

(22:01:2008 To 27:05:2011)

गुरू	24-08-2008	34.10
राहु	07-01-2009	34.69
शुक्र	02-09-2009	35.06
सूर्य	08-11-2009	35.71
चन्द्रमा	27-04-2010	35.89
मंगल	26-07-2010	36.36
बुध	03-02-2011	36.60
शनि	27-05-2011	37.13

राहु अन्तर

(27:05:2011 To 07:07:2013)

राहु	21-08-2011	37.44
शुक्र	18-01-2012	37.67
सूर्य	01-03-2012	38.09
चन्द्रमा	16-06-2012	38.20
मंगल	12-08-2012	38.50
बुध	12-12-2012	38.65
शनि	21-02-2013	38.98
गुरू	07-07-2013	39.18

शुक्र अन्तर

(07:07:2013 To 17:03:2017)

शुक्र	26-03-2014	39.55
सूर्य	09-06-2014	40.27
चन्द्रमा	13-12-2014	40.47
मंगल	23-03-2015	40.99
बुध	21-10-2015	41.26
शनि	23-02-2016	41.84
गुरू	18-10-2016	42.19
राहु	17-03-2017	42.84

सूर्य अन्तर

(17:03:2017 To 07:04:2018)

सूर्य	08-04-2017	43.25
चन्द्रमा	31-05-2017	43.30
मंगल	29-06-2017	43.45
बुध	28-08-2017	43.53
शनि	03-10-2017	43.70
गुरू	10-12-2017	43.79
राहु	22-01-2018	43.98
शुक्र	07-04-2018	44.10

चन्द्रमा अन्तर

(07:04:2018 To 26:11:2020)

चन्द्रमा	18-08-2018	44.30
मंगल	29-10-2018	44.67
बुध	29-03-2019	44.86
शनि	26-06-2019	45.28
गुरू	13-12-2019	45.52
राहु	29-03-2020	45.99
शुक्र	03-10-2020	46.28
सूर्य	26-11-2020	46.79

मंगल अन्तर

(26:11:2020 To 23:04:2022)

मंगल	03-01-2021	46.94
बुध	25-03-2021	47.04
शनि	11-05-2021	47.27
गुरू	10-08-2021	47.40
राहु	06-10-2021	47.64
शुक्र	14-01-2022	47.80
सूर्य	11-02-2022	48.07
चन्द्रमा	23-04-2022	48.15

बुध अन्तर

(23:04:2022 To 20:04:2025)

बुध	12-10-2022	48.35
शनि	21-01-2023	48.82
गुरू	01-08-2023	49.10
राहु	01-12-2023	49.62
शुक्र	30-06-2024	49.95
सूर्य	30-08-2024	50.54
चन्द्रमा	29-01-2025	50.70
मंगल	20-04-2025	51.12

शनि अन्तर

(20:04:2025 To 22:01:2027)

शनि	19-06-2025	51.34
गुरू	09-10-2025	51.50
राहु	20-12-2025	51.81
शुक्र	24-04-2026	52.01
सूर्य	29-05-2026	52.35
चन्द्रमा	27-08-2026	52.45
मंगल	13-10-2026	52.69
बुध	22-01-2027	52.82

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(22:01:2027 To 22:01:2039)

राहु अन्तर

(22:01:2027 To 23:05:2028)

राहु	17-03-2027	53.10
शुक्र	20-06-2027	53.25
सूर्य	17-07-2027	53.51
चन्द्रमा	23-09-2027	53.58
मंगल	29-10-2027	53.76
बुध	13-01-2028	53.86
शनि	27-02-2028	54.07
गुरू	23-05-2028	54.20

शुक्र अन्तर

(23:05:2028 To 23:09:2030)

शुक्र	05-11-2028	54.43
सूर्य	23-12-2028	54.88
चन्द्रमा	20-04-2029	55.01
मंगल	22-06-2029	55.34
बुध	03-11-2029	55.51
शनि	21-01-2030	55.88
गुरू	20-06-2030	56.09
राहु	23-09-2030	56.51

सूर्य अन्तर

(23:09:2030 To 24:05:2031)

सूर्य	06-10-2030	56.76
चन्द्रमा	09-11-2030	56.80
मंगल	27-11-2030	56.89
बुध	04-01-2031	56.94
शनि	27-01-2031	57.05
गुरू	11-03-2031	57.11
राहु	07-04-2031	57.23
शुक्र	24-05-2031	57.30

चन्द्रमा अन्तर

(24:05:2031 To 22:01:2033)

चन्द्रमा	16-08-2031	57.43
मंगल	30-09-2031	57.66
बुध	04-01-2032	57.79
शनि	01-03-2032	58.05
गुरू	16-06-2032	58.20
राहु	23-08-2032	58.50
शुक्र	19-12-2032	58.68
सूर्य	22-01-2033	59.01

मंगल अन्तर

(22:01:2033 To 13:12:2033)

मंगल	15-02-2033	59.10
बुध	07-04-2033	59.16
शनि	07-05-2033	59.30
गुरू	03-07-2033	59.39
राहु	08-08-2033	59.54
शुक्र	11-10-2033	59.64
सूर्य	29-10-2033	59.81
चन्द्रमा	13-12-2033	59.86

बुध अन्तर

(13:12:2033 To 02:11:2035)

बुध	31-03-2034	59.99
शनि	03-06-2034	60.28
गुरू	02-10-2034	60.46
राहु	18-12-2034	60.79
शुक्र	01-05-2035	61.00
सूर्य	08-06-2035	61.37
चन्द्रमा	12-09-2035	61.47
मंगल	02-11-2035	61.74

शनि अन्तर

(02:11:2035 To 13:12:2036)

शनि	10-12-2035	61.88
गुरू	19-02-2036	61.98
राहु	04-04-2036	62.17
शुक्र	22-06-2036	62.30
सूर्य	15-07-2036	62.51
चन्द्रमा	09-09-2036	62.57
मंगल	10-10-2036	62.73
बुध	13-12-2036	62.81

गुरू अन्तर

(13:12:2036 To 22:01:2039)

गुरू	27-04-2037	62.99
राहु	22-07-2037	63.36
शुक्र	19-12-2037	63.59
सूर्य	30-01-2038	64.00
चन्द्रमा	17-05-2038	64.12
मंगल	14-07-2038	64.41
बुध	12-11-2038	64.57
शनि	22-01-2039	64.90

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(22:01:2039 To 22:01:2060)

शुक्र अन्तर

(22:01:2039 To 22:02:2043)

शुक्र	08-11-2039	65.10
सूर्य	30-01-2040	65.89
चन्द्रमा	24-08-2040	66.12
मंगल	13-12-2040	66.69
बुध	05-08-2041	66.99
शनि	21-12-2041	67.63
गुरू	09-09-2042	68.01
राहु	22-02-2043	68.73

सूर्य अन्तर

(22:02:2043 To 23:04:2044)

सूर्य	17-03-2043	69.18
चन्द्रमा	15-05-2043	69.25
मंगल	16-06-2043	69.41
बुध	22-08-2043	69.49
शनि	30-09-2043	69.68
गुरू	14-12-2043	69.79
राहु	31-01-2044	69.99
शुक्र	23-04-2044	70.12

चन्द्रमा अन्तर

(23:04:2044 To 24:03:2047)

चन्द्रमा	18-09-2044	70.35
मंगल	06-12-2044	70.75
बुध	23-05-2045	70.97
शनि	29-08-2045	71.43
गुरू	05-03-2046	71.70
राहु	01-07-2046	72.21
शुक्र	24-01-2047	72.54
सूर्य	24-03-2047	73.10

मंगल अन्तर

(24:03:2047 To 13:10:2048)

मंगल	05-05-2047	73.26
बुध	02-08-2047	73.38
शनि	24-09-2047	73.62
गुरू	02-01-2048	73.77
राहु	05-03-2048	74.04
शुक्र	24-06-2048	74.21
सूर्य	26-07-2048	74.52
चन्द्रमा	13-10-2048	74.60

बुध अन्तर

(13:10:2048 To 01:02:2052)

बुध	21-04-2049	74.82
शनि	10-08-2049	75.34
गुरू	11-03-2050	75.65
राहु	23-07-2050	76.23
शुक्र	14-03-2051	76.60
सूर्य	20-05-2051	77.24
चन्द्रमा	04-11-2051	77.42
मंगल	01-02-2052	77.88

शनि अन्तर

(01:02:2052 To 12:01:2054)

शनि	07-04-2052	78.13
गुरू	11-08-2052	78.31
राहु	29-10-2052	78.65
शुक्र	16-03-2053	78.86
सूर्य	24-04-2053	79.24
चन्द्रमा	01-08-2053	79.35
मंगल	22-09-2053	79.62
बुध	12-01-2054	79.76

गुरू अन्तर

(12:01:2054 To 23:09:2057)

गुरू	06-09-2054	80.07
राहु	03-02-2055	80.72
शुक्र	23-10-2055	81.13
सूर्य	06-01-2056	81.85
चन्द्रमा	12-07-2056	82.05
मंगल	20-10-2056	82.57
बुध	21-05-2057	82.84
शनि	23-09-2057	83.42

राहु अन्तर

(23:09:2057 To 22:01:2060)

राहु	26-12-2057	83.76
शुक्र	10-06-2058	84.02
सूर्य	27-07-2058	84.48
चन्द्रमा	22-11-2058	84.61
मंगल	24-01-2059	84.93
बुध	08-06-2059	85.10
शनि	25-08-2059	85.47
गुरू	22-01-2060	85.69

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(22:01:2060 To 22:01:2066)

सूर्य अन्तर

(22:01:2060 To 23:05:2060)

सूर्य	29-01-2060	86.10
चन्द्रमा	15-02-2060	86.12
मंगल	24-02-2060	86.16
बुध	14-03-2060	86.19
शनि	26-03-2060	86.24
गुरू	16-04-2060	86.27
राहु	30-04-2060	86.33
शुक्र	23-05-2060	86.37

चन्द्रमा अन्तर

(23:05:2060 To 24:03:2061)

चन्द्रमा	05-07-2060	86.43
मंगल	27-07-2060	86.55
बुध	13-09-2060	86.61
शनि	11-10-2060	86.74
गुरू	04-12-2060	86.82
राहु	07-01-2061	86.96
शुक्र	07-03-2061	87.06
सूर्य	24-03-2061	87.22

मंगल अन्तर

(24:03:2061 To 02:09:2061)

मंगल	05-04-2061	87.26
बुध	01-05-2061	87.30
शनि	16-05-2061	87.37
गुरू	13-06-2061	87.41
राहु	01-07-2061	87.49
शुक्र	02-08-2061	87.54
सूर्य	11-08-2061	87.62
चन्द्रमा	02-09-2061	87.65

बुध अन्तर

(02:09:2061 To 13:08:2062)

बुध	27-10-2061	87.71
शनि	27-11-2061	87.86
गुरू	27-01-2062	87.94
राहु	06-03-2062	88.11
शुक्र	12-05-2062	88.22
सूर्य	01-06-2062	88.40
चन्द्रमा	18-07-2062	88.45
मंगल	13-08-2062	88.58

शनि अन्तर

(13:08:2062 To 04:03:2063)

शनि	01-09-2062	88.65
गुरू	06-10-2062	88.70
राहु	29-10-2062	88.80
शुक्र	07-12-2062	88.86
सूर्य	19-12-2062	88.97
चन्द्रमा	16-01-2063	89.00
मंगल	31-01-2063	89.08
बुध	04-03-2063	89.12

गुरू अन्तर

(04:03:2063 To 23:03:2064)

गुरू	11-05-2063	89.21
राहु	22-06-2063	89.39
शुक्र	05-09-2063	89.51
सूर्य	27-09-2063	89.72
चन्द्रमा	19-11-2063	89.78
मंगल	18-12-2063	89.92
बुध	16-02-2064	90.00
शनि	23-03-2064	90.17

राहु अन्तर

(23:03:2064 To 22:11:2064)

राहु	19-04-2064	90.26
शुक्र	06-06-2064	90.34
सूर्य	19-06-2064	90.47
चन्द्रमा	23-07-2064	90.51
मंगल	10-08-2064	90.60
बुध	18-09-2064	90.65
शनि	10-10-2064	90.75
गुरू	22-11-2064	90.81

शुक्र अन्तर

(22:11:2064 To 22:01:2066)

शुक्र	13-02-2065	90.93
सूर्य	09-03-2065	91.16
चन्द्रमा	07-05-2065	91.22
मंगल	08-06-2065	91.38
बुध	14-08-2065	91.47
शनि	22-09-2065	91.65
गुरू	06-12-2065	91.76
राहु	22-01-2066	91.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(22:01:2066 To 22:01:2081)

चन्द्रमा अन्तर

(22:01:2066 To 22:02:2068)

चन्द्रमा	08-05-2066	92.10
मंगल	03-07-2066	92.39
बुध	31-10-2066	92.54
शनि	09-01-2067	92.87
गुरू	23-05-2067	93.06
राहु	16-08-2067	93.43
शुक्र	10-01-2068	93.66
सूर्य	22-02-2068	94.07

मंगल अन्तर

(22:02:2068 To 03:04:2069)

मंगल	23-03-2068	94.18
बुध	26-05-2068	94.26
शनि	03-07-2068	94.44
गुरू	12-09-2068	94.54
राहु	27-10-2068	94.74
शुक्र	14-01-2069	94.86
सूर्य	06-02-2069	95.08
चन्द्रमा	03-04-2069	95.14

बुध अन्तर

(03:04:2069 To 13:08:2071)

बुध	17-08-2069	95.29
शनि	05-11-2069	95.66
गुरू	05-04-2070	95.88
राहु	10-07-2070	96.30
शुक्र	25-12-2070	96.56
सूर्य	10-02-2071	97.02
चन्द्रमा	10-06-2071	97.15
मंगल	13-08-2071	97.48

शनि अन्तर

(13:08:2071 To 02:01:2073)

शनि	29-09-2071	97.65
गुरू	27-12-2071	97.78
राहु	22-02-2072	98.03
शुक्र	30-05-2072	98.18
सूर्य	28-06-2072	98.45
चन्द्रमा	06-09-2072	98.53
मंगल	14-10-2072	98.72
बुध	02-01-2073	98.82

गुरू अन्तर

(02:01:2073 To 23:08:2075)

गुरू	20-06-2073	99.04
राहु	05-10-2073	99.51
शुक्र	11-04-2074	99.80
सूर्य	03-06-2074	100.31
चन्द्रमा	15-10-2074	100.46
मंगल	25-12-2074	100.83
बुध	26-05-2075	101.02
शनि	23-08-2075	101.44

राहु अन्तर

(23:08:2075 To 23:04:2077)

राहु	30-10-2075	101.68
शुक्र	25-02-2076	101.87
सूर्य	30-03-2076	102.19
चन्द्रमा	23-06-2076	102.28
मंगल	07-08-2076	102.51
बुध	11-11-2076	102.64
शनि	06-01-2077	102.90
गुरू	23-04-2077	103.05

शुक्र अन्तर

(23:04:2077 To 23:03:2080)

शुक्र	16-11-2077	103.35
सूर्य	15-01-2078	103.91
चन्द्रमा	11-06-2078	104.08
मंगल	29-08-2078	104.48
बुध	13-02-2079	104.70
शनि	22-05-2079	105.16
गुरू	26-11-2079	105.43
राहु	23-03-2080	105.94

सूर्य अन्तर

(23:03:2080 To 22:01:2081)

सूर्य	09-04-2080	106.26
चन्द्रमा	22-05-2080	106.31
मंगल	13-06-2080	106.43
बुध	31-07-2080	106.49
शनि	28-08-2080	106.62
गुरू	21-10-2080	106.70
राहु	24-11-2080	106.84
शुक्र	22-01-2081	106.94

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व0 4 मा0 21 दि0

संकटा (राहु) (हस्ता) दशा

18:12:1973 To 09:05:1978

प्रोफेक्शन प्वाइंट	051:11:32
संकटा (राहु)	09:05:1970
मंगला (चन्द्र)	17:02:1972
पिंगला (सुर्य)	08:05:1972
धन्या (गुरू)	18:10:1972
भ्रमरी (मंगल)	19:06:1973
भद्रिका (बुध)	09:05:1974
उल्का (शनि)	19:06:1975
सिद्धा (शुक्र)	18:10:1976

मंगला (चन्द्र) (चित्रा) दशा

09:05:1978 To 09:05:1979

प्रोफेक्शन प्वाइंट	170:43:15
मंगला (चन्द्र)	09:05:1978
पिंगला (सुर्य)	19:05:1978
धन्या (गुरू)	09:06:1978
भ्रमरी (मंगल)	09:07:1978
भद्रिका (बुध)	19:08:1978
उल्का (शनि)	08:10:1978
सिद्धा (शुक्र)	08:12:1978
संकटा (राहु)	17:02:1979

पिंगला (सुर्य) (स्वाति) दशा

09:05:1979 To 09:05:1981

प्रोफेक्शन प्वाइंट	127:26:24
पिंगला (सुर्य)	09:05:1979
धन्या (गुरू)	19:06:1979
भ्रमरी (मंगल)	19:08:1979
भद्रिका (बुध)	08:11:1979
उल्का (शनि)	17:02:1980
सिद्धा (शुक्र)	18:06:1980
संकटा (राहु)	07:11:1980
मंगला (चन्द्र)	19:04:1981

धन्या (गुरू) (विशाखा) दशा

09:05:1981 To 08:05:1984

प्रोफेक्शन प्वाइंट	215:53:18
धन्या (गुरू)	09:05:1981
भ्रमरी (मंगल)	08:08:1981
भद्रिका (बुध)	08:12:1981
उल्का (शनि)	09:05:1982
सिद्धा (शुक्र)	08:11:1982
संकटा (राहु)	09:06:1983
मंगला (चन्द्र)	07:02:1984
पिंगला (सुर्य)	08:03:1984

भ्रमरी (मंगल) (अनुराधा) दशा

08:05:1984 To 08:05:1988

प्रोफेक्शन प्वाइंट	072:54:51
भ्रमरी (मंगल)	08:05:1984
भद्रिका (बुध)	18:10:1984
उल्का (शनि)	09:05:1985
सिद्धा (शुक्र)	07:01:1986
संकटा (राहु)	18:10:1986
मंगला (चन्द्र)	08:09:1987
पिंगला (सुर्य)	18:10:1987
धन्या (गुरू)	07:01:1988

भद्रिका (बुध) (ज्येष्ठा) दशा

08:05:1988 To 09:05:1993

प्रोफेक्शन प्वाइंट	099:42:48
भद्रिका (बुध)	08:05:1988
उल्का (शनि)	18:01:1989
सिद्धा (शुक्र)	18:11:1989
संकटा (राहु)	08:11:1990
मंगला (चन्द्र)	18:12:1991
पिंगला (सुर्य)	07:02:1992
धन्या (गुरू)	19:05:1992
भ्रमरी (मंगल)	18:10:1992

उल्का (शनि) (मूला) दशा

09:05:1993 To 09:05:1999

प्रोफेक्शन प्वाइंट	133:23:08
उल्का (शनि)	09:05:1993
सिद्धा (शुक्र)	09:05:1994
संकटा (राहु)	09:07:1995
मंगला (चन्द्र)	07:11:1996
पिंगला (सुर्य)	07:01:1997
धन्या (गुरू)	09:05:1997
भ्रमरी (मंगल)	08:11:1997
भद्रिका (बुध)	09:07:1998

सिद्धा (शुक्र) (पूर्वाषाढ़) दशा

09:05:1999 To 09:05:2006

प्रोफेक्शन प्वाइंट	206:00:33
सिद्धा (शुक्र)	09:05:1999
संकटा (राहु)	18:09:2000
मंगला (चन्द्र)	09:04:2002
पिंगला (सुर्य)	19:06:2002
धन्या (गुरू)	08:11:2002
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2003
भद्रिका (बुध)	19:03:2004
उल्का (शनि)	09:03:2005

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व0 4 मा0 21 दि0

संकटा (राहु) (उत्तराषाढ़) दशा

09:05:2006 To 09:05:2014

प्रोफेक्शन प्वाइंट	127:26:24
संकटा (राहु)	09:05:2006
मंगला (चन्द्र)	17:02:2008
पिंगला (सुर्य)	08:05:2008
धन्या (गुरू)	18:10:2008
भ्रमरी (मंगल)	19:06:2009
भद्रिका (बुध)	09:05:2010
उल्का (शनि)	19:06:2011
सिद्धा (शुक्र)	18:10:2012

मंगला (चन्द्र) (श्रवण) दशा

09:05:2014 To 09:05:2015

प्रोफेक्शन प्वाइंट	332:01:54
मंगला (चन्द्र)	09:05:2014
पिंगला (सुर्य)	19:05:2014
धन्या (गुरू)	09:06:2014
भ्रमरी (मंगल)	09:07:2014
भद्रिका (बुध)	19:08:2014
उल्का (शनि)	08:10:2014
सिद्धा (शुक्र)	08:12:2014
संकटा (राहु)	17:02:2015

पिंगला (सुर्य) (धनिष्ठा) दशा

09:05:2015 To 09:05:2017

प्रोफेक्शन प्वाइंट	246:58:07
पिंगला (सुर्य)	09:05:2015
धन्या (गुरू)	19:06:2015
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2015
भद्रिका (बुध)	08:11:2015
उल्का (शनि)	17:02:2016
सिद्धा (शुक्र)	18:06:2016
संकटा (राहु)	07:11:2016
मंगला (चन्द्र)	19:04:2017

धन्या (गुरू) (शतभिषा) दशा

09:05:2017 To 08:05:2020

प्रोफेक्शन प्वाइंट	173:07:14
धन्या (गुरू)	09:05:2017
भ्रमरी (मंगल)	08:08:2017
भद्रिका (बुध)	08:12:2017
उल्का (शनि)	09:05:2018
सिद्धा (शुक्र)	08:11:2018
संकटा (राहु)	09:06:2019
मंगला (चन्द्र)	07:02:2020
पिंगला (सुर्य)	08:03:2020

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा

08:05:2020 To 08:05:2024

प्रोफेक्शन प्वाइंट	292:38:57
भ्रमरी (मंगल)	08:05:2020
भद्रिका (बुध)	18:10:2020
उल्का (शनि)	09:05:2021
सिद्धा (शुक्र)	07:01:2022
संकटा (राहु)	18:10:2022
मंगला (चन्द्र)	08:09:2023
पिंगला (सुर्य)	18:10:2023
धन्या (गुरू)	07:01:2024

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा

08:05:2024 To 09:05:2029

प्रोफेक्शन प्वाइंट	298:03:58
भद्रिका (बुध)	08:05:2024
उल्का (शनि)	18:01:2025
सिद्धा (शुक्र)	18:11:2025
संकटा (राहु)	08:11:2026
मंगला (चन्द्र)	18:12:2027
पिंगला (सुर्य)	07:02:2028
धन्या (गुरू)	19:05:2028
भ्रमरी (मंगल)	18:10:2028

उल्का (शनि) (रेवती) दशा

09:05:2029 To 09:05:2035

प्रोफेक्शन प्वाइंट	298:03:58
उल्का (शनि)	09:05:2029
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2030
संकटा (राहु)	09:07:2031
मंगला (चन्द्र)	07:11:2032
पिंगला (सुर्य)	07:01:2033
धन्या (गुरू)	09:05:2033
भ्रमरी (मंगल)	08:11:2033
भद्रिका (बुध)	09:07:2034

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा

09:05:2035 To 09:05:2042

प्रोफेक्शन प्वाइंट	348:10:51
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2035
संकटा (राहु)	18:09:2036
मंगला (चन्द्र)	09:04:2038
पिंगला (सुर्य)	19:06:2038
धन्या (गुरू)	08:11:2038
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2039
भद्रिका (बुध)	19:03:2040
उल्का (शनि)	09:03:2041

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व0 4 मा0 21 दि0

संकटा (राहु) (भरणी) दशा

09:05:2042 To 09:05:2050

प्रोफेक्शन प्वाइंट	168:10:51
संकटा (राहु)	09:05:2042
मंगला (चन्द्र)	17:02:2044
पिंगला (सुर्य)	08:05:2044
धन्या (गुरू)	18:10:2044
भ्रमरी (मंगल)	19:06:2045
भद्रिका (बुध)	09:05:2046
उल्का (शनि)	19:06:2047
सिद्धा (शुक्र)	18:10:2048

मंगला (चन्द्र) (कृतिका) दशा

09:05:2050 To 09:05:2051

प्रोफेक्शन प्वाइंट	048:16:46
मंगला (चन्द्र)	09:05:2050
पिंगला (सुर्य)	19:05:2050
धन्या (गुरू)	09:06:2050
भ्रमरी (मंगल)	09:07:2050
भद्रिका (बुध)	19:08:2050
उल्का (शनि)	08:10:2050
सिद्धा (शुक्र)	08:12:2050
संकटा (राहु)	17:02:2051

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा

09:05:2051 To 09:05:2053

प्रोफेक्शन प्वाइंट	048:16:46
पिंगला (सुर्य)	09:05:2051
धन्या (गुरू)	19:06:2051
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2051
भद्रिका (बुध)	08:11:2051
उल्का (शनि)	17:02:2052
सिद्धा (शुक्र)	18:06:2052
संकटा (राहु)	07:11:2052
मंगला (चन्द्र)	19:04:2053

धन्या (गुरू) (मृगशिर) दशा

09:05:2053 To 08:05:2056

प्रोफेक्शन प्वाइंट	292:38:57
धन्या (गुरू)	09:05:2053
भ्रमरी (मंगल)	08:08:2053
भद्रिका (बुध)	08:12:2053
उल्का (शनि)	09:05:2054
सिद्धा (शुक्र)	08:11:2054
संकटा (राहु)	09:06:2055
मंगला (चन्द्र)	07:02:2056
पिंगला (सुर्य)	08:03:2056

भ्रमरी (मंगल) (अरिद्रा) दशा

08:05:2056 To 08:05:2060

प्रोफेक्शन प्वाइंट	249:52:53
भ्रमरी (मंगल)	08:05:2056
भद्रिका (बुध)	18:10:2056
उल्का (शनि)	09:05:2057
सिद्धा (शुक्र)	07:01:2058
संकटा (राहु)	18:10:2058
मंगला (चन्द्र)	08:09:2059
पिंगला (सुर्य)	18:10:2059
धन्या (गुरू)	07:01:2060

भद्रिका (बुध) (पुनर्वसु) दशा

08:05:2060 To 09:05:2065

प्रोफेक्शन प्वाइंट	157:48:03
भद्रिका (बुध)	08:05:2060
उल्का (शनि)	18:01:2061
सिद्धा (शुक्र)	18:11:2061
संकटा (राहु)	08:11:2062
मंगला (चन्द्र)	18:12:2063
पिंगला (सुर्य)	07:02:2064
धन्या (गुरू)	19:05:2064
भ्रमरी (मंगल)	18:10:2064

उल्का (शनि) (पुष्य) दशा

09:05:2065 To 09:05:2071

प्रोफेक्शन प्वाइंट	136:25:07
उल्का (शनि)	09:05:2065
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2066
संकटा (राहु)	09:07:2067
मंगला (चन्द्र)	07:11:2068
पिंगला (सुर्य)	07:01:2069
धन्या (गुरू)	09:05:2069
भ्रमरी (मंगल)	08:11:2069
भद्रिका (बुध)	09:07:2070

सिद्धा (शुक्र) (अश्लेषा) दशा

09:05:2071 To 09:05:2078

प्रोफेक्शन प्वाइंट	152:51:40
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2071
संकटा (राहु)	18:09:2072
मंगला (चन्द्र)	09:04:2074
पिंगला (सुर्य)	19:06:2074
धन्या (गुरू)	08:11:2074
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2075
भद्रिका (बुध)	19:03:2076
उल्का (शनि)	09:03:2077

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

शनि साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि है, जब शनि किसी व्यक्ति के ज्योतिषीय कुण्डली में जन्म के चंद्रमा (जन्म राशि) से 12वें, पहले और दूसरे घर में गोचर करता है। यह अवधि प्रायः जीवन की चुनौतियों, सीखने के अनुभवों और संभावित परिवर्तनों के माध्यम से विकास से संबद्ध होती है, लेकिन यह कठिनाइयाँ और परीक्षण भी ला सकती है जिन्हें व्यक्ति को धैर्य, अनुशासन और लचीलेपन के माध्यम से दूर करना होगा। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि साढ़े साती का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होता है और काफी हद तक उनकी व्यक्तिगत कर्म यात्रा पर निर्भर करता है।

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	07:09:1977	04:11:1979	2 y.1 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिहं	15:03:1980	27:07:1980	0 y.4 m.12 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	04:11:1979	15:03:1980	0 y.4 m.10 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	27:07:1980	06:10:1982	2 y.2 m.10 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	06:10:1982	21:12:1984	2 y.2 m.15 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	01:06:1985	17:09:1985	0 y.3 m.17 d.	
कंटक शनि	धनु	17:12:1987	21:03:1990	2 y.3 m.3 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	20:06:1990	15:12:1990	0 y.5 m.26 d.	
अष्टम शनि	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	01:11:2006	10:01:2007	0 y.2 m.9 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिहं	16:07:2007	10:09:2009	2 y.1 m.25 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	10:09:2009	15:11:2011	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	16:05:2012	04:08:2012	0 y.2 m.19 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	
कंटक शनि	धनु	26:01:2017	21:06:2017	0 y.4 m.24 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	26:10:2017	24:01:2020	2 y.2 m.29 d.	
अष्टम शनि	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	सिहं	27:08:2036	22:10:2038	2 y.1 m.25 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	सिहं	05:04:2039	13:07:2039	0 y.3 m.8 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	कन्या	22:10:2038	05:04:2039	0 y.5 m.13 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	कन्या	13:07:2039	28:01:2041	1 y.6 m.16 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	
कंटक शनि	धनु	08:12:2046	06:03:2049	2 y.2 m.27 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	धनु	10:07:2049	04:12:2049	0 y.4 m.25 d.	
अष्टम शनि	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)					

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक लाभकारी राजयोग

☿	**लग्नेश बुध**	**भाव संख्या – 3**
यह ग्रह स्थिति अनुकूलनशीलता और संवाद कौशल पर जोर देती है, साथ ही अति आत्मविश्वास के कारण कभी-कभी असफलताएं भी देती है, फिर भी जातक की संसाधनशीलता चुनौतियों पर काबू पाने में सहायता करती है।		
☿	**दशमेश बुध**	**भाव संख्या – 3**
यह ग्रह स्थिति जातक के पेशेवर जीवन में अनुकूलनशीलता और संवाद कौशल पर जोर देता है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में सफलता मिलती है और कार्यस्थल में प्रभावी ढंग से नेटवर्क बनाने और विचारों को व्यक्त करने की क्षमता मिलती है।		
♃	**सप्तमेश गुरू**	**भाव संख्या – 5**
यह योग रिश्तों, प्रेम और विवाह में सफलता और खुशी का संकेत देता है, प्रायः रचनात्मकता और बुद्धिमत्ता में एक मजबूत आधार के साथ।		
♄	**पंचमेश शनि**	**भाव संख्या – 10**
यह योग रचनात्मकता, बुद्धिमत्ता और प्रभावी निर्णय लेने के कारण पेशेवर क्षेत्र में सफलता और मान्यता प्राप्त होने का संकेत देता है।		
♃	**चतुर्थेश गुरू**	**भाव संख्या – 5**
यह ग्रह स्थिति जातक की बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता के कारण शिक्षा, संपत्ति या परिवार से संबंधित मामलों में खुशी और सफलता का संकेत देती है।		

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक अशुभ योग

♂	**तृतियेश मंगल**	**भाव संख्या – 8**
यह योग जातक के संवाद, भाई–बहनों या छोटी यात्राओं में संभावित असफलताओं या बाधाओं को दर्शाता है, जो प्रायः आकस्मिक परिवर्तन या रूपान्तरण से संबंधित होता है।		
☿	**लग्नेश बुध**	**भाव संख्या – 3**
यह योग आत्मविश्वास, साहस या निर्णय लेने से संबंधित संभावित कठिनाइयों का संकेत देता है, जो जातक के समग्र कल्याण को प्रभावित कर सकता है।		
♄	**षष्ठेश शनि**	**भाव संख्या – 10**
यह ग्रह स्थिति संघर्ष, स्वास्थ्य समस्याओं या ऋण के कारण जातक के पेशेवर जीवन या सामाजिक स्थिति में संभावित असफलताओं या बाधाओं को दर्शाती है।		

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 1

सूर्य ग्रहण योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में सूर्य की राहु या केतु के साथ युति होती है।

सूर्य ग्रहण योग	**सूर्य राहु के साथ**	1. व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों में समस्याएं, 2. कैरियर के विकास या पेशेवर जीवन में बाधाएं, 3. स्वास्थ्य समस्याएं, विशेष रूप से हृदय, आंखों या रक्त परिसंचरण से संबंधित, 4. प्रतिष्ठा या सामाजिक स्थिति की हानि, 5. एक स्थिर आय बनाए रखने में कठिनाइयां 6. अहंकारी या हावी होने वाला व्यवहार विकसित करने की प्रवृत्ति।	**सूर्य और राहु का उपाय करें**

चंद्र ग्रहण योग तब बनता है जब चंद्रमा (चंद्र) की जन्म कुंडली में राहु या केतु के साथ युति होती है।

चन्द्र ग्रहण योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

नज़र योग (कमजोर चंद्र दोष) तब लागू होता है जब जन्म कुंडली में चंद्रमा 6वें, 8वें या 12वें घर में हो।

नज़र योग (कमजोर चन्द्र)	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

दुर्योग तब होता है जब 10वें भाव का स्वामी 6वें, 8वें या 12वें भाव में स्थित हो।

दुर्योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

दैन्य योग तब होता है जब केंद्र भाव (1, 4, 7, या 10वें) का स्वामी 6, 8, या 12वें भाव में स्थित हो।

दैन्य योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 2

विष (विष्कुंभ) योग तब बनता है जब किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में चंद्रमा शनि के साथ युत होता है।

विष (विषकुम्भ) योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

श्रापित योग, तब बनता है जब शनि (शनि) राहु या केतु के साथ युत हो।

श्रापित योग	**शनि केतु के साथ**	1. व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में बाधाएँ और देरी, 2. रिश्तों और पारिवारिक जीवन में परेशानी, 3. वित्तीय चुनौतियाँ और अस्थिरता, 4. स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां, विशेष रूप से तंत्रिका तंत्र या हड्डियों से संबंधित, 5. कानूनी समस्याएं या विवाद, 6. भय, चिंता या अवसाद का अनुभव करने की प्रवृत्ति।	**केतु और शनि का उपाय करें**

अंगारक योग तब बनता है जब मंगल शनि, राहु या केतु के साथ युत हो।

अंगारक योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

गुरु चांडाल योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में बृहस्पति (गुरु) की राहु के साथ युति होती है।

गुरू चांडाल योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

कमजोर शुक्र योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में शुक्र शनि, राहु या केतु के साथ होता है।

कमजोर शुक्र योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

लग्न दर्शन – कन्या

कन्या राशि, राशि चक्र की छठी राशि है, इस राशि का स्वामी बुध है। इस राशि में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के दूसरे, तीसरे तथा चौथे चरण, हस्त नक्षत्र तथा चित्रा नक्षत्र के पहले व दूसरे चरण आते हैं। इस लग्न में जन्म होने से आप मध्यम कद, गेहुँए रंग, तथा सामान्य शारीरिक बनावट वाले व्यक्ति होंगे। आप अधिक बलिष्ठ नहीं होंगे, किन्तु आपका व्यक्तित्व सम्मोहक रहेगा।

आपका स्वास्थ्य प्रायः कमजोर रहेगा, जिस कारण फेफड़े के रोग, सूजन, पेट सम्बन्धी रोग, सर्दी–जुखाम, बुख़ार, कफ सम्बन्धी बीमारियाँ आदि रोग आपको कष्ट पहुँचा सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी और आपकी अध्ययन में रुचि रहेगी तथा आप उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे, साथ ही आप में कलाकारों की सी प्रवृत्तियाँ भी रहेंगी और आप अपनी सजावट की ओर विशेष ध्यान रखेंगे तथा बातचीत करने में भी आप कुशल रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन प्रायः सुखी रहेगा और सन्तान की ओर से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

आप हँसमुख, चतुर तथा मित्र बनाने में कुशल होंगे, आप भावना प्रधान व्यक्ति होंगे। आप में मनुष्य को परखने की शक्ति विद्यमान रहेगी। आप अपने सिद्धान्तों को सर्वोपरी समझेंगे तथा आप चाहेंगे कि दूसरे भी उन सिद्धान्तों का अनुसरण करें और हिंसा तथा युद्ध जैसे कार्यों से आप दूर रहना पसन्द करेंगे। क्रोध आपको शीघ्र नहीं आयेगा, परन्तु क्रोधित होने पर आप शान्त भी देर से ही होंगे, लकिन क्रोध शान्त होने पर आप सम्बंन्धित व्यक्ति से खेद भी प्रकट करेंगे। आप में भावुकता, स्नेह, लज्जा, ईमानदारी, आदि गुण पर्याप्त मात्रा में होंगे। दृढ़ता की कमी तथा हीन भावना जैसे अवगुणों पर आप काबू पा सकेंगे। आप शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम करना अधिक पसन्द करेंगे। आप कलाकार, मनोवैज्ञानिक, डॉक्टर, कम्पाउन्डर, अध्यापक, लेखक, सम्पादक आदि बनेंगे। यदि आपकी राजनीति में रुचि रहेगी तो आपको उसमें सामान्य सफलता ही प्राप्त हो पायेगी।

आपका जन्म कन्या लग्न में 26 अंश 40 कला से 30 अंश 00 कला तक होने से आप मध्यम कद, गेहुँए रंग तथा स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आप अधिक बलवान नहीं होंगे, किन्तु आपका व्यक्तित्व सम्मोहक रहेगा। आपका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा और आपको पेट सम्बन्धी रोग, सूजन, वातरोग, छाती के रोग आदि से कष्ट हो सकता है और शरीर में कमज़ोरी हो सकती है, इसके अलावा चिन्तनशील व्यक्तित्व होने से आप मानसिक रुप से भी पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी और कला, संगीत, नाटक, काव्य तथा साहित्य के प्रति आप में रुचि तथा तत्परता भी रहेगी। आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा तथा सन्तान सुख भी आपको प्राप्त होगा। आप कल्पना प्रिय व्यक्ति होंगे, न्यायप्रियता तथा करुणा आपके प्रधान गुण रहेंगे। आप में विचारशीलता तथा बुद्धिमत्ता बहुत रहेगी तथा नम्रता एवं लज्जा का गुण भी आप में होगा। आपको प्रायः क्रोध नहीं आयेगा, परन्तु क्रोध आने पर आप सरलता से शान्त भी नहीं हो पायेंगे।

आप पर्यटन में रुचि रखेंगे तथा उच्च शिक्षा, नौकरी या व्यवसाय के कारण आपके जीवन में विदेश यात्राएँ भी सम्भावित है और समाज में आप सम्मानीय स्थान रखेंगे। जीवन के पूर्वार्द्ध में आपकी आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी, किन्तु उत्तरार्द्ध में आप आर्थिक रूप से समृद्ध हो जायेंगे। आपकी निर्णय शक्ति तीव्र होने के कारण किसी भी कार्य में आ रही कठिनाइयों को दूर करने में आप समर्थ होंगे।

आप अपने परिश्रम से उन्नति करेंगे और प्रोफेसर, सम्पादक, प्रेस रिपोर्टर, बीमा एजेन्ट, लेखक, कलाकार तथा लिपिक के कार्य में आप अधिक सफल रहेंगे, साथ ही व्यापार के क्षेत्र में भी आप धीरे–धीरे प्रगति करेंगे।

नक्षत्र – पद का विवेचन

आप हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, नाड़ी आद्य, योनि महिष, वर्ण वैश्य तथा वर्ग मेष होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का प्रारम्भ 'ष' अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से दानशील पुरुष होंगे तथा यथा शक्ति जरूरतमंद लोगों को जीवन में दान देते रहेंगे। समाज में आप लोकप्रिय होंगे तथा आपकी ख्याति दूर–दूर तक व्याप्त रहेगी। समाज के सभी वर्गों के प्रति आपके मन में सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य जन भी आपको हार्दिक मान–सम्मान प्रदान करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अगााध श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनके पूजन एवं सत्कार में आप सदैव तत्पर रहेंगे। इसके साथ ही आप अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।

प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।

जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राहमणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पत्ति से सदैव युक्त रहता है।

आप सांसारिक तथा भौतिक भोग्य पदार्थों का अपने जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे तथा परलौकिक कर्मों के लिए दान पुण्य इत्यादि धार्मिक क्रियाकलापों को भी सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप इस लोक तथा परलोक दोनों जगह आनन्द की प्राप्ति करेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा आपकी बुद्धि भी अत्यन्त तीव्रता से युक्त रहेगी। फलतः बुद्धिचातुर्य से अपने सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। समाज के सभी वर्गों के परोपकार सम्बन्धी कार्यों में आप पूर्णतया समर्पित रहेंगे तथा तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप विपुल धन के स्वामी भी बनेंगे।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।

जातकपरिजातः

अर्थात् हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मों को करने वाला तथा धनवान होता है।

उत्साह से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा आपके समस्त कार्य उत्साहपूर्वक ही सम्पन्न होंगे। कभी–कभी आप मन से कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे।

उत्साही धृष्टः पानपोऽघृणी तस्करो हस्ते।

बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

अवसरानुकूल आप मिथ्याभाषण भी करेंगे। आपके स्वभाव से मदृता का आभास होगा। आप अपने समीपस्थ बन्धु बान्धवों से भी युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध रहेंगे।

असत्यवचनो घृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।

हसतो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।

मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा दाँत, नाक, कान तथा मुख मण्डल सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। स्त्रियों के लिए आपके मन में स्नेहाधिक्य रहेगा। आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा कई धार्मिक संस्थाओं के उच्च पदों पर आप आसीन रहेंगे। धर्म के प्रति आपमें विशेष श्रद्धा एवं आस्था का भाव रहेगा तथा यत्न से धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे। आप सर्वदा अपने भाषण में प्रिय एवं मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही सत्य एवं शुद्धता का आप विशेष रूप से ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। आप एक धैर्यवान पुरुष होंगे। फलतः सभी कार्यों को शीघ्रता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। परोपकारी वृत्ति भी आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा इस वृत्ति का आप पालन करते रहेंगे। साथ ही समस्त जीव तथा प्राणियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। देखने में आपका सौन्दर्यशाली रूप सभी को आकर्षित करेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन सुख एवं वैभव से सम्पन्न होगा लेकिन संतति संख्या में कन्याओं की संख्या अधिक त ा पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारूदन्ताक्षिणिकर्णो।

विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।

धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।

कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।

सारावली

अर्थात् कन्याराशि में उत्पन्न जातक स्त्री में अनुरक्त, लम्बे हाथों वाला, सुन्दर मुख, दाँत, कान व नाक वाला, पंडित, आचार्य (अध्यक्ष), धर्मात्मा, प्रियवक्ता सत्य व शुद्धता से श्रेष्ठ धैर्यवान प्राणियों पर दया करने वाला, परोपकारी, सुन्दर, ऐश्वर्य से युक्त अधिक कन्या एवं अल्प पुत्रों वाला होता है।

आप लज्जा तथा आलस्यमय दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगे। आपके कंधे तथा भुजाएँ भी शिथिलता से युक्त होंगी। आप समस्त प्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक अपने जीवन काल में उपभोग

करेंगे तथा नाना प्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों के तत्व ज्ञान को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। सभी वर्गों के प्रति कार्य करने की इच्छा का आप में बाहुल्य रहेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य मित्र या सम्बन्धी के घर एवं धन का उपयोग करने वाले भी होंगे तथा विदेश जाने की इच्छा भी आपमें निरन्तर बनी रहेगी।

व्रीडामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।

श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।

मेघावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।

कन्यायां परदेशगः प्रियवच– कन्याप्रजोऽल्पात्मजः।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् कन्याराशि का जातक लज्जा और आलस्य युक्त शोभन दृष्टि से गमनशील, शिथिलबाहु और कन्धेवाला, सुखी कोमल शरीर युक्त, सत्यवक्ता कलाविद्या में निपुण, शास्त्र तत्वार्थ ज्ञाता, धर्माचरणरत, बुद्धिमान, स्त्रीरतिप्रिय, अन्य के घर तथा धन से युक्त, परदेश प्रिय, प्रियवक्ता, अधिक संख्यक कन्या तथा अल्प संख्यक पुत्रों वाला होता है।

आप स्त्री जाति को अपनी हास्य एवं विलासी क्रियाओं एवं मुद्राओं के द्वारा प्रसन्न करने तथा अपनी ओर आकर्षित करने की कला में अत्यन्त निपुण होंगे। आपका स्वभाव छल कपट विहीन तथा चाल–चलन उत्तम होगा। आप हमेशा अच्छे कार्यों को करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। पापकर्मों में आप की कोई भी अभिरुचि नहीं होगी। साथ ही आप एक सौभाग्यशाली पुरुष होंगे तथा अपने जीवन के अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को भाग्यबल से ही सम्पन्न करेंगे।

यवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।

विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।

जातकाभरणम्

अर्थात् कन्या राशि का जातक अपने हास–परिहास पूर्ण क्रियाओं से स्त्रियों को प्रसन्न रखने वाला, विनयशील अधिक सन्तति युक्त, सत्कार्यकर्ता तथा भाग्यवान होता है।

आपकी बुद्धि छल से विहीन निर्मल रहेगी तथा लेखन कार्य के प्रति आप हमेशा रूचिशील रहेंगे। आपका स्वभाव शान्त होगा परन्तु कभी–कभी आपको नेत्र कष्टों से पीड़ित रहना पड़ेगा साथ ही आप गुरुजनों के हित कार्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।

कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।

भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।

गुरुजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।

जातकदीपिका

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक निर्मल बुद्धिवाला, सुशील लेखन कार्य में बुद्धि लगाने वाला, कवि, कृषि बल को बढ़ाने वाले गुणों से युक्त, क्षमाशील, नेत्र रोगी धार्मिक, शील स्वभाव वाला तथा गुरुजनों का हितकारी होता है।

आप विलासमय प्रवृति से युक्त रहेंगे तथा समस्त भौतिक एवं विलासमयी वस्तुओं पर खुले हाथ से व्यय करेंगे तथा जीवन में आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप भद्र पुरुषों के प्रति अत्यन्त ही सम्मान का भाव अपने मन में रखेंगे तथा ये लोग भी प्रायः आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप अपनी दानशील प्रवृति का प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा रहेगी तथा जीवन में इसका पालन करेंगे। समाज में आप एक लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। जिससे उचित मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। संगीत तथा अभिनय के प्रति आप पूर्णरूपेण समर्पित रहेंगे तथा आजीवन इनसे आप का गहन सम्बन्ध रहेगा। साथ ही आप प्रवासी भी होंगे।

विलासी सुजनाहलादी सुभगो धर्मपूरितः।

दातादक्षः कविर्बुद्धि देवमार्ग परायणः।।

सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।

प्रवासशीलः स्त्री दुःखी कन्याजातो भवेन्नरः।।

मानसागरी

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक विलासप्रिय, सज्जनों को आदर देकर प्रसन्न रखने वाला, सुन्दर, धर्मात्मा, दानी चतुर, कविता करने वाला, वैदिक रीति पर चलने वाला, सब लोगों से प्रेम करने वाला, नाटक और गान विद्या के व्यसन में रत रहने वाला, देशान्तर में निवास करने वाला तथा स्त्री के कारण दुःख प्राप्त करने वाला होता है।

आपका सम्पूर्ण जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा। कामभावना की आप में प्रबलता रहेगी। फलतः आप इससे यदा–कदा व्याकुलता का एहसास भी करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपके मन में सहानुभूति एवं सद्भावना विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त विविध शस्त्रों तथा कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।

जातकपरिजातः

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक कामवासना से व्याकुल रहने वाला, मृदु, सुन्दर ओर मनोहर वाणी से युक्त, अधिक विद्याओं को जानने वाला तथा सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथ मधुर होगी जो अन्य जनों को सुनने में

प्रिय लगेगी। आप सत्य के पालन में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप अत्यन्त ही सरल बुद्धि के स्वामी होंगे। आप अपने भावों को सादगी से प्रकट करेंगे तथा अन्य जनों के भावों को सादगी से ग्रहण करेंगे। आप शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के आप पूर्ण ज्ञाता होंगे तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों के द्वारा वर्णित गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे। आप सभी प्रकार की सम्पत्ति तथा धनैश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में कभी इनका अभाव महसूस नहीं करेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा स्वभाव से ही दानशील होंगे। सादगी आपको बहुत पसन्द होगी तथा जीवन को सादगी पूर्ण ढंग से व्यतीत करने में आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही अपने समाज में आप एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में पहचाने जायेंगे।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।

अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत्।।

मानसागरी

अर्थात् देवगण में पैदा हुआ मनुष्य सुन्दर, दानी, बुद्धिमान, सादगी पसन्द तथा महान विद्वान होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वाद–विवादों तथा लड़ाई–झगड़े के मामलों में सर्वथा विजयी रहेंगे। साथ ही शूरवीरता के लक्षणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं वीरता के साथ अपने कार्य–कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपकी सन्तति संख्या भी अधिक होगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा व्याप्त रहेगी तथा यत्नपूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।

वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।

मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तिथियाँ, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग, शनिवार प्रथम

प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5, 10, 15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग तथा कौलव करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनो तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

मंत्र – ऊँ ऐं स्त्री श्रीं बुधाय नमः।

विंशोत्तरी दशाफल

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

शनि दशा (13:06:2020 – 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह दशा बहुत उत्तम सिद्ध हो सकती है। आप धन, दैवीय ज्ञान, नाम और यश प्राप्त करेंगे। आप कई सम्माननीय पदों को प्राप्त करेंगे एवं एक बहुत ऊँचे पद तक जायेंगे। हालाँकि, आपकी समृद्धि स्थायी नहीं हो सकती है। आपको अपने माता–पिता की परवाह नहीं हो सकती है तथा आप उनसे दूर रह सकते हैं।

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में मिथुन राशि में स्थित है। शनि की अपनी दशा के दौरान, आप अपने जीवन में अलग तरीकों से आनन्द प्राप्त करेंगे। आप चोरी और महिलाओं के द्वारा धन प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप सेना में हैं, तो युद्ध में उल्लेखनीय साहस का प्रदर्शन करेंगे। आप सभी के प्रति उदार होंगे एवं परोपकारी काम करेंगे।

दशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, वाहन दुर्घटना, भौतिक सुख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शनि का व्रत रखें एवं शनि स्तोत्र का पाठ

करें।

2- नीलम, लोहा, तिल एवं सरसों का तेल दान करें।

3- शनि के बीज मंत्र का जप करें।

शनि अर्न्तदशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान आप मानसिक वेदना, परिवार को कष्ट, विभिन्न रोगों, आपके द्वारा पोषित चौपाया जानवरों को जहरीले प्रभाव का खतरों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है और आप अपने आपको ऐसी स्थिति में पा सकते हैं, जहां पर आप कोई निर्णय करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपको वात या कफ, आतों में दर्द, लकवा आदि रोगों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी भी आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं। आपको अनावश्यक रूप से यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आपको निचले स्तर के लोगों के बिना अधिकार के और अप्रत्याशित दुर्वचनों का सामना करना पड़ सकता है और ऐसे लोग आपको चोट भी पहुँचा सकते हैं। हालांकि आपको महिलाओं से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपकी उनके साथ संबंध बनाने की लालसा आपको अपमान और ब्लैकमेल का शिकार बना सकती है। मवेशियों की संख्या और कृषि से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कई लोगों को रोजगार देंगे और उनसे आय प्राप्त करेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या मान-सम्मान, नौकरी, परिवारजन, जीवनसाथी, कर्ज, धन-सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1- 21 शनिवार को सात बादाम एवं सात सौ ग्राम काली उड़द की दाल किसी धर्मस्थल में या मांगने वाले को दान दें।

2- महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

3- रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।

शनि प्रत्यंतर्दशा (13:06:2020 से 05:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि का बल चाहे जिस कोटि का हो, आपको कुछ अवसरीय आर्थिक लाभों के अलावा अन्य कोई शुभ परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको अधिक मानसिक वेदना और परिवार को कष्ट हो सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपको बुखार, वायु विकार या कफ और आंतों में दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:12:2020 से 09:05:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों से राहत मिल सकती है। आपकी स्थिति और वातावरण में धीरे-धीरे सुधार

होगा। अपने मित्रों से आपको लाभ होगा। जीवनसाथी और संतानों से आपको पूर्ण सुख मिलेगा। आपकी कुछ अतिरिक्त आय होगी। आपकी संतान को पढ़ाई में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (09:05:2021 से 12:07:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने मित्रों और संबंधियों से ही नहीं, अपितु साहुकारों से भी धन उधार लेने पर बाध्य होना पड़ सकता है। कर्ज चुका पाने में सक्षम नहीं हो सकने के कारण आपको किसी अन्य अन्तर्दशा के दौरान उचित समय पर कर्जदाता न्यायालय में घसीट सकते हैं। यदि साढ़े साती या कंटक शनि की दशा चल रही है, तो आपको अपनी रोजमर्रा की आजीविका के लिए भिक्षा मांगनी पड़ सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (12:07:2021 से 11:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शनि और शुक्र की प्रकृति चाहे जो कुछ भी हो, आपको पिछली कुछ दशाओं से बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। आप कुछ नयी व्यापारिक गतिविधियां शुरू कर सकते हैं, जिसमें आपको उचित लाभ मिलेगा। आप विदेश सहित दूरस्थ स्थानों की प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (11:01:2022 से 07:03:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक खतरनाक दशा हो सकती है। आपके आस–पास के लोग आपके लिए गंभीर समस्यायें पैदा कर सकते हैं। आपके पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। संतान को भी कष्ट हो सकता है। चिकित्सकीय खर्च बढ़ सकते हैं। आप कर्जदार हो सकते हैं। आपको शिव स्त्रोत का नित्य जाप करना चाहिए, ताकि आपको कष्टों से थोड़ी राहत मिल सके।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (07:03:2022 से 07:06:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप बहुत अनुकूल परिणामों की आशा नहीं कर सकते हैं। मित्र आप से ऐसे विमुख हो सकते हैं– जैसे वे आपकी परेशानियों के बारे में जानते ही नहीं हैं। जीवन की वेदना को सहन करने में असक्षम होने के कारण आप आत्महत्या के बारे में सोच सकते हैं। यह एक पूर्ण मानसिक अवसाद की दशा हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (07:06:2022 से 10:08:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको आग और वाहनों से सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आपके जलने या दुर्घटना में चोट लगने की संभावना है। शत्रु आपकी संपत्ति को हड़पने की कोशिश कर सकते हैं। सम्पत्ति विवाद हो सकते हैं और फिलहाल आपको उनमें हार का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:08:2022 से 21:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अवसाद की दशा जारी रह सकती है। आपको कष्टों से कोई राहत नहीं मिल सकती है। कर्जदाता अपने कर्ज की प्राप्ति के लिए न्यायालय में जा सकते हैं। कोई आपकी मदद करने को आगे नहीं आ सकता है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले रोगों और त्वचा विकार से ग्रसित हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (21:01:2023 से 17:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको थोड़ी राहत मिल सकती है। आप धीरे–धीरे आत्मनिर्भर होंगे। अप्रत्याशित क्षेत्रों से आपको धन का लाभ होगा। आपके द्वारा लिये गये ऋण का कुछ हिस्सा चुका देने के कारण कर्जदाता शांत रह सकते हैं।

बुध अर्न्तदशा (17:06:2023 से 24:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप व्यापारी हैं, तो पिछली अन्तर्दशा अर्थात शनि–शनि के दौरान आपको गंभीर आघात का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन अब समय आपको वह सब वापस करेगा, जो आपने खो दिया था। आप बिना किसी संशय के निवेश करके व्यापार को बढ़ा सकते हैं। आपको पूर्ण खुशी और आनन्द प्राप्त होगा। आप या तो नयी भूमि प्राप्त करेंगे या पैतृक सम्पत्ति और भूमि प्राप्त करेंगे। आपका दिमाग स्थिर रहेगा। मित्रों से आपको लाभ होगा। आपको जीवनसाथी और संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको विभिन्न समारोहों में शामिल होने के आमंत्रण मिलेंगे तथा सरकार का सहयोग एवं धन का लाभ मिलेगा। आप अपना खाली समय ज्ञानी लोगों की संगति में व्यतीत करेंगे। आपको विष्णु सहस्त्रनाम (भगवान विष्णु के 1000 नाम) का जप करना चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, नौकरी या व्यवसाय आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– बुध के बीज मंत्र का 17 दिनों में नौ हजार जप करें।
2– विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी या अन्न का दान करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (17:06:2023 से 03:11:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए कई अवसर प्राप्त होंगे। आपको रोजगार या व्यापार के प्रस्ताव एक के बाद एक स्वतः मिल सकते हैं। इस समय का आपको पूरा लाभ उठाना चाहिए।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:11:2023 से 30:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में लगातार सुधार होगा, लेकिन आपके साथ–साथ आपके माता–पिता, जीवनसाथी और संतान को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका व्यय बढ़ सकता है। यदि आपने व्यय में सावधानी नहीं बरती, तो अपनी बढ़ी हुई आय के बावजूद आपको अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने में परेशानी हो सकती है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:12:2023 से 11:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। विवाहित लोगों के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है– जैसाकि प्रायः आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है। हालाँकि आय में वृद्धि होगी, लेकिन मानसिक शांति में कमी आयेगी। आप ऐसा सोच सकते हैं, कि विवाह ना करना आपके लिए बेहतर होता। आपके माता–पिता और जीवनसाथी आपके जीवन में बहुत अधिक दखल दे सकते हैं और स्थिति को और खराब कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (11:06:2024 से 31:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी स्वयं की पहचान बनायेंगे और अधिकार एवं शक्ति का प्रयोग करेंगे। यदि आप बेरोजगार हैं, तो इस दशा के दौरान एक रोजगार प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपका व्यापार भी समृद्ध होगा। राजनीति से जुड़े लोगों को जनता के साथ तालमेल में सुधार होगा, लेकिन आपको किसी दुर्घटना और उससे चोट लगने का भय है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (31:07:2024 से 21:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक स्थिर दशा होगी। चंद्रमा और बुध आपके अधूरे कामों को मैत्रीपूर्ण ढंग से पूरा करने और नयी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने में मदद करेंगे, जो आपके लिए लाभदायक साबित होगा। शनि भी योजनाओं के चुनाव और एकत्रीकरण में मदद करेगा। यदि आप किसी स्टील या रसायन के संयत्र में रोजगार करेंगे या इन वस्तुओं का व्यापार करेंगे, तो आपके लिए बेहतर होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:10:2024 से 17:12:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा खराब नहीं हो सकती है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपका वरिष्ठों के साथ विवाद हो सकता है और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो उसे कार्यान्वित करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। मंगल से संबंधित व्यापार या रोजगार आपके लिए लाभदायक होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:12:2024 से 14:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आपको ऐसा प्रतीत होगा, कि जीवन बहुत सहज रूप से चल रहा है। हालाँकि, बीच–बीच में स्वास्थ्य संबंधी समस्यायें आ सकती हैं। यदि आप छात्र हैं, तो विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं में बैठने के लिए शुभ समय है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (14:05:2025 से 22:09:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। जहाँ तक सम्पूर्ण शनि दशा की बात है, तो यह एक पूरी तरह से बदली हुई दशा होगी। आपको एक नयी ऊँचाई प्राप्त होगी। आपके सभी कामों में आपको सफलता मिलेगी। आप जिनसे मदद मांगेंगे, लगभग वे सभी लोग आपकी मदद करेंगे। इस दशा के दौरान आप एक स्थिर जीवन की एक सुदृढ़ नींव रखेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (22:09:2025 से 24:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक छली दशा हो सकती है। आपने अब तक जो कुछ भी कमाया है, उसे सांसारिक सुखों की प्राप्ति में बर्बाद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान एक करोड़पति भी भिखारी बन सकता है। मित्र और संबंधी आपको धोखा दे सकते हैं। आपको अपने उद्देश्यों की कोई पूर्व जानकारी नहीं हो सकती है। जब तक आप उन्हें जानेंगे, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी, आप हानि उठाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा (24:02:2026 से 05:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनी सम्पत्ति को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। रात में बहुत सारे सपने देखने के कारण आपकी नींद खराब हो सकती है और आपको नींद में चलने की आदत हो सकती है। वायु या आग के कारण आपकी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। रक्तविकार के कारण आपको रोग हो सकते हैं और आप गठिया से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भगवान श्रीकृष्ण की अराधना करने की सलाह दी जाती है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– आठ सौ ग्राम सफेद तिल एवं आठ सौ ग्राम काला तिल गंगा में प्रवाहित करें।

2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

3– काले कुत्ते की सेवा करें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:02:2026 से 20:03:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको इस दशा के दौरान मिले–जुले परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत होगी। कोई असामान्य घटना नहीं होगी। आपकी अधिकतर गतिविधियों सामयिक होंगी। आप पूरी तरह से तनाव रहित होंगे। आप कार्य के प्रति ना तो सुस्त होंगे और ना ही बहुत उत्साही होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:03:2026 से 26:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने दैनिक कार्यों में सक्रिय होंगे। अपनी पुरानी गतिविधियां समेकित करने के लिए यह अनुकूल समय है। विदेश सहित किसी दूरस्थ स्थान से आपको शुभ समाचार मिल सकता है। आपको विदेश यात्रा पर जाने या वहाँ पर रोजगार का अवसर मिल सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (26:05:2026 से 15:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको विदेशी मूल के लोगों के द्वारा पैदा की गयी विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका रोजगार समाप्त हो सकता है या उसके खोने का आपको भय हो सकता है। राजनीति में आपको असफलता का सामना करना पड़ सकता है। आपके गुप्त शत्रु आपको तबाह करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको तीव्र सिरदर्द और बुखार हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:06:2026 से 19:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अशुभ प्रभावों से आपको थोड़ी राहत मिलेगी। हालाँकि, किसी ना किसी कारण से आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। वरिष्ठों और अधीनस्थों के साथ आपका विवाद हो सकता है। सुदूर स्थानों की आप यात्रा करेंगे– विशेषकर दक्षिण दिशा में।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (19:07:2026 से 12:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस अशुभ दशा को आप कभी भूल नहीं सकते हैं। आप जीवन के अकथित दुखों का सामना कर सकते हैं। यदि आप विवाह के योग्य हैं, तो इस दशा के दौरान विवाह करना आपके लिए बेहतर होगा। भाइयों और संतानों को हानि हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (12:08:2026 से 11:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। पिछली दशा में जो परेशानी सामने आने से रह गयी थीं, वे अब आपके सामने आ सकती हैं। मित्रों और संबंधियों के साथ अप्रत्याशित रूप से विवाद हो सकते हैं। आपको कुछ असाध्य रोग हो सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं, तो जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:10:2026 से 04:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अस्थायी रूप से यह एक उत्तम दशा होगी। आप पिछली दशा में जो कुछ करने में असक्षम रहे हैं, उसे इस दशा में पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए– जैसाकि इस दशा में कुछ सफलता निश्चित है। यदि आप परीक्षा में बैठ रहे हैं, तो आप अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। मित्र और संबंधी तन, मन और धन तीनों से मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (04:12:2026 से 06:02:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको मिले–जुले परिणाम मिलेंगे। यदि शनि बली है, तो आपको शुभ परिणाम जैसे सभी कामों में सफलता, सरकार से समर्थन, मुकदमों में सफलता और रोगों से राहत आदि मिलेंगी। यदि केतु बली है, तो आपका अपने जीवनसाथी और संतान से झगड़ा हो सकता है और आपको एकाकी जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (06:02:2027 से 05:04:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा पुर्नप्राप्ति और पुनर्स्थापना की होगी। आपको इस दशा का लाभ अवश्य उठाना चाहिए। आप लम्बी अवधि की पूंजियों में निवेश करने के लिए सोच सकते हैं। निवेशों से भी आपको उचित

लाभ मिल सकता है। हालाँकि, इस दशा के दौरान आपके और नजदीकी संबंधियों के बीच सम्पत्ति के मामलों में विवाद हो सकते हैं।

शुक्र अन्तर्दशा (05:04:2027 से 05:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्य रूप से यह एक शुभ दशा होगी। आपको विभिन्न तरीकों से लाभ मिलेगा। आपको नये अवसरों का लाभ उठाना होगा। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी। आप नये घर का निर्माण करेंगे। शुभ परिणामों में सुधार के लिए और अशुभ परिणामों को समाप्त करने के लिए, यदि कोई हो, तो देवी दुर्गा का स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, आँख, नौकरी, मान–सम्मान, भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शुक्र के बीज मंत्र का सोलह हजार जप करें।

2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।

3– सफेद गाय या भैंस का दान करें।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:04:2027 से 14:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक लाभकारी दशा होगी। इस दशा के दौरान आप अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करेंगे। आपको महिलाओं से लाभ मिलेगा और साथ ही उनमें से कुछ आपकी मानसिक शांति को बाधित कर सकती हैं। यदि आप ऐसी स्थिति से निपटने के लिए स्वयं को तैयार रखेंगे, तो आप बिना परेशानियों के उससे बाहर निकल आयेंगे। आपको शारीरिक सुख प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (14:10:2027 से 11:12:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन प्राप्ति के स्रोत बढ़ेंगे। अधिकतर मामलों में आय व्यय से अधिक होगी। हालाँकि, आपकी खर्चीली जीवनशैली के कारण बचत नहीं हो सकती है। आपको सरकारी अधिकारियों से समर्थन मिलेगा या उनके उपर आपका नियंत्रण होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (11:12:2027 से 17:03:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी बहन को मृत्युतुल्य शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी उत्तम नहीं हो सकता है। चिकित्सकीय खर्चे बढ़ सकते हैं। रोगों से किसी प्रकार की राहत न पा सकने के कारण आप और आपका परिवार आध्यात्म का अनुसरण कर सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (17:03:2028 से 23:05:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता और बहन का स्वास्थ्य क्षीण हो सकता है। आपको बुखार और शरीर में दर्द हो सकता है। आपके जीवनसाथी के साथ आपका बेतुकी बातों पर झगड़ा हो सकता है। आपका तलाक या कुछ समय के लिए शारीरिक अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (23:05:2028 से 13:11:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आपकी आय चिकित्सकीय उपचार और शारीरिक सुखों की प्राप्ति में व्यय हो सकती है। शुक्र और राहु से संबंधित वस्तुओं में आपको लाभ होगा। आपकी माता या बहन के स्वास्थ्य में इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में सुधार होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (13:11:2028 से 16:04:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। कोई अशुभ घटना नहीं होगी। यह दशा समृद्धि, उद्देश्यों की प्राप्ति और सभी प्रकार के सुख प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:04:2029 से 16:10:2029)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान जो आर्थिक सुधार शुरू हुए थे, वे इस दशा के दौरान स्थिर हो जायेंगे। आपको विदेश यात्रा या वहाँ पर रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। सभी रोगों से आपको बहुत राहत मिलेगी। शनि से संबंधित चीजों के व्यापार में आपको उत्तम लाभ प्राप्त होगा।

बुध प्रत्यंतर्दशा (16:10:2029 से 29:03:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, लेकिन आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। महिलाओं के मामले में अधिक संलग्नता आपको अपूर्णिय क्षति करवा सकती है। विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय आपको सावधान रहना चाहिये– जैसाकि आपको उनसे धोखा मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (29:03:2030 से 05:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान आपने जो कुछ संचित किया था, इस दशा के दौरान वह सब छिन सकता है या खर्च हो सकता है। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो वरिष्ठ और अधीनस्थ आपको परेशान कर सकते हैं। शत्रु आपकी सफलता के मार्ग में रोड़ा बन सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (05:06:2030 से 17:05:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको पेट और आंतों से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपकी व्यावसायिक और व्यापारिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बाधायें आ सकती हैं। आपको धन की हानि हो सकती है और अपने अस्तित्वहीन होने का अहसास हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, मान–सम्मान, भाई–बन्धु, धन–सम्पत्ति, व्यापार आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– सूर्य के बीज मंत्र का सात हजार जप करें।
2– रविवार का व्रत रखें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
3– अरूणसहस्त्रनाम का पाठ करें।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:06:2030 से 22:06:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता या परिवार के बड़े पुरुषों का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपको इस समय पैतृक सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:06:2030 से 21:07:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको पैतृक या ननिहाल की सम्पत्ति विरासत में मिल सकती है। सम्पत्ति के मामलों में आपके नजदीकी संबंधियों के साथ प्रायः विवाद हो सकते हैं। रक्त की खराबी के कारण आपको रोग हो सकते हैं। साथ ही आपके दांतों में समस्या हो सकती है। आपके माता के स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:07:2030 से 10:08:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक पूर्ण निराशाजनक दशा होगी। आपके सभी विचार और योजनायें आपस में टकरा सकती हैं और आप अपनी दैनिक गतिविधियों को भी कर पाने में असक्षम हो सकते हैं। आपके हर कार्य में बाधा आ सकती है। आपके अपने पिता और सह–जन्मों के साथ विवाद हो सकते हैं और वे ऐसी स्थिति में पहुंच सकते हैं, कि आगे कोई समझौता नहीं होने की संभावना हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:08:2030 से 01:10:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के परिणाम आपकी जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति पर निर्भर करेंगे। आपकी आर्थिक और शारीरिक स्थिति का ह्रास हो सकता है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:10:2030 से 16:11:2030)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी अतिरिक्त आय हो सकती है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको धन प्राप्त होगा। यदि साढ़े साती नहीं चल रही है, तो आपको उत्तम परिणाम मिलेंगे। आप प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन में गहरी

रूचि लेंगे और अन्य ग्रहीय स्थिति के आधार पर आध्यात्मिक क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपके स्वास्थ्य को अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:11:2030 से 10:01:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि सूर्य बली नहीं है, तो यह एक बेहतर दशा होगी। यदि सूर्य बली है, तो परिवार के सदस्यों के बीच विवाद हो सकते हैं। अपके परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यय अधिक हो सकते हैं। पड़ोसी आपके शत्रु बन सकते हैं और परेशानियां पैदा कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (10:01:2031 से 28:02:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको तुफान के बीच से गुजरना पड़ सकता है। इस दशा के प्रारम्भिक कुछ दिनों में आपको अपने सभी कार्यों में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आपको लगेगा कि बाधायें एक के बाद एक दूर हो रही हैं और चीजें सहज होना शुरू हो गयीं हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (28:02:2031 से 21:03:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक पूर्ण निराशाजनक दशा होगी। आपने पिछली दशा के दौरान जो कुछ प्राप्त किया है, वह सब ठहर जायेगा। संतुलन कायम करने के लिए आपको कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है। शत्रु आपकी अवनति के लिए प्रयास कर सकते हैं। कर्जदार आपको परेशान कर सकते हैं। अपने कामों में असफलता से निराश होकर आप ईश्वर की शरण में जा सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (21:03:2031 से 17:05:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोयी हुई स्थिति और मानसिक शांति वापस प्राप्त होगी। महिलाओं से आपको मदद मिलेगी। हालाँकि, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपको महिलाओं से धोखा मिल सकता है।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (17:05:2031 से 16:12:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट, धन हानि, वायु विकार तथा आपके जीवनसाथी एवं माता–पिता को खतरा हो सकता है। कार्य या कामना पूर्ण होने को हो सकती है, मगर अचानक बाधायें आकर अवसरों को नष्ट कर सकती हैं। आपको किसी नये व्यापार का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए या अपने वर्तमान व्यवसाय को बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आपको इस अन्तर्दशा के दौरान देवी दुर्गा के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, धन हानि, संतान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ

फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– तिल से हवन करें तथा गुड़, घी, दही–चावल, सफेद गाय आदि का दान करें।
2– शिव की उपासना करें एवं शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें।
3– दुर्गा की पूजा करें।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:05:2031 से 05:07:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे। आपके सहोदरों का विवाह हो सकता है। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति प्राप्त होगी। हालाँकि यदि आप व्यापारी हैं और यदि आपके व्यापार का संबंध चंद्रमा या राहु की वस्तुओं से नहीं है, तो आपको लाभ प्राप्त नहीं हो सकता है। आप फेफड़े के रोगों और तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:07:2031 से 07:08:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रक्त की खराबी के कारण होने वाले विकारों, चिन्ता, कफ से ग्रसित हो सकते हैं। आग विद्युत और अन्य गर्म चीजों से आपको खतरा हो सकता है। आपको चोरों और शत्रुओं के कारण धन हानि हो सकती है। अपने कार्य क्षेत्र में भी आप असफल हो सकते हैं। दंड या आपके द्वारा किये गये गबन के अपराध के कारण आपका स्थानान्तरण या पदावनति हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (07:08:2031 से 02:11:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके राहु के कारक संबंधियों को कष्ट हो सकता है और आपको उनके उपचार में धन व्यय करने को बाध्य होना पड़ सकता है। जलीय उत्पादों से भोजन विषाक्तता की संभावना है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं और बाद में उनके लिए प्रायश्चित कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (02:11:2031 से 18:01:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा बाटेंगे। आपको उत्तम वस्त्रों और आभूषणों को पाने में अधिक रूचि होगी। आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा और संतानें सम्पन्न होंगी। संतान आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपका रूझान वाहन प्राप्त करने में हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (18:01:2032 से 19:04:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको संबंधियों के कारण दुखों और खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आप, आपके जीवनसाथी, संतान और आपके माता–पिता एक साथ विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आप विभिन्न उपचारीय तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। ऐसा करने पर भी राहत न प्राप्त कर पाने के कारण आप पूरी तरह से निराश हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:04:2032 से 10:07:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा

चल रही है। पिछली दशा में आपने जिन दुखों और परेशानियों का सामना किया है, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा और आप उत्तम परिधान, आभूषण और नये मवेशी प्राप्त करेंगे। कृषि उत्पादों से आपको उत्तम आय प्राप्त होगी। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा के द्वारा संपन्न होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:07:2032 से 13:08:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। आप विभिन्न धार्मिक कार्यों में रत रहेंगे और भारी मात्रा में धन व्यय करेंगे। आपको जल या जलीय उत्पादों से खतरा हो सकता है। आपको ऐसे व्यापार से दूर रहना चाहिए, जहाँ द्रव रसायन का प्रयोग होता हो।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (13:08:2032 से 17:11:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। इस दशा में आप निवेशों और अपने मौजूदा व्यवसाय या गतिविधियों के विस्तार के बारे में सोच सकते हैं। तीनों ग्रहों या उनमें से किसी एक की दुर्बलता की कोटि चाहे जो कुछ भी हो, आपको कोई अति अशुभ परिणाम नहीं मिलेंगे। दूसरी तरफ आप बहुत आराम महसूस करेंगे और अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (17:11:2032 से 16:12:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादपूर्ण दशा हो सकती है। इस दशा के परिणामों का आंकलन करना बहुत कठिन है– जैसाकि परिणाम इन तीनों ग्रहों के कार्यों पर निर्भर करेंगे। ये तीनों ग्रह भिन्न परिणाम प्रदर्शित करेंगे, अर्थात यदि एक ग्रह बली है, तो वह शुभ परिणाम देगा, यदि कोई कमजोर है, तो यह अति अशुभ परिणाम प्रदान करेगा। दूसरे शब्दों में आप अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का आनन्द एक साथ प्राप्त करेंगे।

मंगल अर्न्तदशा (16:12:2032 से 25:01:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको विदेश यात्रा पर जाने का शौक हो सकता है, जहां पर आप विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अतः आपको विदेश में स्थानांतरण या रोजगार या किसी व्यापारिक दौरे को स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोग हो सकते हैं। आपको हर समय मृत्यु का भय बना रह सकता है। आग और धातु के साथ काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आपको कुछ शारीरिक चोट या अक्षमता हो सकती है। आप भारी धन हानि का सामना भी कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और घर की महिलाओं को कष्ट हो सकता है। आपको अपमान का भी सामना करना पड़ सकता है। आप अपने पद और स्थिति को खो सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के मंत्रों का जाप आपके लिए लाभकारी साबित होगा।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि,

कर्ज, नौकरी, जीवनसाथी, भाई–बन्धु आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– ऋण के लिए ऋणमोचन स्तोत्र का पाठ करें। सामान्य कष्टों बजरंग बाण सहित हनुमान चालीसा का पाठ करें।

2– शांति हवन तथा बैल का दान करें।

3– भुजंग स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (16:12:2032 से 09:01:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान आपको किसी ना किसी पेरशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपको कुछ शुभ परिणाम प्राप्त होंगे, लेकिन केवल देने से अधिक लेने के लिए। आप परिवार से अलग हो सकते हैं। आपको अलाभकारी लम्बी यात्राओं पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (09:01:2033 से 11:03:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप अति शुभ और अशुभ परिणाम प्राप्त करेंगे। एक समय आपको लगेगा कि सफलता आपके दरवाजे पर दस्तक दे रही है, लेकिन आपकी आँखों के सामने कोई अन्य व्यक्ति आकर आपकी सफलता उड़ा ले जा सकता है। आपके और परिवार के उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:03:2033 से 03:05:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अति उत्तम परिणाम मिलेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको रोजगार के अप्रत्याशित प्रस्ताव मिलेंगे। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यावसायिक प्रस्ताव मिलेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों का सहयोग मिलेगा। यदि आवश्यक हुआ तो मित्र और संबंधी भी आपकी मदद करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:05:2033 से 07:07:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। चूंकि, दोनों ग्रह नैसर्गिक रूप से अशुभ हैं, अतः वे परस्पर लड़ाई करेंगे। एक लाभ पहुंचाने की कोशिश करेगा, दूसरा उनको छीनने की कोशिश करेगा। अतः कुछ अनुकूल घटनाओं के होने के दौरान आपको बहुत सावधान रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (07:07:2033 से 02:09:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उदासीन दशा होगी। जीवन केवल सामान्य तरीके से चलेगा। आप कई चीजें करना चाह सकते हैं, लेकिन ऐसा करने में आप सक्षम नहीं हो सकते हैं। आप अपना अधिकतर समय जीवनसाथी और संतान के साथ गुजारेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:09:2033 से 25:09:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको कई छोटी यात्राओं पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, जिसमें आपका अतिरिक्त धन व्यय हो सकता है। आप अपने परिवार के साथ अधिक समय गुजार पाने में असक्षम हो सकते हैं। संतानों की शिक्षा में व्यवधान हो सकता है। आपके माता–पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:09:2033 से 02:12:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका झुकाव शारीरिक सुखों की प्राप्ति की तरफ अधिक हो सकता है। अपने कार्यक्षेत्र में आपको कोई रूचि नहीं हो सकती है। आपका केवल एक उद्देश्य होगा– भरपूर आनन्द। आपको मदिरा और महिलाओं का नशा हो सकता है। आपको अपने जीवनसाथी में रूचि नहीं हो सकती है, जिससे प्रायः उनके साथ झगड़ा हो सकता है। आपको रतिजन्य रोग हो सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:12:2033 से 22:12:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है, अतः आपका समय डॉक्टरों के चक्कर लगाने में बीतेगा। आपको अपने दैनिक जीवन में रूचि नहीं हो सकती है। आपकी आय व्यय से बहुत कम हो सकती है। शत्रु स्थिति का लाभ लेने की कोशिश कर सकते हैं और आपकी सम्पत्ति को हड़प सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:12:2033 से 25:01:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों को संचालित करने के लिए यह एक अनुकूल दशा होगी। आपको धन और अन्य सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी। आप जीवन का अति आनन्द प्राप्त करेंगे। हालाँकि, आपकी माता के स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी।

राहु अन्तर्दशा (25:01:2034 से 01:12:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको ऊँचाई से गिरने या किसी कुएं अथवा सुरंग में गिरने के कारण चोट लग सकती है। आप बुखार, फोड़ों, सुजाक, प्लीहा के आकार में भारी वृद्धि, चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। आपका सभी के साथ झगड़ा हो सकता है और आप शत्रुता को आमंत्रण दे सकते हैं। आप किसी की भी सलाह को नहीं मान सकते हैं, जिससे आप हमेशा गंभीर समस्याओं में फँस सकते हैं। आपका व्यवहार बहुत असहिष्णु हो सकता है। आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या परिवार, मित्र, धन–सम्पत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– अनुष्ठान सहित राहु के बीज मंत्र का अठ्ठारह हजार जप

करें।

2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

3– बकरी का दान करें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:01:2034 से 30:06:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति उत्तम साबित होगी। ऐसी स्थिति में आप भूमि, भवन, व्यापार और आर्थिक मामलों से संबंधित सभी महत्वपूर्ण निर्णय ले सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (30:06:2034 से 16:11:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। तुलनात्मक रूप से यह एक बेहतर दशा होगी। इस समय आप कुछ सार्थक काम करने की सोच सकते हैं। आप भूमि, भवन और वाहन खरीदेंगे। आपको उत्तम मित्रों का साथ मिलेगा। आपको विरासत मे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (16:11:2034 से 29:04:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपका व्यय इस सीमा तक बढ़ सकता है, कि आपको विभिन्न लोगों से धन उधार मांगना पड़ सकता है। आप ऐसे उधार लिये गये धन का उपयोग जुए या लॉटरी या अन्य कामुक उद्देश्यों के लिए कर सकते हैं। अन्ततः आप आत्महत्या करने की स्थिति में पहुंच सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (29:04:2035 से 24:09:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी पुरानी आदतों से चिपके रह सकते हैं और आगे परेशानियों में फंस सकते हैं। ऋणदाता आपको लगातार परेशान कर सकते हैं और आप किसी स्थान पर छुप सकते हैं। यदि बुध बली है, तो आपने जो कुछ भी खोया है, उसे इस प्रत्यंतर्दशा के अन्त में पुनः प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (24:09:2035 से 23:11:2035)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम होंगे। आपको कुछ अन्य समस्याओं जैसे जीवनसाथी और संतानों की बीमारी या किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपका भारी व्यय हो सकता है। दूसरे शब्दों में, आपको मुश्किलों के बीच मे कुछ लाभ होगा। आपको अधिक व्यय या शारीरिक संबंधों पर नियंत्रण रखना चाहिए।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:11:2035 से 15:05:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अन्ततः आपको आर्थिक संकट से कुछ राहत मिलेगी। कुछ धन प्राप्त करने के आपको अवसर मिलेंगे। आपने जो ऋण ले रखा है, उसे चुकता करने की कोशिश करेंगे। हालाँकि, शारीरिक सुखों को प्राप्त करने की आपकी प्रवृत्ति पूरी तरह से समाप्त नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:05:2036 से 06:07:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपका अपने नजदीकियों से विवाद हो सकता है। आपको बिना किसी कारण के अपमान का सामना करना पड़ सकता है। यद्यपि आप किसी को आघात नहीं पहुंचाना चाहेंगे, फिर भी परिस्थितियों के कारण आपको सबसे लड़ाई करनी पड़ सकती है और उनके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। आपको बुखार, पीलिया और चर्म रोग हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (06:07:2036 से 01:10:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप जिन रोगों से ग्रस्त थे, उनसे आपको थोड़ी राहत मिलेगी। हालाँकि, आपके दिमाग की शांति किसी ना किसी कारण से भंग हो सकती है। कानूनी मामलों में आपका व्यय बढ़ सकता है। आपकी सम्पत्ति को दूसरे लोग हड़प सकते हैं या आप उसे अपनी मूर्खता से गवाँ सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:10:2036 से 01:12:2036)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको सावधान रहना होगा। आप दुर्घटनाओं और शरीर कटने या चोट का सामना कर सकते हैं या आपको आग से भय हो सकता है। आप भूमि खरीद सकते हैं या नया व्यापार शुरू कर सकते हैं।

गुरू अन्तर्दशा (01:12:2036 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम होगी, जिसका आप एक लम्बे बुरे दौर के बाद अनुभव करेंगे। आपका विश्वास पुनः लौटेगा। आपमें जीने की चाह बढ़ेगी और आपको जीवन का अर्थ पूरी तरह समझ में आयेगा। आप अपने जीवनसाथी, संतान और मित्रों की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको अपने हर काम में सफलता मिलेगी और आप विभिन्न शुभ कार्यों को पूरा करेंगे। ईश्वर के अस्तित्व का आपको पूर्ण अहसास होगा और आप उसकी अराधना करेंगे। आपको भूमि लाभ होगा। विभिन्न कलाओं में आप गहरी रूचि लेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका व्यवहार सौम्य होगा।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शनि की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या संबंधी, नौकरी, व्यापार, जीवनसाथी, संतान, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– सोने का दान करें।

2– शिवसहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– भगवान सत्यनारायण की कथा करें।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (01:12:2036 से 03:04:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। एक लम्बे संघर्ष के बाद आपको अधिक अनुकूल परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा। विदेशों से मिलने वाले समाचार आपको प्रफुल्लित करेंगे। आपको विदेशी वस्तुओं का आनन्द प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होगा या आपको विदेश में रोजगार प्राप्त हो सकता है। मित्र और संबंधी आपकी सहायता करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (03:04:2037 से 28:08:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा कुछ हद तक उत्तम होगी। आप धन का संग्रह करेंगे, भूमि और भवन खरीदेंगे, नया रोजगार प्राप्त करेंगे या नया व्यापार शुरू करेंगे। हालाँकि, इस दशा के अन्त में आपको स्वयं या दुष्ट लोगों के कारण बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (28:08:2037 से 06:01:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बेहतर दशा होगी। निवेश और व्यापार करने के लिए यह शुभ समय है। आपको अवश्य लाभ मिलेगा। हालाँकि, यदि आप व्यापार करने की स्थिति में नहीं हैं, तो आप किसी रोजगार में जायेंगे और नाम तथा यश प्राप्त करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:01:2038 से 01:03:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक शान्तिपूर्ण दशा होगी। अधिक हलचल नहीं होगी। जीवन साधारण तरीके से गुजरेगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:03:2038 से 02:08:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको वास्तविक आनन्द प्राप्त होगा। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी। आप एक समय पर कई कार्य करेंगे और नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आपके माता–पिता से भी आपको सुख मिलेगा। अपने जीवनसाथी और संतान से आपको पूरा आराम मिलेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:08:2038 से 17:09:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। धन के लिए वे आसानी से दूसरों को धोखा दे सकते हैं। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो आप चुनौतीपूर्ण कार्य की आशा कर सकते हैं। आपको विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (17:09:2038 से 03:12:2038)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आपने अपने दिमाग को ठंडा रखा, तो इस प्रत्यंतर्दशा के दौरान पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। चूंकि चंद्रमा दिमाग का नियंत्रणकर्ता है, विचलित दिमाग के लोगों को भी बहुत राहत मिलेगी– जैसाकि बृहस्पति उनकी देखभाल करेगा। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और अपने जीवनसाथी तथा संतान का सुख प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:12:2038 से 26:01:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। बृहस्पति और मंगल की युति इसमें प्रमुख भूमिका निभायेगी। अतः आप एक बहुत उत्तम स्थिति में होंगे और जीवन के सारो सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपका विवाह हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (26:01:2039 से 14:06:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप ईश्वर की उपासना की तरफ पूरी तरह से मुड़ जायेंगे और वेद मंत्रों का जाप करेंगे। आप लेखन या प्रकाशन आदि से कमायेंगे।

गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -07:09:1977

End -04:11:1979

Duration -2 y.1 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -15:03:1980

End -27:07:1980

Duration -0 y.4 m.12 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको

अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -04:11:1979

End -15:03:1980

Duration -0 y.4 m.10 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -27:07:1980

End -06:10:1982

Duration -2 y.2 m.10 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह

चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -06:10:1982

End -21:12:1984

Duration -2 y.2 m.15 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -01:06:1985

End -17:09:1985

Duration -0 y.3 m.17 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -17:12:1987

End -21:03:1990

Duration -2 y.3 m.3 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:06:1990

End -15:12:1990

Duration -0 y.5 m.26 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -01:11:2006

End -10:01:2007

Duration -0 y.2 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:07:2007

End -10:09:2009

Duration -2 y.1 m.25 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -10:09:2009

End -15:11:2011

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:05:2012

End -04:08:2012

Duration -0 y.2 m.19 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार

का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -26:01:2017

End -21:06:2017

Duration -0 y.4 m.24 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:10:2017

End -24:01:2020

Duration -2 y.2 m.29 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह

से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान

आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –सिहं

Start -27:08:2036

End -22:10:2038

Duration -2 y.1 m.25 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:04:2039

End -13:07:2039

Duration -0 y.3 m.8 d.

आपके लिए यह चरण घातक हो सकता है। इस चरण के आरम्भ से ही आपको मानसिक तनाव रह सकता है। तनाव का कारण आपका संतान पक्ष हो सकता है। आपकी संतान आपके हर काम का विरोध करेगी। आपके लिए नित्य नई समस्यायें पैदा करेंगी। आप अपनी संतान की बीमारी पर भी काफी पैसा खर्च कर सकते हैं। आप अपने कार्यों से अपनी संतान के कार्यों में बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी संतान आपके विचारों से सहमत नहीं हो सकती है। अपनी संतान के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आपको अपनी संतान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस समय आपके शत्रु काफी सक्रिय होंगे एवं आपको हानि पहुंचाने की प्रयास करेंगे एवं अपने प्रयासों में वे सफल भी होंगे। आप कई अप्रत्याशित खर्चे कर सकते हैं, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं होगी। आप कई लम्बी यात्राएं कर सकते हैं, जिनसे कोई लाभ होने की संभावना नहीं है। नित्य नई आने वाली परेशानियों के कारण धर्म एवं ईश्वर पर से आपका विश्वास उठ सकता है। इस समय आप ना किसी को उधार दें और ना उधार लें, इससे कई समस्याओं से बच सकते हैं। आप उदर कष्ट एवं त्वचा संबंधित ऐसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, जो लम्बे समय तक चल सकते हैं। भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है।

आपको मानसिक रूप से मजबूत बनना चाहिए। भावना में बहकर कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको अपमानित होना पड़े। आपके मामा–मौसी को भी कई समस्यओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके कार्यों में काफी बाधायें आ सकती हैं। आप आर्थिक रूप से इतने परेशान हो सकते हैं, कि धनोपार्जन के लिए किसी दूसरे शहर में जा सकते हैं, लेकिन वहां भी आपको सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप भोग–विलास एवं परिधान पर काफी खर्च कर सकते हैं। यदि आपकी आयु 30 से 46 के मध्य है, तो आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। मानसिक रूप से परेशान रहने के कारण आपका मस्तिष्क सही दिशा में कार्य नहीं कर सकता है। खुद को सफल करने के लिए आप फालतू के कार्यों पर अत्यधिक खर्चे कर सकते हैं, जिसका आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

इस चरण के मध्य में आपको कुछ आराम मिल सकता है। आप अपनी मनोशक्ति के बल पर कुछ सफलताएं प्राप्त कर सकते हैं। कुछ समय के लिए आपकी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और आपके कुछ बिगड़े काम बन सकते हैं। लेकिन यह समय थोड़ी देर के लिए ही आएगा। इसके बाद आपके शत्रु पहले की तुलना

में अधिक सक्रिय होंगे और आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके अधिकारी आपसे नाराज रह सकते हैं और आपको कष्ट पहुंचने का प्रयास कर सकते हैं। अपको सतर्क रहना चाहिए और अतिविश्वास में नहीं आना चाहिए। अतिविश्वास के कारण आप चोरी के शिकार हो सकते हैं, विशेषकर यात्रा के दौरान। इस समय आपको अपने ही कामों से अधिक हानि हो सकती है। अपने भाइयों से बंटवारा भी हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो अशुभ फलों में कुछ कमी हो सकती है। चरण के अन्त समय में लाभ के मौके प्राप्त होंगे, उनका पूरा फायदा उठायें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –कन्या

Start -22:10:2038

End -05:04:2039

Duration -0 y.5 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -13:07:2039

End -28:01:2041

Duration -1 y.6 m.16 d.

यह चरण आपके लिए घातक हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तभी आपको कुछ शुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण की शुरूआत से ही आपको अशुभ संकेत मिलने लगेंगे। आप मानसिक रोग, उन्माद, चर्मरोग, वात आदि से पीड़ित रह सकते हैं। यदि बचपन में ही यह चरण आता है, तो आपको बालारिष्ठ हो सकता है। आपकी चिन्ता खत्म भी नहीं होगी, कि दूसरी नई चिन्ता आपके सामने होगी। आप मानसिक रूप से व्यथित हो सकते हैं एवं भले–बूरे की पहचान खो सकते हैं। काम–वासना आप पर हावी रहेगा। इसके लिए आप किसी भी हद तक जा सकते हैं और समाज में अपमानित हो सकते हैं। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और हर काम में पहले अपना स्वार्थ देखेंगे।

यदि इस समय आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप नित्य नई समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके सहयोगी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपकी शिकायत वरिष्ठ अधिकारियों से कर सकते हैं। इससे आपके वरिष्ठ अधिकारी भी आपसे नाराज हो सकते हैं और आप पर कोई कार्यवाई कर सकते हैं। परेशानी में आप कोई गलत काम कर सकते हैं और आपको स्थानान्तरित या निष्कासित किया जा सकता है। आपको हर काम सोच–विचार कर ही करना चाहिए, अन्यथा समस्या से घिर सकते हैं। आपके कई कार्य बनते–बनते बिगड़ सकते हैं। आपको अपनी वाणी पर संयम एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आपको पूजा–पाठ की तरफ अपना मन लगाना चाहिए। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आग या चोरी के माध्यम से आपको हानि होने की संभावना है। आपका पैसा व्यापार में फँस सकता है। पैसा मांगने पर लोग टाल–मटोल कर सकते हैं। धीरे–धीरे व्यापार में हानि बढ़ती जाएगी और आपका मन व्यापार से हट सकता है। आपके कुछ सहयोगी भी शत्रुता निभाने की ताक में हो सकते हैं, इसलिए आप सावधान रहें। ईश्वर की आराधना करें। इस समय आपके व्यवसाय पर कोई सरकारी छापा पड़ सकता है और आप पर आर्थिक दण्ड लग सकता है। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं, तो आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं।

मानसिक परेशानियों के कारण आप अपने व्यवसाय पर ठीक से ध्यान नहीं दे पायेंगे, जिसका फायदा आपके कर्मचारी चोरी आदि कर के उठा सकते हैं।

आपके पिता कुछ अस्वस्थ हो सकते हैं, और उनकी शल्य क्रिया होने की भी कुछ संभावना है। आपको संचार के माध्यम से कुछ अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, जिससे आप अधिक परेशान हो सकते हैं। अपने किसी मित्र से लिया कोई पुराना कर्ज आप चुकाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आप इसमे सफल नहीं हो सकते हैं। इतना होने के बावजूद आपमें आत्मबल की कमी नहीं होगी। आपके शत्रु आपके लिए बाधायें उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन आप उनकी परवाह ना करते हुए काम में लगे रहें, आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगी।

यदि आप पत्रकारिता, लेखन, समीक्षा या संपादन से संबंधित कार्य करते हैं, तो काफी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको दूसरे व्यक्तियों की सोच की चिंता नहीं हो सकती है। यदि आप चिकित्सा या केमिस्ट के क्षेत्र में हैं, तो इस समय आपको हानि हो सकती है। आपकी दी हुई दवा किसी को विपरित प्रतिक्रिया/रियेक्शन कर सकती है। विशेष सावधानी बरतें। यदि आप समाज सेवा या परोपकार में लिप्त हैं, तो आपको काफी उत्तम फल प्राप्त हो सकता है। आपको इस चरण के दौरान मानसिक स्थिरता बनाये रखनी चाहिए।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

आपको इस चरण में मिश्रित फल प्राप्त होगा। फल का स्वभाव आपकी कुण्डली में चल रही महादशा पर अधिक निर्भर करेगा। शुरू में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन बाद में शुभ फल प्राप्त होने लगेंगे। आप कोई भी काम काफी सोच–विचार के बाद ही करें। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें एवं कोई भी काम जल्दबाजी में ना करें, हानि हो सकती है। आप पर काम का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए फायदेमंद होगा। इस समय आपको धन लाभ हो सकता है। यदि आप पर कोई कर्ज है, तो आप उसे चुकाने में सक्षम होंगे। आप भूमि, भवन या वाहन खरीद सकते हैं। अपनी माता से कोई उपहार प्राप्त हो सकता है। अपने विरोधियों से सावधान रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो अपनी मेहनत एवं दिमाग से तरक्की करेंगे। आपको अपने व्यवसाय में चोरी होने की काफी संभावना है। अपने कर्मचारियों से सावधान रहें। अधिक कार्यभार होने के कारण आप अपने परिवार पर पर्याप्त समय नहीं दे सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिवार वाले आपसे नाराज हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो मनचाहे स्थान पर अपना स्थानान्तरण करवा सकते हैं। आपके अधिकारी आपसे खुश रह सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगी उन्हें भड़का सकते हैं। किसी भी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर ना करें। यदि आप आर्थिक लेन–देन के क्षेत्र में हैं, तो आपको काफी सावधान रहना चाहिए, आप

पर रिश्वत का आरोप लग सकता है। नेताओं से दूर रहें, उन्हें किसी भी तरह से नाराज ना करें।

आप परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे, जिससे आपको समाज में सम्मान मिलेगा। आपको धार्मिक साहित्य के अध्ययन में रूचि हो सकती है। आप धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं। यदि आप अभी विद्यार्थी हैं, तो खूब मेहनत करें, अन्यथा परीक्षा में असफल हो सकते हैं। चरण के मध्य काल में आपकी माता अस्वस्थ रह सकती हैं, जिसकी वजह से आप काम पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। इससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। कुछ समय बाद आपकी माता स्वस्थ हो जाएंगी और आप अपने काम पर पुनः ध्यान देने लगेंगे। अधिक कार्य होने के कारण आप घर पर समय नहीं दे पाएंगे, जिसकी वजह से आपके जीवनसाथी नाराज हो सकते हैं। अतः परिवार पर भी पर्याप्त समय दें। इस समय आपकी आर्थिक उन्नति होगी। अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से मधुर संबंध बनाकर रखें। वाणी पर संयम बहुत जरूरी है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे, लेकिन वे सफल नहीं हो पाएंगे। आप उनकी परवाह ना करते हुए अपना काम करते रहें।

इस समय आप पैरों में दर्द से पीड़ित रह सकते हैं। अधिक मेहनत एवं भाग–दौड़ के कारण आपका शरीर कमजोर हो सकता है। वैसे तो आपको पैसे की कमी नहीं होगी, लेकिन आप हमेशा अधिक धन कमाने के बारे में सोचते रह सकते हैं। आप सुख की प्राप्ति के लिए इधर–उधर भटक सकते हैं और अपने घर पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। आप लोगों पर वर्चस्व पाने की कोशिश में लगे रहेंगे। धन कमाने के लिए आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश भी जा सकते हैं। आपको उंचाई से गिरने, वाहन से चोट, आग, बिजली या किसी जानवर से चोट का खतरा हो सकता है। आपको काफी सावधानी से काम करना चाहिए और ईश्वार का ध्यान करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –धनु

Start -08:12:2046

End -06:03:2049

Duration -2 y.2 m.27 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:07:2049

End -04:12:2049

Duration -0 y.4 m.25 d.

इस चरण का फल आपके लिए काफी अशुभ हो सकता है। आपको एक साथ कई रोग हो सकते हैं। इन रोगों के कारण आप काफी निराश हो सकते हैं। आपके पिता को भी कष्ट हो सकता है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। यदि किसी क्रूर/अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही है, तो आप किसी नजदीकी का वियोग भी सह सकते हैं। संचार के माध्यम से कोई अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपके सहकर्मी आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं। आप पर नित्य नए आरोप लग सकते हैं, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से काफी परेशान हो सकते हैं और अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। आपकी नौकरी भी छूट सकती है।

आपका कोई पुराना शत्रु अचानक आपके सामने आ सकता है, जिसकी वजह से आप परेशन रह सकते हैं। इस समय कोई भी आपकी मदद को नहीं आएगा। आप कई प्रकार से हानि उठा सकते हैं और आर्थिक

हानि हो सकती है। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं, तो आपका व्यवसाय बंद होने के कगार पर हो सकता है। यदि किसी शुभ ग्रह के प्रभाव से आपका व्यवसाय बच जाता है, तो भी हानि तो होनी ही है। शत्रु आपके व्यवसाय की बदनामी फैला सकते हैं। आपके किसी कर्मचारी को लालच देकर आपकी गुप्त सूचनाएं एकत्र कर सकते हैं और छापा पड़वाने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। आपको सत्तापक्ष से भी हानि हो सकती है। आपका कोई भुगतान रूक सकता है। आप जो भी काम करें, सोच–समझ कर ही करें। अनुकूल समय का इंतजार करें एवं बुरे समय को ईश्वर का ध्यान करते हुए निकाल दें।

वाहन चलाते समय काफी सावधानी बरतें, दुर्घटना की संभावना हो सकती है। सिर में गंभीर चोट लगने की अधिक संभावना है। आपके मामा या मौसी की ओर से आप पर कोई गंभीर आरोप लग सकता है, जिसकी वजह से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके जीवनसाथी का व्यवहार भी आपके प्रति परिवर्तित हो सकता है, जिसकी वजह से आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप गलत कार्यों की तरफ आकृष्ट हो सकते हैं। सत्तापक्ष से भी दण्ड मिल सकता है। इस चरण में आपके धनोपार्जन के सारे प्रयास विफल हो सकते हैं, और जो कुछ भी आप कमायेंगे वो सब भोग–विलास में गवां सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 47 वर्ष के मध्य है और राहु भी अशुभ है, तो आपको कारावास भी हो सकता है। यदि मंगल अशुभ है, तो किसी दुर्घटना में अपना कोई अंग भी गंवा सकते हैं। इस दौरान आप अपने भाइयों से अलग हो सकते हैं और जो कुछ धन बंटवारे से मिलेगा वो फालतू के कार्यों में खर्च कर सकते हैं। आप उचित निर्णय लेने में अक्षम हो सकते हैं। लोगों के प्रति आपका व्यवहार भी बदल सकता है, जिसकी वजह से आपके अपने लो भी आपसे बात करना पसंद नहीं कर सकते हैं। आपमें धर्म के प्रति आस्था कम हो सकती है। आपको धार्मिक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

इस चरण का फल आपके लिए अधिक अशुभ नहीं हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि किसी शुभ भाव में बैठा है, तो आपको शुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। आपको काफी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं, जो कि मृत्युतुल्य हो सकते हैं। आपके भाई–बहनों को भी कष्ट हो सकता है। आप भी रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अर्श, भगंदर आदि होने की अधिक संभावना है। आप निम्न तबके की महिलाओं के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिससे आप समाज में अपमानित हो सकते हैं। आपको अपना चरित्र एवं व्यवहार साफ रखना चाहिए। आपका अवैध संबंध बहुत जल्द लोगों के सामने आ सकता है और आपके परिवार में क्लेश हो सकता है।

यदि आप विद्यार्थी हैं, तो आपको अपने समाज पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस चरण के दौरान आपके भटकने की काफी संभावना है। अध्ययन के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अपने खर्चे पर नियंत्रण रखना चाहिए और जितना पैसा घर से मिलता है, उतने में ही काम चलायें। अधिक सपने ना देंखें। आप नित्य कई गलतियां कर सकते हैं बाद में आपको पछतावा भी होगा, लेकिन ग्रहों के प्रभाव से पुनः वहीं गलतियां दोहराते रहेंगे। आप अपने कार्यों से ही अपने लोगों में हंसी के पात्र बन सकते हैं। आप अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए फरेब का सहारा भी ले सकते हैं। लोग आपकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। आपके अपने लोग भी आपका साथ छोड़ सकते हैं। आपके व्यवहार में आए परिवर्तन से आपके दोस्त भी दुश्मन बन सकते हैं। आपके पुराने शत्रु आपके कामों में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपका कोई शत्रु आपसे मित्रता कर आपसे गलत कार्य करवा सकता है, सचेत रहें।

यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके कपटपूर्ण वयवहार के कारण कई लोग आपके साथ व्यापार बंद कर सकते हैं। आपका मन अपने कारोबार में नहीं लग सकता है। आप आलसी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आप व्यवसाय में पिछड़ सकते हैं तथा आपके कर्मचारी इसका लाभ उठा सकते हैं। व्यापार में आर्थिक संकट आ सकता है और आप कर्जदारों से मुंह छिपा सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो शारीरिक अक्षमता के कारण आपका मन अपने काम में नहीं लग सकता है। आप समय पर अपना काम पूरा नहीं कर पाएंगे, जिससे आपके वरिष्ठ अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं और आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है। आपको कोई दण्ड भी मिल सकता है। इस समय आप सिर्फ अपना स्वार्थ देख सकते हैं। आप सिर्फ धनोपार्जन के बारे में सोच सकते हैं। आप रिश्वत आदि भी लेना शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सबके सामने आ जाएगा। आपके सहयोगी ही आपको रंगे हाथ पकड़वा सकते हैं।

यदि आपकी आयु 34 से 46 वर्ष के मध्य है, तो आपको अधिक कष्ट हो सकता है। इस चरण के दौरान आप अधिकांश समय अस्वस्थ ही रहेंगे, लेकिन आप जब स्वस्थ होंगे, तो आप पर काम–वासना हावी रहेगा। आप अप्राकृतिक संबंध भी बना सकते हैं, जिससे आपको गुप्त यौन रोग होने का खतरा हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंङ्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

कन्या राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– शनि यंत्र को पूजास्थल में रखकर नित्य उसके सामने चालीसा का पाठ करें।

2– प्रत्येक बुधवार को विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– बुधवार को हिजड़ों को कुछ पैसा देकर उनका आशीष लें।

4– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के पास जाकर आटे में हरी मसूर का आटा मिलाकर दीपक बनायें। सरसों के तेल में एक कील रखें तथा 11 साबूत हरी मसूर के दाने मिलाकर रूई की ऐसी दो समानान्तर बत्ती बनायें जो जलने पर एक ही लौ दे, पीपल को अर्पित करें तथा मीठा जल भी अर्पित करें।

5– अधिक कष्ट होने पर श्री दुर्गा सप्तशती में से कोई मंत्र चुनकर नियमित जाप करें।

6– शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की चार कील ठुकवायें।

7– किसी भी शुक्लपक्ष में नौ वर्ष से कम आयु की 8 कन्याओं को भोजन करवाकर हरे एवं

लाल वस्त्र उपहार में दें। ऐसा लगातार पांच मास करें।

8– प्रत्येक शनिवार को छायादान करें।

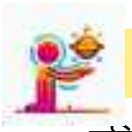

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4–यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक

पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

ज्योतिषीय उपचार

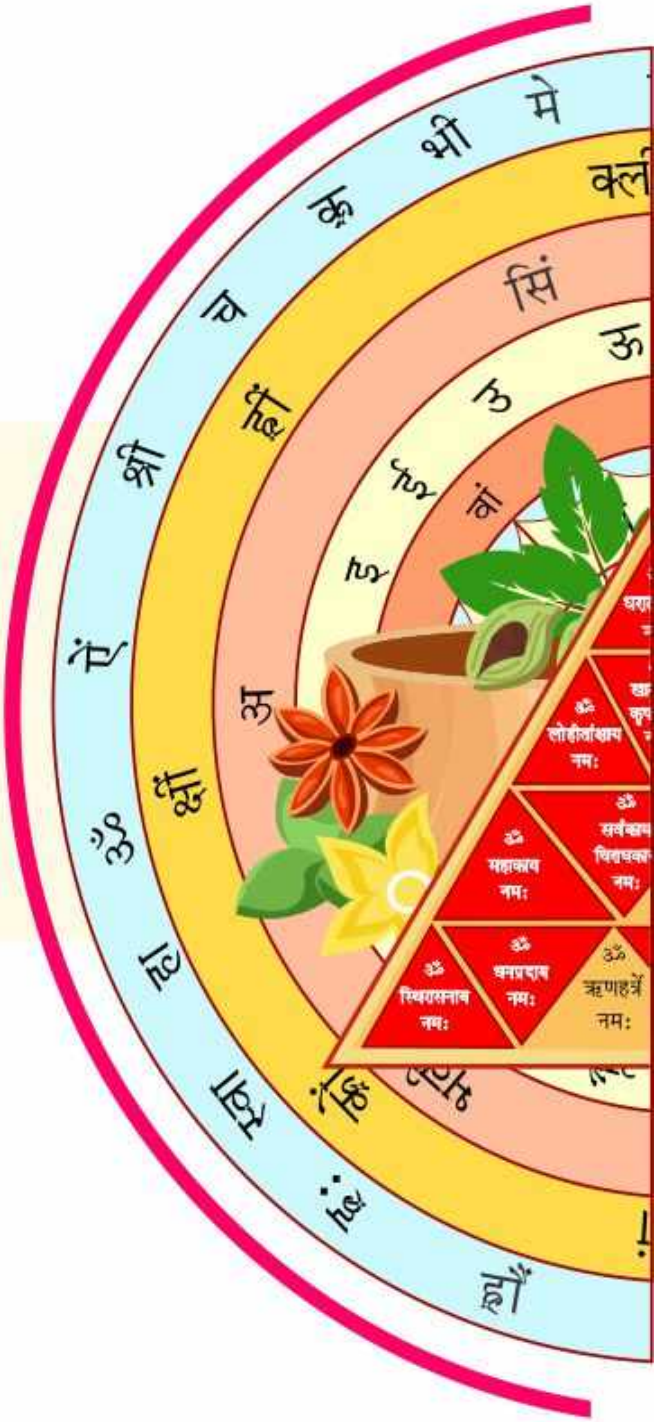

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी कुण्डली में, मंगल चंद्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से चौथी राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र द्वारा अधिग्रहित राशि से चौथे भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल अपनी ही राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आप मांगलिक दोष से मुक्त हैं– आप मंगली नहीं हैं। (हालांकि, इस विचार को बहुमत प्राप्त नहीं है।)

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले

गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

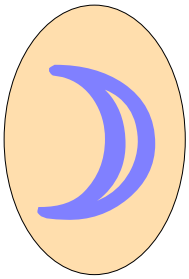

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा के पहले और आगे वाले भाव में कोई ग्रह नहीं है, इस स्थिति में चन्द्रमा की स्थिति बहुत कमजोर मानी जाती है और केमुद्रम योग का निर्माण होता है। अक्सर ऐसे लोग निराश, अवसाद, अकेलेपन के शिकार रहते हैं – आत्मविश्वास की बहुत कमी पाई जाती है, समाज में आगे बढ़कर कोई काम नहीं कर पाते – मेहनत करने के बावजूद – मेहनत का फल नहीं मिलता। आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अपने भाव में अकेला है, आपकी स्थिति और भी संघर्षमय हे जाती है, परन्तु आपके कर्मों के माध्यम से इस योग के दुष्प्राभाव से मुक्ति मिल सकती है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।
(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ भौमाय नमः

This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ अंगारकाय नमः

Om Om Angarakaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।

Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता वं लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ सौम्यरुपाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

गुरू ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख–सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted ever Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye

गायत्री मंत्र

ऊँ गुरुदेवाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya

बीज मंत्र 2

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

आपको किस देवता की पूजा करना

लग्न देवता	इष्ट देवता
लग्नेश पर आधारित	पंचमेश पर आधारित
गणेश जी	शनि देव
ॐ गं गणपतये नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
बुध	शनि	शनि	बुध
ॐ बुं बुधाय नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः	ॐ बुं बुधाय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए?

ग्रह का दान	मंगल कुंडली में तीसरे और आठवें भाव का स्वामी होकर प्रबल अशुभ ग्रह बन जाता है।
मंगल	

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive should not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per th ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Whicl Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated results.

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in the horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.